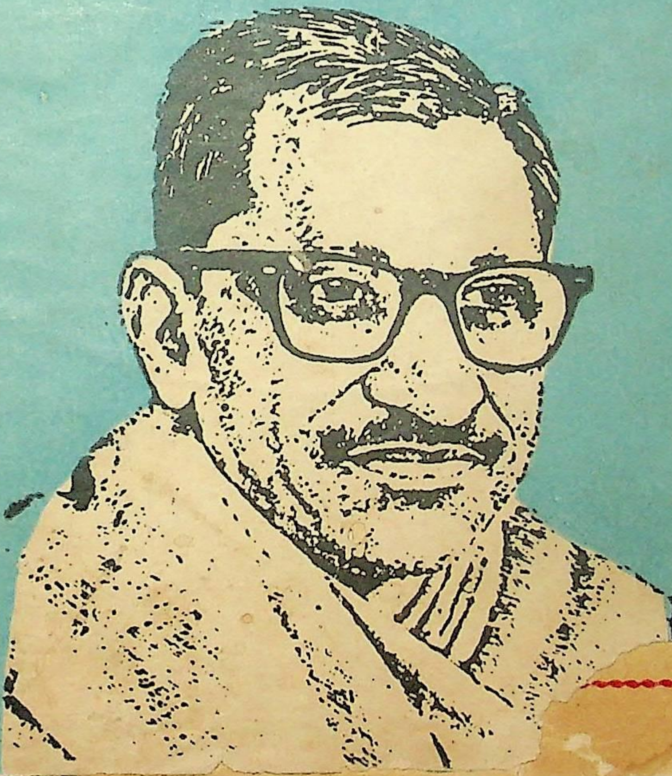
पं० दीनदयाल उपाध्याय महा-प्रस्थान



पं० दीनदयाल उपाध्याय : महाप्रस्थान

तृतीय संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण

तनसुखराम गुप्त

सूर्य-प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६

प्रकाशक	:	सूर्य-प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६
मुद्रक	:	अमर प्रिंटिंग प्रेस, ८/२५ विजयनगर, दिल्ली-९
मूल्य	:	२.२०

संकल्प दिवस	:	२३ फरवरी १९६८	:	२००० प्रतियां
द्वितीय संस्करण	:	११ मार्च १९६८	:	२००० प्रतियां
तृतीय संस्करण	:	२० अप्रेल १९६८	:	२००० प्रतियां

जीवन को अर्पित किया
जन सेवा प्रतिपाल !
भगवन फिर से और दो,
ऐसा दीनदयाल !!

"पुस्तक के मूल्य का दशमांश भाग रायल्टी रूप में 'पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निधि' में सहर्ष भेंट कर रहे हैं। इस प्रकार निधि समर्पण की स्वीकृति भारतीय जनसंघ के केन्द्रीय कार्यालय से प्राप्त है।"

तनसुखराम गुप्त

कहाँ क्या है ?

श्रद्धांजलि

दिङ्नाग जड़ित, सागर स्तम्भित,
क्यों दिग्वधुओं के केश खुले ?
आक्रान्त मही, भयभीत गगन,
क्यों त्रिपुरारि के ओष्ठ हिले ?
करुणा सकरुण, क्या हुआ आज ?
रे कैसा नियति का क्रूर हास ।
कैसे सम्भव क्या सच मानूँ ?
यह सोच रहा भारत उदास ॥
हे साधुवेश ! तुम विनयावनत,
तुम चले चला युग उसी ओर ।
'चिर अमर दीनदयाल रहे'
कहते हैं भारत के किशोर ॥
एकता, अखिलता, नैष्ठिकता
का दे रहे देश को नव्य मंत्र ।
आगे बढ़ने को उत्सुक था
अपने भारत का प्रजातंत्र ॥

सुन पड़ा काल का क्रूर हास,
तुम चिर निद्रा में लीन हुए।
किस वज्र हृदय से सहन करें
आश्चर्य क्षुब्ध श्रीहीन हुए॥
है किस पशुता का नीच कर्म
भारत के जन-जन की पुकार।
हे मूक तपी, हे शत्रुंजय
ओ युग द्रष्टा, हे चिरकुमार॥
पद चिन्हों का अनुगमन करें
चिर तरुण देश के 'अटल' वीर।
आशीष हमें दो सेनानी
पावन मानव लो नमस्कार॥

शास्त्री भगवतीस्वरूप उपाध्याय

३३-सी, आदर्श नगर
दिल्ली-३३

भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष गए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक निष्ठावान स्वयंसेवक काल-कवलित हुए। भारत मां का सच्चा सपूत इस देह को त्याग कर पंचतत्त्व में विलीन हुआ। भारतीयता की साकार प्रतिमा लुप्त हुई। आसेतुहिमाचल भारत में एकात्मता के दर्शन करने वाला योगी समाधिस्थ हुआ। तेजोमय ब्रह्म को धारण करने वाला ब्रह्मचारी परमपद को प्राप्त हुआ। काम, क्रोध, लोभ, मोह उससे पराजित हुए। लोकैषणा उससे भयभीत हो स्वतः चली गई।

सत्य, शक्ति और संकल्प की त्रिवेणी उसमें प्रवाहित हो रही थी। श्रम, सौजन्य और शालीनता के वे देवता थे। अनेक भाषाओं के वे ज्ञाता थे; अनेक विषयों के विद्वान् थे। लेखनी पर उनका अधिकार था। वे अजातशत्रु थे।

कहाँ तक उनकी विशेषताओं को, गुणों को, लिखा जाए। जहाँ-जहाँ भी दृष्टि जाती है, जिस-जिस से भी उनके बारे में बात होती है, वह यही कहता है कि वे अद्वितीय थे। इसीलिए भारत के सभी सम्पादक एक स्वर से लिखते हैं, 'देश दूसरे दीनदयाल के लिए तरसेगा, और वह उसे मिलेगा नहीं।'

ऐसे महापुरुष के बारे में कुछ लिखना अपनी अल्पज्ञता का परिचय देना है। जो व्यक्ति 'कंकड़ पत्थर बन-बनकर, राष्ट्र नीव को भरना है; ब्रह्मतेज के क्षात्रतेज के अमर पुजारी बनना है' की साध लिए जीवन पर्यन्त कार्य करता रहा और 'वृत्तपत्र में नाम छपेगा, पहनूँगा सुमनों का हार' की इस मनोवृत्ति 'छोड़ चलो यह क्षुद्र भावना हिन्दू राष्ट्र के तारण हार' इस उदात्त भावना से कुचलकर मूकभाव से राष्ट्रदेव की सेवा में संलग्न रहा, वह आत्मश्लाघा कैसे कर सकता था ? आत्मप्रशंसा कैसे सुन सकता था ? कैसे बरदाश्त कर सकता था। फलतः उसके जीवन-चरित्र का लिखित पक्ष घोर अंधकारमय है। उनके सहयोगी, उनके सम्बन्धी और मित्रगण जो कुछ बता दें, उसे ब्रह्मवाक्य मानना पड़ेगा। उनका जीवन शोध का विषय है, अनुसंधान का कार्य है

उनके जीवन-परिचय सम्बन्धी तथ्य कितने विवादास्पद हैं, इसका एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। सभी पत्र एक स्वर ने भगवान् कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा के समीप फरह गाँव को दीनदयाल जी का जन्म-स्थान मानते हैं, किन्तु जब उनके ममेरे भाइयों (श्री प्रभुदयाल शुक्ल तथा श्री ब्रह्मानन्द शुक्ल) एवं वृद्धा मामी से बातचीत की, तो उन्होंने 'धनकिया' को उनका जन्म-स्थान बताया। उनका कहना था कि "दीनदयाल जी की माता जी प्रसव के दिनों में अपने पिता के यहां आई हुईं थीं, जो धनकिया के स्टेशन-मास्टर थे, और दीनदयाल जी का जन्म यहीं हुआ। 'फरह' के तो ये लोग रहने वाले हैं। 'फरह' उनका गाँव है, पैतृक स्थान है।"

यही समस्या उनकी नृशंस हत्या के सम्बन्ध में है। अब यह सोचना कि वे दुर्घटना से मरे हैं, अपनी बुद्धि का दिवालियापन सिद्ध करना है। फिर हत्या भी सुनियोजित एव सुसंगठित रूप में सिद्धहस्त हत्यारों द्वारा क्रूरतम रूप में की गई। अपने पकड़े जाने योग्य सभी चिह्नों को मिटाते हुए, सफल रूप में बच निकलना उनकी सिद्धता का द्योतक है। दीनदयाल जी के कूपे में 'मेजर शर्मा चले गए' कहने वाला क्लीन शेव व्यक्ति, पटना स्टेशन पर डिब्बे को धुलवाने वाला सुसभ्य व्यक्ति, इस षड्यन्त्र के विविध पहलू हैं, कर्त्ता हैं। अतः हमने यहाँ प्राप्त घटनाओं का विवरण ही दिया है।

इस पुस्तक की सामग्री जुटाने में मुझे अनेक व्यक्तियों और संस्थाओं कर सहयोग प्राप्त हुआ है, जिनमें दीनदयाल जी का ममेरा परिवार, जनसंघ कार्यालय मंत्री श्री जगदीश माथुर, पत्रकार श्री शिवकुमार गोयल, हिन्दुस्थान समाचार के फोटोग्राफर श्री दुनीचन्द जी तथा 'ओरगनाइजर' के श्री ब्रजभूषण जी का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिनके सहयोगाभाव में यह पुस्तक इस रूप में न आ पाती।

इनके अतिरिक्त पांचजन्य (साप्ताहिक, लखनऊ), तरुण भारत (दैनिक, लखनऊ), गांडीव (दैनिक, वाराणसी) का उनके लेखों अथवा कुछ अनुच्छेदों

को अविकल रूप से उद्धृत करने के लिए उनकी 'स्वत: स्वयमेव स्वीकृति' मानते हुए प्रयोग करने का ऋणी हूँ।

पुस्तक का नाम ही पुस्तक की सामग्री का द्योतक है। दीनदयाल जी की हत्या से लेकर अन्त्येष्टि तक का विस्तृत और अधिकतम प्रमाणित जानकारी देना पुस्तक का उद्देश्य है। मेरा लिखा वेद वाक्य है, ऐसा न मैं कहता हूँ और न सोचता हूँ। अपनी आंखों से जो देखा और पत्र-पत्रिकाओं में जो पढ़ा, अपनी मान्यतानुसार उसे लिपि-बद्ध कर दिया। मेरे समझने में भूल हो सकती है, मेरी धारणा गलत हो सकती है।

संघ का स्वयंसेवक रहने के नाते शरद् शिविरों, अधिकारी-शिक्षण-शिविर एवं अनेक कार्यक्रमों में दीनदयाल जी से साक्षात्कार किया है, उनका प्रवचन सुना है। भारतीय जनसंघ के सिद्धातों और मान्यताओं में विश्वास होने के कारण राजनीतिक क्षेत्र में भी उनके विचार सुने हैं। एक प्रकाशक होने के नाते दो बार उनसे प्रकाशन पर विचार-विमर्श करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। दूसरी बार जनसंघ कार्यालय, अजमेरी गेट पर दो घंटे तक जो सत्परामर्श प्राप्त हुआ, उन्हीं क्षणों को यह पुस्तक समर्पित है।

१६-सी, सी. सी. कॉलोनी,
दिल्ली-७

तनसुखराम गुप्त

द्वितीय संस्करण पर—

अल्पावधि में पुस्तक का प्रथम संस्करण समाप्त हो गया। द्वितीय संस्करण में जहाँ जीवनी पक्ष में पर्याप्त संशोधन किया है, वहाँ आदरणीय श्री जगदीश माथुर की इच्छा पर 'अस्थि प्रवाह' का वर्णन भी जोड़ दिया है। वस्तुतः महाप्रस्थान अब पूर्ण हुआ। साथ ही अस्थिप्रवाह के दो चित्र भी बढ़ा दिए हैं। पुस्तक के मुद्रण, आवरण और रूप-सज्जा में थोड़ी श्रेष्ठता लाने का भी प्रयास किया है। पृष्ठ संख्या की वृद्धि एवं चित्रों के लिए पहले से बढ़िया कागज लेने के कारण पुस्तक का मूल्य थोड़ा बढ़ाना पड़ा है, उसके लिए सहृदय पाठकों से क्षमा चाहेंगे।

१०-३-६८ तनसुखराम गुप्त

तृतीय संस्करण पर—

पूज्य दीनदयाल जी के जीवन पर अब तक जो भी प्रामाणिक सामग्री प्राप्त हुई है, वह इस संस्करण में बढ़ा दी है। कालीकट भाषण के स्थान पर 'विचार-मंथन' शीर्षक से दीनदयाल जी के कुछ विचार सूक्ति रूप में प्रस्तुत किए हैं।

२०.४.६८ तनसुखरामगुप्त

लेखक की अन्य कृतियाँ—

संस्मरण-साहित्य

(१) विस्मृति के भय से ३-००
(२) जीवन के कुछ क्षणों में २-००
(द्वितीय संस्करण)

जीवनी-साहित्य

(३) भारतीय-महापुरुष ४-००
(चतुर्थ संस्करण)
(४) लाल बहादुर शास्त्री : महाप्रयाण ३-००
(५) पं० दीनदयाल उपाध्याय : महाप्रस्थान २-२०
(तृतीय संस्करण)

आलोचना-साहित्य

(६) हिन्दी-साहित्य का सरल इतिहास १-६०
(चतुर्थ संस्करण)
(७) मुक्तिपथ : एक विवेचन १-००
(८) प्रबन्ध-पराग (निबन्ध) १-६०
(दसवाँ संस्करण)

उपन्यास

(९) दिन बीत गया १-५०

सामाजिक-ज्ञान

(१०) हमारा पास-पड़ोस १-२०
(सातवाँ संस्करण)

व्याकरण

(११) आओ व्याकरण पढ़ें ०-६०
(१२) सूर्य हिन्दी व्याकरण ०-७०

१

जीवन-परिचय

सर्वांग-परिपूर्ण कार्य करने वाले जनसंघ के अध्यक्ष पं. दीनदयाल उपाध्याय, जिनके पीछे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शक्ति स्वयं के रूप में मूर्तिमान खड़ी थी, महर्षि श्रद्धानन्द और महात्मा गांधी की हौतात्म्य-मालिका में गूंथे जानेवाले रत्न थे।

वे जनसंघ के लिए डॉ. हेडगेवार थे। प्रखर बुद्धिमत्ता, असामान्य कृतित्व शक्ति, प्रबल विचार और चिंतन की गम्भीरता, उच्चकोटि का लेखन एवं वक्तृत्व शक्ति के साथ-साथ सादा सरल जीवन, निरहंकार, नम्रता एव लोकैषणा की अनिच्छा का स्वर्णिम संगम उनके जीवन में था। यही कारण था कि 'राजनीति की वारांगना उनके निर्मल पावित्र्य के कारण, उन्हें छू सकने का भी कभी साहस न कर सकी।'

समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर उनके हितों की चिंता करते हुए इस देश की नीतियाँ बनाने के लिए, 'एकात्म मानवतावाद' के मंत्र-द्रष्टा पण्डित दीनदयाल जी ने राजनीति को भी मर्यादा-विहीन नहीं होने दिया। अतः

कह सकते हैं कि यदि डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने जनसंघ के मंच की स्थापना की तो दीनदयाल जी उसके प्राण प्रतिष्ठापक थे।

वे अनासक्त, निष्काम कर्मयोगी थे। उनका हृदय शुद्ध चरित्र, प्रखर देश भक्ति तथा लोक-संग्रह की अपूर्व शक्ति का पवित्र संगम था। एक बिस्तर, कुछ पुस्तकें, शरीर को सर्दी और गर्मी से बचाने के लिए अत्यन्त आवश्यक कुछ वस्त्र ही उनकी सम्पत्ति थी। तभी तो डॉ. मुखर्जी ने एक बार कहा था, "यदि दीनदयाल जैसे कुछ मुझे दो-तीन व्यक्ति और मिल जाएं तो मैं भारत की राजनीति बदल सकता हूँ।"

जन्म और शैशव

विधाता की विचित्र योजना रहती है। महान् कार्य के लिए जिसको वह चयन करता है, उसे जीवन के प्रारम्भ में ही कठिनाइयों के जाल में झोंक देता है। शायद इसलिए कि सोना अग्नि में पड़कर ही चमकता है। ग्रामीणों जैसा सादा परिधान वाले, सौम्य मुखाकृति वाले एवं व्यवहार में सरलता के धनी पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म अपने नाना पं० चुन्नीलाल जी के घर धनकिया (राजस्थान) में १० अक्तूबर, १९१७ को हुआ था। नाना धनकिया के स्टेशन-मास्टर थे। इनके पिता का नाम पं० भगवतीप्रसाद उपाध्याय और माता का नाम श्रीमती रामप्यारी था। पं० भगवतीप्रसाद जी 'जलेसर रोड' स्टेशन के स्टेशन-मास्टर थे। वैसे, मूलतः वे भगवान् कृष्ण की पावन जन्मभूमि मथुरा जिले के फरह नामक गांव के रहने वाले थे। दीनदयाल जी के जन्म के दो वर्ष पश्चात् एक छोटे भाई ने और जन्म लिया। उसका नाम रखा गया 'शिवदयाल'। जब शिवदयाल जी केवल ६-७ मास के और दीनदयाल जी लगभग २½ वर्ष के थे, इनके पिता को श्राद्धों के दिनों में किसी ने खिचड़ी में विष दे दिया। विष-प्रकोप से उनका नवरात्रों की चतुर्थी को देहावसान हो गया।

तदनन्तर इनकी माताजी दोनों पुत्रों को लेकर अपने पिता के घर आ

गईं। अभी चार ही वर्ष बीते होंगे कि माताजी की भी मृत्यु हो गई। साढ़े छः वर्षीय 'दीना'[1] और साढ़े चार वर्षीय 'शिवदयाल' अनाथ हो गए; माता-पिता के स्नेह से वंचित हो गए।

दोनों भाई मामा के संरक्षण में जीवन-वर्द्धन कर रहे थे कि विधि को यह जोड़ी भी एक आंख न भाई। सन् १९३४ की कार्तिक कृष्ण एकादशी को छोटे भाई शिवदयाल जी की निमोनिया से मृत्यु हो गई। और 'दीना' अब जीवन में सर्वथा एकाकी रह गया।

शिक्षा और छात्र-जीवन

दीनदयाल जी के मामा स्वर्गीय श्री राधारमण शुक्ल गंगापुर (राजस्थान) स्टेशन पर रेलवे के 'मेलगार्ड' थे। अतः उनकी छठी श्रेणी तक की प्रारम्भिक शिक्षा इसी शहर में हुई। सातवीं श्रेणी के लिए कोटा (राजस्थान) में भेज दिये गये। यहां ये होस्टल में रहते थे। सप्तम श्रेणी पास कर ये अपने चचेरे मामा श्री नारायण शुक्ल, जो रायगढ़ के स्टेशन मास्टर थे, के पास आ गए। आठवीं श्रेणी यहीं से पास की। ९वीं तथा १०वीं श्रेणी के अध्ययन के लिए ये सीकर चले गए। यहाँ 'कल्याण हाई स्कूल' में प्रविष्ट हुए। यहाँ १०वीं में सन् १९३५ में 'फर्स्टक्लास फर्स्ट' आए। उनकी ज्योमैट्री की उत्तर-पुस्तिका इतनी श्रेष्ठ थी कि राजस्थान बोर्ड ने उसे अनेक वर्ष तक सुरक्षित रखा। परिणामतः सीकर महाराज ने इन्हें ढ़ाई सौ रुपए नकद पुरस्कार, सोने के दो मैडल और दस रुपए मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की।

राजस्थान में हाई स्कूल में अपनी प्रतिभा दिखाने पर मामा प० राधारमण शुक्ल जी ने इन्टर करने के लिए बिड़ला कॉलिज, पिलानी भेज दिया। बिड़ला कॉलिज, पिलानी राजस्थान में एक श्रेष्ठ शिक्षण संस्था मानी जाती थी। पिलानी में ये होस्टल में रहते थे। इन्टर परीक्षा में भी बोर्ड में सर्वप्रथम आए। परिणामतः दानवीर सेठ घनश्यामदास बिड़ला ने इन्हें ढ़ाई

---

[1] दीनदयाल जी का पारिवारिक नाम

सौ रुपए नकद, दो स्वर्ण-पदक तथा बीस रुपए मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की। ये दानों स्वर्ण-पदक आज भी इनके ममेरे भाई श्री प्रभुदयाल शुक्ल के पास सुरक्षित रखे हैं।

पढ़ाई में श्रेष्ठतम स्थान प्राप्त करने के कारण ये आगे अध्ययन करते रहे। बी. ए. करने के लिए ये सन् १९३७ में कानपुर आ गए। यहाँ श्री सनातन धर्म कॉलिज में प्रवेश प्राप्त किया। बी. ए. में अंग्रेजी के अतिरिक्त गणित, सस्कृत और हिन्दी इनके विशेष विषय थे। पढ़ने में अत्यधिक रुचि थी। अतः रात को जब सब सो जाते और छात्रावास की बत्ती बन्द हो जाती तब भी लालटेन जलाकर वे पढ़ा करते थे। बी. ए. में भी ये सर्वप्रथम आए। इस पर कॉलिज ने तीस रुपए मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की।

सन् १९३९ में एम. ए. करने के लिए दीनदयाल जी आगरा आ गए। यहाँ सेंट जॉन्स कॉलिज, आगरा से अंग्रेजी विषय में एम. ए. प्रीवियस किया। किन्तु ममेरी बहन रामादेवी (श्रीनारायण जी की सुपुत्री) की मृत्यु के कारण पढ़ाई छोड़ दी। एम. ए. नहीं कर पाए।

बाद में आपने गवर्नमेंट ट्रेनिंग कॉलिज, प्रयाग से एल. टी. परीक्षा पास की। सन् १९४१ में ये पी. सी. एस. परीक्षा में भी बैठे।

उपाध्याय जी न केवल एक मेधावी छात्र ही थे, अपितु एक अच्छे खिलाड़ी भी रहे। छात्रों का हर प्रसंग पर नेतृत्व करना आपका सहज कार्य रहा। नेतृत्व की कुशलता व प्रतिभा आपके विद्यार्थी-जीवन की विशेषता रही, जो अब उनके जीवन का स्थायी अंग बन गई थी।

श्री दीनदयाल जी विद्यार्थी-काल में ही अनेक स्थानों से सम्बन्धित हो गये थे। गंगा के पावन प्रवाह के तट पर, क्रांतिकारियों की भूमि कानपुर, राजस्थान के उज्ज्वल इतिहास का प्रतीक सीकर व भारत का तीर्थराज प्रयाग इन सभी स्थानों ने आपके जीवन-प्रवाह को गतिमान किया। क्रांतिकारियों की देशभक्ति, राजस्थान का पराक्रम एवं पावन प्रयाग के पावित्र्य की त्रिवेणी दीनदयाल जी के व्यक्तित्व में प्रकट हुई।

राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ में

पिलानी में दीनदयालजी के एक सहपाठी मित्र थे श्री बलवन्त महाशब्दे। ये इन्दौर के निवासी थे और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे। पिलानी से दोनों मित्र अध्ययनार्थ इकट्ठे कानपुर आए थे। इनके प्रभाव और प्रयत्न से दीनदयाल जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ में प्रवेश किया। उस समय ये छात्रावास में रहते थे और छात्रावास-क्षेत्र में ही शाखा लगती थी। बाद में होस्टल से आधा मील दूर नवाबगज बस्ती में लगने लगी। मकर संक्राति १९३७ को विधिवत् 'प्रतीज्ञा' ली गई और शाखा में ध्वज लगने लगा। उस समय दीनदयाल जी 'होस्टल-गट' के 'गट नायक' थे।

संघ-प्रवेश करने पर आपने संघ की विचारधारा, ध्येय और कार्यपद्धति का मनन-चिंतन किया और उसे श्रेष्ठ समझकर जीवन में आत्मसात करने का प्रयास किया। परिणामतः जब आगरा एम. ए. के अध्ययनार्थ सन् १९३९ में आप गए तो वहां 'राजा की मंडी' में संघ की शाखा स्थापित की।

कानपुर के स्वयंसेवक रहते आपने संघ के अधिकारी शिक्षण-शिविर (O. T. C.) में भाग लिया। उन दिनों यह ४० दिवसीय शिक्षण-शिविर केवल नागपुर में ही लगता था। शिक्षण के अन्त में अन्यान्य विषयों की परीक्षाओं के अतिरिक्त बौद्धिक का लिखित पत्र होता था। दीनदयाल जी ने प्रश्नों के उत्तर के अधिकांश भाग पद्य-बद्ध लिखे। गद्य के स्थान पर पद्य का माध्यम अपनाना, उनकी मौलिक सूझ और योग्यता का परिचायक थी।

इस प्रकार शिक्षण और संघ-कार्य साथ-साथ चलते रहे। संघ कार्य के लिए डिग्री की नहीं, किंतु विद्वत्ता की आवश्यकता तो है ही। दूसरे, शिक्षण काल में सहपाठियों और विद्यालय-पाठियों के मध्य संघ-प्रचार आसानी से हो सकता है। उनमें संघ-कार्य-विस्तार से संघ को समाज-कार्य के लिए श्रेष्ठतर लोग प्राप्त हो सकेंगे, ऐसी कल्पना भी रहती है। यही कारण है कि

दिल्ली में संघ कार्य करने के लिए आए श्री वसन्तराव ओक ने भी संघ कार्य के लिए कॉलिज-प्रवेश किया था।

शिक्षण समाप्त करने के बाद, जीवन में संघ की विचारधारा को पूर्णतः आत्मसात् कर लेने के कारण आपने देश-हितार्थ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रचारक बनना स्वीकार किया। शादी कर, घर बसाने और अपने पिता की एक मात्र जीवित संतान होने के कारण वंश-बेल को पुष्पित-पल्लवित करने की मानवीय प्रचण्ड अभिलाषा लुप्त हो गई। राष्ट्रोत्थान तथा देशोद्धार ही जीवन का प्रथम कर्त्तव्य है, ऐसा व्रत उन्होंने ले लिया। देश की स्वतंत्रता व अखंडता के लिए उन्होंने अपना खिलता हुआ जीवन-पुष्प भारत माता के चरणों में ही अर्पित करने का संकल्प किया और चल पड़े राष्ट्र-भक्ति की अलख जगाने के लिए।

उत्तर-प्रदेश के लखीमपुर जिले की एक तहसील-प्रचारक के रूप में आपकी नियुक्ति हुई।

आपके मिलनसार स्वभाव, मधुर वाणी व निरभिमानी वृत्ति ने आपको कुशल संघटक के रूप में लोकप्रिय बना दिया। समाज के बड़े-बड़े विद्वान्, उत्साह भरे बाल व तरुण, पढ़े व अनपढ़ शहरी और देहाती, धनी व गरीब इनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर संघटन सूत्र में सहस्त्रों की संख्या में आबद्ध होने लगे।

इनकी योग्यता, कुशलता एवं लोकप्रियता देखकर संघ के अधिकारियों ने उन्हें १९४५ में उत्तर-प्रदेश का सह-प्रान्त-प्रचारक बनाकर प्रदेश के संघटन का भार आपके कन्धों पर सौंप दिया। जैसे-जैसे आप पर व्यापक जिम्मेदारियाँ आती गयीं आपका व्यक्तित्व अधिकाधिक निखरने लगा, किंतु बहुविध प्रतिभा सम्पन्न दीनदयाल जी केवल संघटन-कार्य तक ही सीमिति नहीं रहे। जो भी नया कार्य करने का आपको अवसर मिला उसी में आप अग्रणी सिद्ध हुए।

इसी लोक-सग्रही मनोवृत्ति को देखकर परम पूजनीय गुरु जी ने दीनदयाल

जी के बारे में एकबार उनका आत्म-दर्शन करते हुए कहा था, 'दिल गरम एवं दिमाग ठंडा रखने की कला में वे प्रवीण हैं। दिल की गरमी ऊपर चढ़ कर कभी भी उनके दिमाग के संतुलन को नष्ट नहीं कर सकती है एवं दिमाग की ठंडक भी कभी नीचे आकर उनके दिल की आग को बुझाने में समर्थ नहीं हो पाती है।'

विवाह

भारतीय संस्कृति में मनुष्य के किए धर्माचरणपूर्वक जीवन व्यतीत कर परम लक्ष्य परम तत्व की प्राप्ति के लिए स्थिति अनुसार चार आश्रमों की व्यवस्था है—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास।

ब्रह्मचर्य-आश्रम विद्याध्ययन-काल होता है। सीखी हुई विद्या का अनुभव और पितृऋण विमोचनार्थ सतति प्राप्ति गृहस्थाश्रम में करनी होती है। वेदादि निखिल शास्त्र प्रतिपादित हिन्दू-सस्कृति के षोडश संस्कारों में बारहवाँ संस्कार (विवाह-संस्कार) है। इस संस्कार पालन के लिए श्रीमद्‌भगवद् गीता का आदेश है, धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ' अर्थात् धर्मानुकूल काम भगवान् का ही स्वरूप है।

फिर भी दीनदयाल जी ने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने की भीष्म प्रतीज्ञा की। देशहित संन्यास लेने का तर्क उन्होंने अपनी पुस्तक जगत्‌गुरु शंकराचार्य में शंकराचार्य जी के मुंह से इस प्रकार कहलवाया है, 'हे मां! पितृऋण है और उसी को चुकाने के लिए तो मैं सन्यास ग्रहण करना चाहता हूँ। पिता जी ने जिस धर्म को जीवन भर निबाहा, वह धर्म यदि नष्ट हो गया तो बताओ माँ, क्या उन्हें दुःख नहीं होगा। उस धर्म की रक्षा से ही उन्हें शांति मिल सकती है और फिर अपने बाबा, उनके बाबा और उनके भी बाबा की ओर तो देखो। हजारों वर्ष का चित्र आंखों के सामने आ जाता है। भगवान् कृष्ण ने इसी धर्म की रक्षा के लिए जीवन को लगा दिया, कौरव-पांडवों में युद्ध कराया। अपने जीवन में वे धर्म की स्थापना कर गए,

पर लोग धीरे-धीरे भूलने लगे। शाक्यमुनि के काल तक फिर धर्म में बुराइयाँ आ गईं। उन्होंने भी इसकी बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया, पर अब आज उनके सच्चे अभिप्राय को भी लोग भूल गए हैं। माँ इन सब पूर्वजों का हमारे ऊपर ऋण है या नहीं। × × × यदि हिन्दू समाज नष्ट हो गया, हिन्दू धर्म नष्ट हो गया, तो फिर तू ही बता माँ, कोई दो हाथ, दो पैर वाला तेरे वंश में हुआ तो क्या तुझे वह पानी देगा ? कभी तेरा नाम लेगा ?'

इसी विचार से प्रेरित होकर देश की यथार्थता का नग्न चित्र खींचते हुए २१.७.१९४२ को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रूप में कार्य करते रहने की प्रबल इच्छा को प्रकट करते हुए अपने मामा जी को एक पत्र लिखा— 'समाज की उन्नति के बिना व्यक्ति का विकास असम्भव है। यदि कुछ व्यक्ति समाज में उन्नत हो भी गए तो उससे समाज को क्या लाभ है ? वस्तुतः यह हानिकारक विकास है। आज समाज को हमारे जीवन की अपेक्षा है। हमें उसे पूर्ण करना है।'

इस समय दीनदयाल जी लखीमपुर के जिला प्रचारक के रूप में कार्य कर रहे थे।

घर में मामी ने जब विवाह के लिए बहुत आग्रह किया, तो एक दिन मामी को समीप बैठाकर समझाने लगे, 'जानती हो मैं और चाचा (जो इनके समवयस्क ही थे) जब पिलानी में थे, तब हमने एक ज्योतिषी को हाथ दिखाया था। ज्योतिषी ने हमारे हाथ देखकर बताया था कि जिस दिन तुम दोनों की शादी होगी, उसी दिन तुम लोग इस संसार में नहीं रहोगे।'

और कुछ समय बाद चाचा की शादी हुई। कन्या की विदाई होते ही चाचा की मृत्यु हो गई। मामी को ज्योतिषी की बात सच लगी। उन्होंने दीनदयाल जी से कभी विवाह के लिए नहीं कहा।

प्रत्युत्पन्नमति दीनदयाल गृहस्थी से छुटकारा पाने में दूसरे शंकराचार्य बने।

लेखनी के धनी एवं श्रेष्ठ पत्रकार

'सामाजिक और राजनीतिक चेतना के साथ श्री उपाध्याय जी की साहित्यिक प्रतिभा भी अप्रतिहत थी।' फुरसत के समय वे अनेक विषयों पर लेख लिखने लगे। इससे इनकी लेखन-कला का साथियों को आभास मिला। इनसे सम्राट चन्द्रगुप्त का चरित्र लिखने का अनुरोध किया गया। प्रातःकाल से सायंकाल तक चुनार में (मिर्जापुर जिला) एक मकान के कमरे में बैठकर आपने पूरी पुस्तक लिख डाली। यह आपकी प्रथम पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि इसके अनेक संस्करण छपे। भारत की लगभग सभी भाषाओं में यह पुस्तक अनुदित हुई और दीनदयाल जी एक सफल लेखक के रूप में प्रकट हुए।

१९४७ में आपने 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन लिमिटेड' की स्थापना की। हिंदी में राष्ट्रधर्म मासिक पत्रिका का प्रकाशन आपने प्रारम्भ किया। थोड़े ही काल में यह मासिक इतना लोकप्रिय हुआ कि उसके ग्राहक भारत के हर प्रदेश में बन गये। दीनदयाल जी सम्पूर्ण भारत में परिचित होने लगे। मित्रों की सहायता से आपने एक छोटा-सा प्रेस खरीदा।

आगे चलकर उन्होंने 'पाञ्चजन्य' साप्ताहिक का भी प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। इतने पर ही उन्हें सन्तोष न हो सका। उनके लेखों को पढ़ने की रुचि समाज में बढ़ती ही गई, तो उन्होंने 'दैनिक स्वदेश' भी चला दिया। एक प्रखर बुद्धि का विद्यार्थी कुशल संघटक बना। अवसर पाकर एक सफल लेखक के रूप में वह प्रकट हुआ और आवश्यकता पड़ने पर वह योग्य पत्रकार के रूप में भी प्रसिद्ध हुआ। किन्तु उनका व्यक्तित्व यहां तक ही सीमित नहीं रह सका। पूर्णावतार भगवान श्रीकृष्ण की भान्ति वह सर्वगुण सम्पन्नता की परिधि को धीरे-धीरे बढ़ाता ही जा रहा था।

उपाध्याय जी राष्ट्रधर्म प्रकाशन के मैनेजिंग डाइरेक्टर थे, फिर भी प्रेस का कोई भी कार्य करने में कोई झिझक नहीं थी, शर्म नहीं थी। इसके लिए

दो-एक उदाहरण देना पर्याप्त होगा। एक दिन अत्यधिक शीत प्रकोप के कारण रात्रिपाली के कम्पोजीटर कम आए। 'स्वदेश दैनिक' निकलने की समस्या खड़ी हो गई। प्रात: अखबार निकले तो कैसे ? दीनदयाल जी को पता लगा। वे तुरन्त प्रेस पहुँचे और सम्पूर्ण रात कम्पोजिंग करते रहे। 'मानों एक-एक अक्षर जोड़कर स्वयं इतिहास-पुरुष भारत की भावी रचना में संलग्न हो।'

राष्ट्रधर्म प्रकाशन में अर्थाभाव के कारण सभी विभागों में कर्मचारियों की कमी की चर्चा पर कर्मचारियों को बड़बड़ाते सुन लिया उपाध्याय जी ने। उन्होंने उनसे कुछ नहीं कहा और काम में चुपचाप लग गए। दो घंटे तक ग्राहकों के बिल बनाए और अखबारों के बंडल तय्यार हुए। मैनेजिंग डाइरेक्टर इस समय मात्र श्रमिक था। 'श्रम का गौरव उनके उज्ज्वल और प्रकाशमान नेत्रों में प्रतिबिम्बित हो उठा था।' अन्य कर्मचारियों के साथ एक साइकिल अपने लिए मंगवाई। उसके कैरियर पर स्वयमेव बंडल बांधे और ट्रेन पर लदान के लिए चल पड़े। परिणामत: राष्ट्रधर्म का कर्मचारी उन्हें अपना बॉस नहीं, साथी मानता था।

चाणक्य बुद्धि

१९४८ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की बढ़ती हुई लोकप्रियता से कांग्रेसी सरकार विद्वेष करने लगी। मौका निकाल कर उसने संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया। शासन का दमन-चक्र तेजी से चलने लगा। राष्ट्रधर्म प्रकाशन के सभी अखबार सरकार ने बन्द कर दिए ? किन्तु चाणक्य जैसी कुशाग्र-बुद्धि-प्राप्त पं० दीनदयाल कैसे काबू में आ सकते थे ? एक पत्र बन्द हुआ कि वह दूसरा निकाल देते थे। 'पाञ्चजन्य' बन्द हुआ तो उसी दिन से 'हिमालय' का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया और 'हिमालय' पर कुठाराघात किया गया तो 'देश-भक्त' चल पड़ा। सरकार तंग आ गई, किन्तु दीनदयाल जी की कलम सरकार रोक न सकी। सरकार इन्हें खोजती ही रही, किन्तु जब तक दीनदयाल जी ने स्वयं नहीं चाहा, सरकार उन्हें लखनऊ में पकड न सकी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सत्याग्रह छेड़ दिया। दीनदयाल जी उत्तर-प्रदेश में इस सत्याग्रह का संचालन करने लगे। उस समय सत्याग्रह-संचालन

में दीनदयाल जी का कौशल देखकर अहिंसावाद का ढिंढोरा पीटने वाली कांग्रेसी सरकार दंग रह गई। संघ को हिंसावादी सिद्ध करने के लिए सरकार ने हर जगह पर सत्याग्रही स्वयंसेवकों को उत्तेजित करने के लिए बर्बर अत्याचार किए। प्रौढ़ तथा वृद्धों के अतिरिक्त सहस्रों युवक इस सत्याग्रह में बड़ी उमंग के साथ भाग ले रहे थे। पुलिस ने इन पर अमानुषिक अत्याचार किए। किन्तु सत्याग्रह का संचालन इतनी कुशलता के साथ किया जा रहा था, कि एक भी दुर्घटना नहीं हो सकी। सत्याग्रह प्रारम्भ से अन्त तक पूर्णतया शान्तिमय रहा। एक भी जवान जोश में होश न खो सका। यह थी पं० दीनदयाल जी के नेतृत्व की विशेषता।

इस सत्याग्रह के बाद पं० दीनदयाल फिर से साहित्य-साधना में व पत्रकारिता में जुट गए। उन्होंने जगद्गुरु शंकराचार्य की जीवनी लिखी, जो भारत भर में लोकप्रिय होकर भारत की अधिकांश भाषाओं में अनूदित हुई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ० केशवराव बलिराम हेड्गवार के मराठी जीवन-चरित को हिन्दी में अनुदित किया। डॉ० हेडगवार के जीवन-दर्शन को भली-भाँति हृदय में आत्मसात करने के कारण ही वे अनुवाद में भी मौलिक प्रतिभा दर्शा पाए।

व्यस्त जीवन में अध्ययन, मनन, चिंतन और फिर लिखने का समय कहाँ से निकले तो इसके लिए दो स्थानों का प्राय: वे प्रयोग करते थे। (१) शौचालय (२) रेल-प्रवास।

दीनदयाल जी को शौच से निवृत्त होने में पर्याप्त समय लगता था, अत: वे उसका उपयोग अध्ययन में करते थे। इसी प्रवृत्ति के कारण एक बार ये पुलिस-पकड़ में आ चुके हैं। पुलिस कुछ कार्यकर्ताओं की तलाश में थी। पुलिस आ रही है, ऐसा जानकर शेष अधिकारीगण तो बच निकले, किन्तु दीनदयाल जी न निकल पाए। और जब शौचालय से बाहर आए तो पुलिस ने उन्हें बन्दी बना लिया।

वे प्राय: पैसेन्जर ट्रेन में सफर करते थे। और पैसेन्जर में भी प्रथम श्रेणी में, जहाँ के डिब्बे प्राय: बिना यात्री ही सहस्रों मील का सफर करते हैं। पैसेन्जर ट्रेन चलती आहिस्ता है और गंतव्य स्थान पर पहुँचने में समय लगाती है। आहिस्ता चलने से लिखने में बाधा नहीं पड़ती और गंतव्य स्थान आने में समय लगने से लेख पूरा हो जाता है। वार्षिक अधिवेशनों के अनेक प्रस्ताव वे गाड़ी में ही लिखते और टाइपिस्ट साथ होता ही, उससे टाइप करवाते।

जनसंघ के महामन्त्री :

दीनदयाल जी के जीवन की अनेक-विध प्रतिभा के अन्य पहलू भी अभी प्रस्फुटित होने को बाकी थे।

१९४६ में भारत की अन्तरिम सरकार बनी। पं० जवाहरलाल जी देश के प्रथम प्रधानमन्त्री बने। १९४७ में देश आजाद हुआ। किन्तु 'हमारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े होंगे, फिर भी देश खण्डित नहीं होगा' इस प्रकार संकल्प करने वाले नेताओं की सहमति से भारत माता का विभाजन हुआ। उसके बाद भी हमारी सरकार की नीति इतनी अव्यावहारिक रही कि पाकिस्तान ने हमारे मुकुट-मणि काश्मीर पर आक्रमण कर दिया। शत्रु को अपनी भूमि से बाहर खदेड़ने के पूर्व ही हमारी विजयशाली सेना के पैर रोक दिए गए। उसके बाद भी हमारी सरकार की पाकिस्तान के साथ घुटने टेकने की नीति ही चलती रही।

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी को १९५० में अपमानजनक 'लियाकत अली पैक्ट' के कारण, केन्द्रीय सरकार का मंत्रीमंडल छोड़कर बाहर आना पड़ा। उनकी प्रेरणा से देश में जनसंघ के निर्माण का विचार हुआ। समय की आवश्यकता देखकर पं० दीनदयाल जी इस नए क्षेत्र में आगे आये। २१ सितम्बर १९५१ को उन्होंने लखनऊ में उत्तर-प्रदेश का सम्मेलन बुलाकर प्रादेशिक जनसंघ की स्थापना की। उसी सम्मेलन में आपने जनसंघ को

अखिल भारतीय रूप देने का प्रस्ताव रखा, जो सर्वसम्मति से पारित हुआ और ठीक १ माह के बाद अर्थात् २१ अक्तूबर १९५१ को दिल्ली में अखिल भारतीय सम्मेलन किया गया व डा० मुखर्जी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ ने अखिल भारतीय रूप ग्रहण किया। १९५२ के दिसम्बर में कानपुर में जनसंघ का प्रथम अखिल भारतीय विशाल सम्मेलन हुआ। पं० दीनदयाल जी की प्रतिभा, संघठन-कौशल व राजनैतिक सूझबूझ देखकर डा० श्यामाप्रसाद जी ने उनको जनसंघ का महामन्त्री घोषित किया। तब से लेकर १९६७ तक आप निरन्तर इस पद पर रहकर १५ वर्ष तक भारतीय जनसंघ के राजनीतिक रथ का संचालन करते रहे।

काश्मीर को भारत से अलग करने का शेख अब्दुल्ला का षड्यंत्र चल रहा था। जनसंघ ने कानपुर अधिवेशन में इस षड्यंत्र के विरुद्ध आवाज उठायी। जनसंघ के अध्यक्ष डा० श्यामाप्रसाद जी ने लोकसभा में भी इस प्रश्न को उठाया, किन्तु हमारी कांग्रेसी सरकार हमेशा अपने दुश्मन को भाई और दोस्त कहकर गले लगाने की नीति अपनाती जा रही थी। वह शेख अब्दुल्ला पर भरोसा कर उसके षड्यंत्र की ओर आँख मूंद कर बैठी रही। सरकार द्वारा काश्मीर समस्या की उपेक्षा तथा शेख अब्दुल्ला के षड्यन्त्र की उग्रता देखकर जनसंघ को सत्याग्रह द्वारा जनमत का प्रभाव डालने के अतिरिक्त अन्य मार्ग दिखाई नहीं दिया। अन्ततोगत्वा जनसंघ ने 'एक देश में एक प्रधान, एक विधान और एक निशान' का लक्ष्य रख कर सत्याग्रह छेड़ दिया। उस सत्याग्रह के संचालन का सम्पूर्ण भार पं० दीनदयाल जी पर सौंप कर डा० मुखर्जी स्वयं सत्याग्रह में कूद पड़े। कितना विश्वास था डा० मुखर्जी का—दीनदयाल पर! वह कहा करते थे, जैसा मैं चाहता था, वैसा ही साथी मुझे मिल गया। राष्ट्र का दुर्भाग्य है, कि इस सत्याग्रह में डा० मुखर्जी का बलिदान हुआ।

जनसंघ का मस्तिष्क

डा. मुखर्जी की मृत्यु के उपरान्त जनसंघ के अध्यक्ष अनेक महापुरुष बने–सर्वश्री प्रेमनाथ डोगरा, मौलिचन्द्र शर्मा, बच्छराज व्यास, पीताम्बरदास, डॉ. रघुवीर, ए. रामाराव, बलराज मधोक आदि, किन्तु महामन्त्री रूप में पं० मौलिचन्द्र शर्मा के अतिरिक्त वे सबको ठीक जनसंघ के विचारानुरूप ले चले।

जनसंघ को पहला आघात डॉ. मुकर्जी की मृत्यु से लग चुका था, दूसरा आघात लगा पं० मौलिचन्द्र शर्मा के अध्यक्षकाल में। गलत नेतृत्व ने जनसंघ में गृह-कलह उत्पन्न कर दी। हजारों कार्यकर्ता संघ और जनसंघ छोड़कर चले गए। कुछ अन्य संस्थाओं में कार्य करने लगे और कुछ शान्त होकर घर बैठ गए। इस संकट पर विजय पाने में कुछ समय लगा। सन् १९६२ के चुनावों में अनेक स्थानीय पराजयों का मूलतः कारण यही था, किन्तु दीनदयाल जी की बुद्धिमत्ता और सहृदयता, अनथक परिश्रम के कारण रूठे हुए अनेक कार्यकर्ता जनसंघ में लौट आए।

जनसंघ को अभी तक कोई अखिल भारतीय रूप में प्रसिद्ध व्यक्ति नहीं मिला था। संसार की अनेक भाषाओं के विद्वान्, अनेक विषयों के ज्ञाता, विदेशों में भाषा-विद् करके प्रसिद्ध व्यक्ति डॉ० रघुवीर अब जनसंघ के प्रधान बने। वे जनसंघ के रथी बन उसको ठीक नेतृत्व प्रदान कर रहे थे। भारत से बाहर जनसंघ-प्रचार उनके द्वारा बहुत अधिक सम्भव था। किन्तु दुर्भाग्य से सन् १९६२ के निर्वाचन के दिनों में कार-दुर्घटना से उनकी मृत्यु हो गई।

जनसंघ पर फिर पहाड़ टूट पड़ा। देश में महान् निर्वाचन सिर पर थे; और सारथी का रथी काल-कवलित हो चुका था। इस कर्मयोगी ने हृदय पर पत्थर रखकर दुःख सहन किया और १९६२ के चुनाव में विजयी होने के लिए कार्य में जुट गया। संकटकाल में धैय रखने की क्षमता और संघटन-कौशल ने जनसंघ में नवचेतना जागृत की। १९६२ में अनेक स्थानों और केन्द्र में पहले से बहुसंख्या में सदस्य विजयी हुए।

जनसंघ अधिकाधिक व्यापक बनता गया और सशक्त बनकर राजनैतिक क्षेत्र में वह अपना स्थान बनाता चला गया। दीनदयाल जी राजनैतिक क्षितिज पर एक नए नक्षत्र के रूप में प्रगट हुए। उनके नेतृत्व में जनसंघ एक के बाद एक सफलता प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ने लगा। धीरे-धीरे उसने समाज के सभी वर्गों में प्रवेश पाया। जनसंघ को उन्होंने एक नई दिशा और शक्ति प्रदान की। जनसंघ की समस्त विचारधारा और नीतियाँ उपाध्याय जी से ही अनुप्राणित थीं। निस्सन्देह वे इस दल के 'मस्तिष्क' थे।

प्रारम्भ में जनसंघ का कार्यक्षेत्र नगरों तक ही सीमित था। दीनदयाल जी ने अपने दल का विस्तार भारत के कोने-कोने तक करने का निश्चय किया। उनके द्वारा ग्रामीण जीवन की समस्याओं का अध्ययन जनसंघ को ग्राम-ग्राम तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होने लगा। लगान आधा करने का आंदोलन जनसंघ को किसानों के हृदय में स्थान देने लगा।

गोरखपुर जिले की बांसगांव तहसील में खेतिहर मजदूरों की दयनीय दशा देखकर पं० दीनदयाल जी विह्वल हो उठे। उन्होंने बड़ी ही कुशलता के साथ उनकी रोजी बढ़ाने का आंदोलन हाथ में लेकर उसे सफल बनाया। प्रत्यक्ष कार्य करके दिखाकर वे जनसंघ के कार्यकर्त्ताओं को नए-नए क्षेत्रों में प्रविष्ट कराने लगे।

समय-समय पर राष्ट्र-जीवन की सब समस्याओं पर खोजपूर्ण लेख लिखकर उन्होंने जहाँ कार्यकर्ताओं को दृष्टि प्रदान की, वहाँ वे जनता का भी मार्ग-दर्शन करते रहे। जनजीवन की हर समस्या को हाथ में लेकर उनके लिए संघर्ष करने की वृत्ति और योग्यता उन्होंने अपने सहयोगी कार्यकर्ताओं में निर्माण की।

विधान मंडलों में जो जनसंघ के प्रतिनिधि पहुँचते गये उनको भी बड़ी योग्यता से मार्ग-दर्शन कर उन्हें अध्ययनशील बनाते हुए गम्भीरता से विचार कर हर पहलू पर विधान-मण्डलों में गम्भीर विचार प्रकट करने की प्रेरणा दी।

लंदन में 'जनसंघ फोरम'

दीनदयाल जी जब इंगलैंड गए तो वहाँ के सहस्रों भारतीय विद्यार्थियों और एक लाख से अधिक इंगलैंड में बसे भारतीय परिवारों में जनसंघ की विचारधारा फैलनी चाहिए। उन्हें जनसंघ की शुद्धकल्पना रहनी चाहिए। भारतीयता का शुद्ध प्रचार होना चाहिए, इस नाते वहाँ एक दिन चर्चा का विषय बना। कारण, जनसंघ के बारे में वहाँ के भारतीय दूतावास को भी, गलत फहमी थी और वे उसे 'जनसंघ—एक हिंदू सम्प्रदायवादी संस्था' के नाते से ही जानते-पहचानते हैं। इन गलत फहमियों को दूर कर जनसंघ की शुद्ध कल्पना हेतु और इंगलैंड से लौटने पर भारत में आने वाले भारतीय के हृदय में मातृभूमि, पितृभूमि और पुण्यभूमि के प्रति स्वाभाविक प्रेम जागृत हो कृष्णा मेनन की 'इंडिया लीग' की तरह लन्दन में 'जनसंघ फोरम' की स्थापना हुई।

जनसंघ के अध्यक्ष

१५ वर्ष तक जनसंघ के महामन्त्री पद पर वे जिस अन्तःप्रेरणा, लगन और एक आदर्श स्वयंसेवक की भांति कार्य करते रहे, उसके उदाहरण बहुत कम हैं। इधर वे राजनीति के दोषों और दलदली कीचड़ में कभी-कभी अपने को बहुत परेशान पाते थे। जीवन से पलायन उन्होंने सीखा न था। राजनीति की वारांगना को किसी भी मूल्य पर स्पर्श तक न करना चाहते थे। ऐसी स्थिति में परमपूजनीय गुरुजी से 'किस झमेले में मुझे डाल दिया है। मुझे फिर से अपना प्रचारक का काम करने दें,' की शिकायत और राजनीति से सर्वथा दूर संघ-कार्य करने की आज्ञा चाहते थे, किंतु गुरु जी का एक ही उत्तर था—'भई तुम्हारे सिवाये इस झमेले में किसको डालें। संगठन के कार्य पर जिसके मन में इतनी अविचल श्रद्धा और दृढ़ निष्ठा है, वही उस झमेले में रह कर कीचड़ में भी कीचड़ से अपृश्य रहता हुआ, सुचारु रूप से वहाँ की सफाई कर सकेगा।'

इधर, जनसंघ के बढ़ते रूप के अनुरूप जनसंघ-प्रधान की आवश्यकता थी। आवश्यकता थी ऐसे प्रधान की जो समस्त भारत की मांग के अनुरूप जनसंघ की नीतियों और कार्य को व्यवहृत कर सके। अत: दीनदयाल जी का नाम प्रस्तुत किया गया। वे घबरा गए। वे सारथी से रथी नहीं बनना चाहते थे, किंतु परमपूजनीय गुरुजी के आग्रह पर यह पद भी स्वीकार कर लिया। दिसम्बर १९६७ के अंत में सुदूर दक्षिण में कालीकट में होने वाले जनसंघ के १४वें अधिवेशन के अवसर पर आप अध्यक्ष बने।

जनसंघ-अध्यक्ष रूप में उनके आने से सम्पूर्ण संगठन में पुनः एक चेतना आई। अनेक कार्यकर्ता पुन: जनसंघ कार्य में एक रूप हो जुट गए। जनसंघ के इतिहास ने एक करवट बदली थी। जनता चिल्लाई, 'जनसंघ की रीति-नीति संकुचित क्षेत्र छोड़ व्यापक हो चली है। महान् परिवर्तन हुआ है।' वस्तुत: जनसंघ ने कार्यसिद्धि का ऐतिहासिक दृश्य उपस्थित किया था।

महान् अर्थ-शास्त्री

'राष्ट्र-जीवन की समस्याएँ' नाम से उनकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसका भारत की सब भाषाओं में अनुवाद हुआ और वह हजारों की संख्या में बिकी।

पंचवर्षीय योजनाओं पर भी आपने अंग्रेजी में 'दी टू प्लैन्स-प्रामिसेस, परफार्मेन्स एण्ड प्रासपेक्टस' नाम की किताब लिखी जो आर्थिक क्षेत्र में एक माननीय ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध है। उनकी 'भारतीय अर्थ-नीति विकास की एक दिशा' नाम की पुस्तक बहुत ही लोकप्रिय हुई। यह भारत की लगभग सभी भाषाओं में अनुदित है। इसके अतिरिक्त हमारा कश्मीर, महान् विश्वासघात, अखण्ड भारत, टैक्स या लूट आदि अनेक पुस्तकें लिखकर सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक साहित्य में आपने अमूल्य सामग्री प्रस्तुत की।

भाषा के प्रश्न पर भी आपका गहन अध्ययन था। आप भारत की अनेक भाषाएँ जानते थे। हिंदी के आप केवल अनन्य भक्त ही नहीं एक श्रेष्ठ विद्वान् भी थे।

ऋषियों जैसा व्यक्तित्व

पं० दीनदयाल जी एक उच्च कोटि के विचारक, प्रतिभा-सम्पन्न लेखक, कुशल पत्रकार, प्रभावी वक्ता, निपुण संघटक, चतुर राजनीतिज्ञ व सफल आंदोलनकर्त्ता भी थे। भारतीय-संस्कृति, भारतीय अर्थशास्त्र और भारतीय राजनीति के वे पारदर्शक पंडित थे। इस विषय में उनके सुचिन्तित विचारों का लोहा मानने को दिग्गज लोग भी विवश हो जाते थे।

धोती और कुर्ते के सादे वेष में साधारण दिखाई पड़ने वाली यह मूर्ति इन सब गुणों से सम्पन्न होगी ऐसी कल्पना प्रथम दर्शन में कर सकना किसी के लिए भी कठिन था। उनका निरभिमानी स्वभाव व मधुर वाणी उनके महान् व्यक्तित्व का वैशिष्ट्य था।

उनकी सादगी का एक नमूना देखिए। यात्रा में एक बार किसी स्टेशन पर बनियान पहने खड़े थे। भूख लगी थी। डाइनिंग कार का बैरा उधर से गुजरा। उन्होंने बैरे से कहा, 'भाई जरा खाना पहुँचा देना।' इस आत्मीयपूर्ण संबोधन का सही मूल्यांकन बैरा क्या जाने? दो स्टेशन गुजर गए, भोजन न आया। गंतव्य स्टेशन से एक स्टेशन पूर्व वही बैरा दिखाई दिया। दीनदयाल जी ने उसे बुलाया। बैरा यह देखकर कि २ घंटे पूर्व थाली का आर्डर देने वाला अत्यन्त सामान्य व्यक्ति प्रथम श्रेणी का यात्री है, डरा-झिझका और हाथ जोड़कर कहने लगा, 'साहब! माफ कर दें। गलती हो गई।' दीनदयाल जी ने कहा, 'डरो मत। शिकायत मैं नहीं करता, लेकिन एक बात याद रखो कि कपड़े देखकर खाना देने की आदत बुरी है—इसको छोड़ देना।'

एक बार दीनदयाल जी बम्बई से नागपुर रेल द्वारा जा रहे थे। उनके साथ संघ के कुछ अधिकारी भी थे, जो तृतीय श्रेणी के डिब्बे में थे। परम पूजनीय गुरु जी प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहे थे। किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर चर्चार्थ गुरु जी ने दीनदयाल जी को बुलाया। बातचीत करने के उपरांत

दीनदयाल जी जब लौटे तो सर्वप्रथम उन्होंने टी.टी.ई. की खोज की। टी.टी.ई. के मिलने पर उन्होंने कहा, 'उनके पास तृतीय श्रेणी का टिकट है, किन्तु उन्होंने दो स्टेशनों तक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा की है, अतः तत्संबंधी अधिक किराया जमा करवाना चाहते हैं।' एक क्षण टी.टी.ई. ठिठका और आश्चर्य में रह गया। कहाँ तो लोग आँखों में धूल झोंककर बगैर टिकट यात्रा करते हैं और कहाँ यह सीधा-सादा प्राणी जो केवल दो स्टेशनों का प्रथम श्रेणी यात्रा का पूरक धन देने को स्वयं तत्पर है ? उसने धनराशी जोड़ी, उक्त धन लिया और पूछा, क्या आप रसीद भी चाहते हैं ? दीनदयाल जी ने तत्काल उत्तर दिया, 'अवश्यमेव।' यह है उनकी सच्चाई और ईमानदारी का एक उदाहरण। वस्तुत: उनका अन्त:करण ही उनका मार्गदर्शक था।

वे कम बोलते थे, सुनते अधिक थे। अतिशयोक्ति और प्रचार में उनकी रुचि नहीं थी। दूसरा व्यक्ति उनकी बात पूर्णत: समझ ले यही उनका उद्देश्य था। कार्यकर्ताओं की भूल करने पर 'अब जो हो गया सो हो गया, भविष्य में ध्यान रखना चाहिए,' इस सूत्र वाक्य के द्वारा समझा देते थे।

व्यक्तिगत सुख-सुविधा की दृष्टि से अपना अलग से घरौंदा बनाने की साधारण मानव की अभिलाषा उनके मस्तिष्क को कभी छू न सकी। मां भारती की गोद, यही उनका घर था। ईश्वरप्रदत्त नीलगगन यही उनका छप्पर था। भारत की हर नारी उनकी मां और बहन थी। भारत माँ का हर एक लाल उसका सहोदर भाई था। देश की अखण्डता व स्वतन्त्रता की रक्षा, यही एक उनके मन की धुन थी। समाज के हर व्यक्ति की खुशहाली के लिये अपने जीवन का एक-एक क्षण लगाना, यही उनके हृदय की एकमेव आकांक्षा थी। वे अपनी समग्र कर्मचेतना, प्रतिभा और जीवन का राई-रत्ती सब कुछ देश को निछावर कर चले थे।

वे समन्वयवादी थे, समझौतावादी थे; किंतु सिद्धांतों से गिरकर अथवा परिस्थिति से पराजित होकर उन्होंने न समझौता किया, न समन्वय। जनसंघ

को नव-पथ की ओर अग्रसर कर राजनीति के विशाल प्रांगण में खड़ा कर देने का साहस केवल दीनदयाल जी में ही था ।

असामयिक अन्त

११ फरवरी १९६८ रविवार को सभी भारतवासियों ने यह दुःखद समाचार सुना कि पण्डित दीनदयाल जी का शव मुगलसराय स्टेशन के समीप पड़ा पाया गया । भारत का जन-मानस हिल गया । भारत का कण-कण अवाक् रह गया । भारत शोक सागर में डूब गया ।

भगवान् कृष्ण की मृत्यु तीर लगने से हुई थी, स्वामी श्रद्धानन्द का दिल्ली के चांदनी चौक में कत्ल हुआ था, महात्मा गांधी पर गोली चलाई गई थी, ईसा-मसीह सूली पर चढ़ाये गये थे, जॉन कनेडी को भी गोली का निशाना बनाया गया था, संयुक्त राष्ट्र संघ के महामन्त्री हेमर शॉल्ड के वायुयान को गोली मारकर उनको समाप्त कर दिया गया था । उन्हीं महापुरुषों की माला में एक मनका और जुड़ गया—पं. दीनदयाल उपाध्याय, रात्रि के अन्धकार में चलती गाड़ी में जिनकी क्रूरतापूर्वक हत्या की गई ।

२

नृशंस हत्या

११. २. ६८ को प्रातः ३-३० बजे उत्तर-प्रदेश के एक प्रमुख रेलवे-जंक्शन 'मुगल सराय' पर ईश्वरदयाल 'लीवर मैन' ने सहायक स्टेशन मास्टर को दूर-भाष से सूचना दी कि प्लेटफार्म से करीब १५० गज पहले मेनलाइन की दक्षिण ओर की बिजली के खम्भा नं० १२७६ से लगभग ३ फुट दूर एक लाश लोहे और कंकड़-पत्थर की सेज पर निर्जीव पड़ी है। वस्तुतः इस मृतक व्यक्ति को सबसे पहले शंटिंग पोर्टर दिग्पाल ने ३ बजे के लगभग देखा। गफूर ड्राइवर इंजन की शंटिंग कर रहा था और किशोर मिश्र गनर उसके साथ था। दिग्पाल ने किशोर मिश्र को कहा और उसने आगे ईश्वरदयाल को कहा।

सहायक स्टेशन मास्टर ने ३.३५ पर रेलवे पुलिस को मीमो भेजा। मीमो पर लिखा था, 'Almost dead'. पुलिस का पहला सिपाही ३.४५ पर और अन्य दो सिपाही सर्वश्री रामप्रसाद तथा अब्दुल गफूर ३.५० पर शव की निगरानी करने भेज दिये गए। ४ बजे रेलवे पुलिस दरोगा श्री फतेहबहादुर पहुँचे।

रेलवे डाक्टर को इस दुर्घटना की सूचना दी गई। वह प्रातः ६ बजे बाद आया और उसने निश्चेष्ट पड़े हुए व्यक्ति को अधिकृत रूप से मृत घोषित कर दिया, किन्तु उनकी मीमो नं. OP/T-73 पर समय ५.५५ लिखा था। (किसी ने काट कर उस पर ३.५५ A.M लिख दिया है।) फोटोग्राफर यद्यपि ५.५२ (A.M) पहुँच गया था, किन्तु फलेश लाइट के अभाव में सूर्योदय होने पर लगभग ७.३० बजे शव का फोटो-चित्र लिया गया। उस समय वह मनुष्य पीठ के बल सीधा लेटा था, पैर उसके पश्चिम की ओर थे। कमर से मुँह तक का भाग दुशाले से ढका हुआ था। घड़ी बंधा दायां हाथ दुशाले के ऊपर से सीने पर रखा था। दायां हाथ मुड़कर सिर की ओर चला गया था। उसकी मुट्ठी में पांच रुपये का एक नोट था।

मुँह का साफ फोटो लेने के लिए सिर के नीचे एक ईंट रख दी गई। फोटो लेने के बाद शव की तलाशी ली गई। उसके पास प्रथम श्रेणी का टिकट नं० ०४३४८ तथा रिसर्वेशन सिलिप नं० ४७५०६ प्राप्त हुए। उसके हाथ पर बन्धी हुई घड़ी पर 'नाना देशमुख' नाम अंकित था। उसकी जेब से २६ रुपए भी प्राप्त हुए।

इस सब प्राप्त सामग्री के आधार पर जब पुलिस उस अज्ञात व्यक्ति का पता न लगा सकी तो उसे 'अज्ञात' व्यक्ति घोषित कर पोस्ट-मार्टम के लिए भेजने की व्यवस्था की जाने लगी। नागरिक सुरक्षा के प्रहरी (पुलिस) ६ घंटे के पश्चात् शव को प्लेटफार्म पर ले आये और उसी की धोती से जो वह पहने था, उसे ढक दिया गया।

मामूली-सी दुर्घटना होने पर लोग इकट्ठे हो जाते हैं तो एक व्यक्ति का शव आने पर स्टेशन पर थोड़ी बहुत हलचल मच जाना स्वाभाविक था। उस हलचल में स्थानीय रेलवे के कर्मचारी श्री वनमाली भट्टाचार्य ने, जिसने दीनदयालजी को देखा हुआ था, उस 'प्रथम श्रेणी में सफर करने वाले', 'नानादेशमुख की घड़ी वाले,' पुलिस के शब्दों में 'अज्ञात व्यक्ति' को पहचानकर बता दिया—'ये तो जनसंघ के प्रधान पं दीनदयाल उपाध्याय हैं।'

नागरिक सुरक्षा के प्रहरी देश के इस प्रमुख, प्रसिद्ध एवं महान् व्यक्ति को पहचानने पर भी 'ये दीनदयाल उपाध्याय हैं', मानने-पहचानने से इन्कार कर दें, तो इसे देश का दुर्भाग्य ही कहना चाहिए। वे उसको 'अज्ञात' ही रखना चाहते होंगे।

वह कार्यकर्ता भी कर्त्तव्य-परायण नागरिक होगा। उसने मुगलसराय के जनसंघ अधिकारियों को इस दुर्घटना की सूचना दी। पलक झपकते जनसंघ के अनेक कार्यकर्ता स्टेशन पहुँच गए। उधर, पुलिस ने लखनऊ से टिकट नम्बर के आधार पर फोन पर 'दीनदयाल उपाध्याय' नाम की पुष्टि पहले ही कर ली।

और वह 'अज्ञात व्यक्ति' पुलिस को 'पं. दीनदयाल उपाध्याय' विवशता-वश मानना पड़ा।

× × ×

संसद् का बजट-सत्र आरम्भ होने के कारण ११ फरवरी १९६८ को भारतीय जनसंघ संसदीय दल की बैठक नई दिल्ली में होने वाली थी। दूसरी ओर पटना में बिहार-प्रदेश भारतीय जनसंघ की कार्य-कारिणी की मीटिंग होने वाली थी।

१० फरवरी को प्रातः ८ बजे बिहार-प्रदेश जनसंघ संगठन-मंत्री श्री अश्विनीकुमार का फोन पं० दीनदयाल जी के पास लखनऊ आया। अश्विनी जी ने उनसे पटना मीटिंग में सम्मिलित होने का आग्रह किया था। दीनदयाल जी ने उन्हें एक शर्त पर स्वीकृति प्रदान कर दी कि महामंत्री श्री सुन्दरसिंह भंडारी ने नई दिल्ली में संसदीय दल की मीटिंग में भाग लेने का आग्रह न किया तो वे अवश्य आएंगे।

लखनऊ प्रवास में दीनदयाल जी श्रीमती लता खन्ना के घर ठहरे हुए थे। श्रीमती लता खन्ना उनकी धर्म बहिन हैं।

अन्ततोगत्वा पठानकोट-स्यालदह एक्सप्रेस से पटना के लिए प्रथम श्रेणी की सीट बुक करवा ली गई। यह गाड़ी ७ बजे सायं लखनऊ से चलती है।

दीनदयाल जी के पास एक सूटकेट, बिस्तरा और पुस्तकों का झोला तथा टिफन था। वे अपनी सामान्य धोती पहने थे। उन्होंने शरीर पर एक बिना बाजू, जेब वाला, घरेलू खद्दर का बनियान, उसके ऊपर शफ्तालू रंग का बिना बाजू घरेलू स्वेटर, उसके ऊपर फैक्ट्री निर्मित पूरे बाजू का स्वेटर, उसके ऊपर गर्दन तक का हलका पीला स्वेटर पहना था। इन सबके ऊपर गहरे रंग पर पश्मीना कुर्ता था। फिर एक नई भूरे रंग की चैक डिजाइन की ऊनी जॉकिट पहने थे। कंधे पर ऊनी शाल था। कहते हैं, पंडित जी को सर्दी बहुत लगती थी। अतः इतने वस्त्र पहनना स्वाभाविक ही था।

श्री रामप्रकाश गुप्त (उत्तर-प्रदेश के तत्कालीन उपमुख्यमंत्री) तथा श्री पीताम्बरदास (सदस्य उत्तर-प्रदेश विधान परिषद्, अब संसद सदस्य) पंडित दीनदयाल जी को स्टेशन पर विदा करने वालों में प्रमुख थे।

इस एक्सप्रेस की विशिष्ट बोगी का अर्ध भाग तृतीय श्रेणी का था और शेष आधा प्रथम श्रेणी का था। प्रथम श्रेणी का भाग कौरिडोर रूप का था, जिसमें 'ए', 'बी' और 'सी' तीन कम्पार्टमेण्ट थे। 'ए' कम्पार्टमेण्ट में ४, 'बी' में २ तथा 'सी' में ४ सीटें थीं। प० दीनदयाल जी का टिकट 'ए' कम्पार्टमेण्ट के लिए सुरक्षित किया गया था। इसी डिब्बे में दूसरा टिकट श्री एम. पी. सिंह का था, जो भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण के असिस्टेन्ट डायरेक्टर थे और पटना के समीप 'रखा की खानों' में तीन मास के प्रशिक्षण पर जा रहे थे।

कम्पार्टमेंट 'बी' उत्तर-प्रदेशीय विधान-परिषद् के कांग्रेसी सदस्य श्री गौरीशंकर राय के लिए सुरक्षित था, जो वाराणसी जा रहे थे। कम्पार्टमेंट 'सी' में 'मेजर एस. एल. शर्मा' थे, जो वाराणसी जा रहे थे इनका टिकट नं० ०६१७१ था।

सुविधा की दृष्टि से श्री राय से प्रार्थना करने पर दीनदयाल जी ने सीटें परस्पर परिवर्तित कर लीं।

× × ×

लखनऊ से चलकर गाड़ी बाराबंकी, फैजाबाद, अकबरपुर, शाहगंज,

जौनपुर, वाराणसी ठहरती है और इसके पश्चात् मुगलसराय जंकशन रुकती है।

जौनपुर स्टेशन पर राजा जौनपुर के महाराजा के सेवक श्री कन्हैया जी १२ बजे के लगभग दीनदयाल जी से मिलने आए। कन्हैया जी ने आरक्षण सिलिप पर पंडित जी का नाम पढ़कर खिड़की द्वार खटखटाया। पंडित जी तत्काल नहीं उठे। कन्हैया ने 'attendant' करके आवाज लगाई, लेकिन द्वार खोलने कोई अनुचर नहीं आया। इसी बीच पंडित जी उठ गए और गाड़ी से नीचे आए। कन्हैया जी ने महाराजा का एक पत्र दीनदयाल जी को दिया। महाराजा जौनपुर दीनदयाल जी के मित्र हैं।

पंडित जी का चश्मा क्योंकि अन्दर था, अतः वे पत्र पढ़ने के लिए कन्हैया जी को भी अपने साथ बोगी में ले आए। पंडित जी ने पत्र पढ़ा और शीघ्र ही उत्तर देने की बात कही। गाड़ी चलने वाली थी, अतः पंडित जी कन्हैया को बोगी के द्वार तक छोड़ने आए। गाड़ी १२-१२ पर जौनपुर से चली।

स्यालदह-पठानकोट पटना नहीं जाती। अतः मुगलसराय स्टेशन पर जब यह गाड़ी २.१५ बजे प्लेटफोर्म नं० १ पर पहुँची, तो यह बोगी इस गाड़ी से काट कर, शंटिग करके दिल्ली-हावड़ा में जोड़ दी गई जो २.५० बजे रवाना हुई।

बिहार जनसंघ के श्री कैलाशपति मिश्र पंडित जी के स्वागतार्थ प्रातः ६ बजे स्टेशन पहुँचे। उन्होंने लखनऊ बोगी देखी। वह खाली थी। उन्होंने सोचा सम्भवतः पंडित जी आए ही न हों और भंडारी जी के आग्रह करने पर दिल्ली चले गए हों।

प्रातः ६-३० बजे 'मुकामा' स्टेशन पर किसी ने 'बी' कम्पार्टमेंट में सीट के नीचे एक अटैची देखी। उसने वह रेलवे अधिकारियों को सौंप दी। यह अटैची पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की थी।

इस प्रकार पण्डित दीनदयाल उपाध्याय पटना के लिए गाड़ी में बैठे थे,

किन्तु किसी कुचक्र ने उन्हें परलोक पहुँचा दिया ।

× × ×

मेजर शर्मा घनी गलमोच्छा वाला व्यक्ति था, जिसने खाकी वस्त्र पहने थे, किंतु न तो उसने टोपी पहनी हुई थी, न ही कोई सैनिक पद-चिन्ह लगाया हुआ था । उसने कन्डेक्टरगार्ड को कहा कि वह उसे बनारस स्टेशन पर जगा दे । बनारस स्टेशन पर कंडेक्टरगार्ड श्री कमल जब मेजर शर्मा को जगाने आया तो दीनदयाल जी के कूपे के द्वार-मार्ग पर ही एक व्यक्ति ने अंग्रेजी में कह दिया कि—

'There ls none in 'c' Compartment. Major Sharma had already got down at Shahganj.' (सी कूप में कोई नहीं है । मेजर शर्मा शाहगंज में पहले ही उतर चुके हैं ।) श्री एम. पी. सिंह ने भी उस व्यक्ति को देखा जो गार्ड से कह रहा था कि मेजर शर्मा चले गए । वह व्यक्ति दीन-दयाल जी का शाल ओढे और उस शाल से अपना आधा मुंह ढके था । क्लीन शेव भी था और पाजामा पहने था । गार्ड और श्री सिंह ने उन्हें श्री दीन-दयाल समझा, परन्तु वे दीनदयाल जी न थे । कारण, दीनदयाल जी सदा धोती पहनते थे । दूसरे, उनके मुंछें थीं । तीसरे, वे प्रायः अंग्रेजी नहीं बोलते थे ।

× × ×

श्री एम. पी. सिंह वाराणसी से मुगलसराय तक जागते रहे और सिगरेट पीते रहे । मुगलसराय स्टेशन पर वे बाथरूम जाना चाहते थे । बाथरूम का अन्दर से ताला लगा होने के कारण उन्होंने समझा कि सहयात्री दीनदयाल जी अन्दर हैं । वह बोगी के दूसरे बाथरूम में चले गए । बाहर आने पर उन्होंने देखा कि दीनदयाल जी का बिस्तर खाली है ।

× × ×

मुगलसराय स्टेशन पर एक २२ वर्षीय ललता नामक लड़का दीनदयाल

जी के बिस्तर को जल्दी-जल्दी लपेट रहा था। श्री एम.पी. सिंह ने जब इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि मेरे पिताजी यहीं उतर गए हैं और वह उनका सामान ले जा रहा है। शीघ्रता में प्लेटफॉर्म पर बिस्तर में से एक फाइल निकल गई। ललता ने उसे उठाया और बिना बांधे बिस्तर में रख लिया। ललता को इस बिस्तरे की सूचना 'राम अवध' ने दी थी जो पुलिस संरक्षण में है।

उसने यह बिस्तरा ४० रुपए में अन्य व्यक्ति जिसका नाम भी ललता है, को बेच दिया। पंडित जी की जाकेट और कुर्त्ता 'भरत डोम' नामक रेलवे-भंगी से प्राप्त हुआ है। वह भी पुलिस संरक्षण में हैं।

× × ×

मेजर शर्मा, जो अब तक रहस्यपूर्ण व्यक्ति बना हुआ था, उसकी कहानी भी पता लग गई है। इसका पूरा नाम मेजर सुरेन्द्र मोहन शर्मा है। भारतीय सेना में यह वस्तुत: मेजर है। यह गोमोह होते हुए लखनऊ से रांची जा रहा था। उसके कथनानुसार उसने दो स्थानों का आरक्षण प्राप्त किया था। प्रथम, उस बोगी में जो सीधी गोमोह जाती है। द्वितीय, दीनदयाल जी वाली बोगी में, किन्तु वह दीनदयाल जी वाली बोगी में गया ही नहीं।

पठानकोट एक्सप्रेस की वह मनहूस बोगी नं० १९३५, जिसमें दीनदयाल जी अन्तिम यात्रा कर रहे थे, ११ फरवरी को ६.१५ बजे सायं हावड़ा पहुँची और ७ बजे सील कर दी गई। यहाँ दो विशेषज्ञों ने इसकी जाँच की।

१३.२.६८ को वह बोगी ८ डाउन तूफान एक्सप्रेस के साथ जुड़कर कलकत्ता से रेल सुरक्षा दल के इन्सपेक्टर श्री सुबोध मुखर्जी के संरक्षण में मुगलसराय पहुँची। १४.२.६८ को प्रात: १० बजे के लगभग इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस की उपस्थिति में उसकी सील तोड़ी गई। कलकत्ता के तीन छाप विशेषज्ञों और दिल्ली के अपराध अनुसंधान के दो विशेषज्ञों ने बोगी में सर्वप्रथम प्रवेश किया और बड़ी बारीकी से जांच पड़ताल की।

हत्या करने वाले इतने चतुर और सिद्धहस्त थे कि उन्होंने हत्या के उपरांत पकड़े जाने में सहायक बोगी के प्रत्येक चिन्ह को मिटा दिया था। इतना ही नहीं पटना में भोला रावत नामक भंगी ने यह बताया कि किसी सभ्य दिखने वाले व्यक्ति ने मुझसे इस बोगी को साफ करने के लिए कहा। जब बोगी साफ कर दी गई, तब भी वह व्यक्ति उस बोगी में चढ़ा नहीं।

दूसरी ओर, हावड़ा स्टेशन पर जब यह बोगी पहुँची तो बाथरूम में चाय पीने वाला मिट्टी का एक कुल्हड़ मिला जिसमें अब भी फिनाइल रखी थी। लगता है हत्यारों ने फिनाइल से बाथरूम को साफ करवा दिया था। साधारणतः रेलवे भंगी फिनाइल के लिए कुल्हड़ नहीं, टीन का डिब्बा प्रयोग करते हैं।

× × ×

मुगलसराय स्टेशन के एक पोर्टर के कथनानुसार इस बोगी को आधा घंटा मुगलसराय यार्ड में खड़े रखकर विलम्ब करने के लिए किसी श्रेष्ठ वस्त्र धारी व्यक्ति ने ४०० रुपये देने की बात कही थी। किंतु 'तूफान' स्वतः आधा घंटा लेट आया था, अतः जानबूझ कर रोकने का कोई कारण न था।

× × ×

दीनदयाल जी के सिर के पीछे, सिर और गर्दन के बीच जरा दायीं ओर हटकर चोट की गई है। परिणामतः वह स्थान कुचल गया है। उनका एक पैर और एक हाथ बहुत बुरी तरह से तोड़े हुए हैं। उनकी छाती की पसलियां भी तोड़ी हुई हैं।

पुस्तक लिखने तक इस नृशंस हत्या के सम्बन्ध में जो भी विवरण प्राप्त हो सके हैं, वह सम्मिलित कर लिए गए हैं। हत्या की जांच प्रायः समाप्त हो चुकी है। रामअवध और भरत डोम ने थैला चोरी करते समय पकड़े जाने के कारण दीनदयाल जी की हत्या कर दी है, इस कहानी पर गुप्तचर विभाग विश्वास कर रहा है। और शीघ्र ही इन दोनों व्यक्तियों पर हत्या का मुकदमा चलेगा।

३

शव दिल्ली पहुँचा

राष्ट्र-देव के मन्दिर में जीवन का क्षण-क्षण अर्पित करने वाले महान् देशभक्त का काया-कुसुम ही राष्ट्र-देव को अर्पित हो गया। आज वे नहीं, उनका पार्थिव शरीर है। उनकी वाणी मूक हो गई। उनका शरीर वाराणसी के पोस्टमार्टम कक्ष में रखा हुआ है।

पोस्टमार्टम-स्थल पर तीन ओर से संघ-जनसंघ अधिकारियों को तार द्वारा बुलाया गया है। परम पूजनीय गुरु जी को प्रयाग में सूचित किया गया। उत्तर-प्रदेश के तत्कालीन उपमुख्यमंत्री श्री रामप्रकाश गुप्त को लखनऊ सूचित किया गया है, किन्तु पहुँचा अभी कोई नहीं।

इधर, दिल्ली में श्री अटलबिहारी वाजपेयी की कोठी पर लगभग १० बजे

लखनऊ से फोन आया। अटल जी उस समय १, फिरोजशाह रोड पर जनसंघ संसदीय दल की कार्यकारिणी की बैठक में भाग लेने गए हुए थे। फोन उनके रसोइया बिरजू ने सुना। फोन था पं० दीनदयाल जी की हत्या की सूचना देने के लिए।

बिरजू ने तुरन्त फोन से अटल जी को सूचना दी। कार्यकारिणी की बैठक रुक गई। बैठक में उपस्थित सभी लोग स्तब्ध रह गए। अटल जी ने सर्वप्रथम लखनऊ फोन करके इस दुःखद समाचार की श्री रामप्रकाश गुप्त से पुष्टि कराई। फिर अटल जी और बलराज मधोक रेलवे के राज्य-मन्त्री श्री परिमल घोष की कोठी पर गए और मुगलसराय स्टेशन पर घटी हृदय-विदारक घटना का विवरण चाहा। श्री घोष ने मुगलसराय स्टेशन फोन किया और सम्पूर्ण विवरण इन दोनों नेताओं को बताया।

इधर अटल जी ने बनारस के जिलाधीश से फोन पर बातचीत की। इस प्रकार सब विवरण प्राप्त कर इन नेताओं ने दो निर्णय किए —(१) शीघ्रातिशीघ्र वाराणसी पहुँचा जाए; (२) उनका दाह-संस्कार दिल्ली में किया जाए।

वाराणसी जाने और वहां से शव लाने के लिए विशेष विमान का प्रबन्ध करने का यत्न किया जाने लगा। श्री कंवरलाल गुप्त और अटल जी ने गृहमंत्री श्री चह्वाण से इस सम्बन्ध में बातचीत की और उधर बलराज मधोक उड्डयन मंत्री श्री करणसिंह से बातचीत करने दौड़े।

भाग-दौड़ सफल हुई। कुछ ही मिनटों में गृहमंत्री श्री चह्वाण के निजी सचिव ने फोन से भारतीय वायुसेना के विमान का प्रबन्ध होने की सूचना दी।

वायुयान का प्रबन्ध हो चुका था। फलतः परस्पर विचार कर श्री अटलबिहारी वाजपेयी, श्री बलराज मधोक और श्री जगदीशप्रसाद माथुर पालम हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गए। पालम हवाई अड्डे से वे मिलिट्री कोच के द्वारा 'मिलिटरी टैकनिकल एरिया' में ९-५ बजे पहुँचे। हवाई जहाज पहले

ही तैयार था। तीनों नेताओं के बैठते ही वह २ बजकर १० मिनट पर वाराणसी के लिए उड़ चला।

ये तीनों नेता ४ बजकर २० मिनट पर वाराणसी हवाई अड्डे पर उतरे। हवाई अड्डे पर जनसंघ के स्थानीय कार्यकर्ता तथा पुलिस-अधीक्षक उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इनके पहुँचते ही एक कार इन्हें लेकर पोस्टमार्टम स्थल को रवाना हो गई।

अतिरिक्त जिलाधीश श्री चित्रांगणसिंह जी पहले ही इन नेताओं की तलाश में उधर आ रहे थे। मार्ग में दोनों कारों का मिलन हुआ। श्री चित्रांगणसिंह जी ने इशारे से इनकी कार रुकवा ली। अब इन्हें ज्ञात हुआ कि पं० दीनदयाल जी का पार्थिव शरीर पोस्टमार्टम स्थल पर पहुँच चुका है। मुगलसराय से उनका शव पुलिस एम्बुलेंस में एक बैंच पर लिटा कर लाया गया था। बड़े दुःख का विषय है कि अखिल भारतीय नेता के लिए स्ट्रेचर तक का प्रयोग नहीं किया गया।

पाँच सवा-पाँच बजे के लगभग अतिरिक्त जिलाधीश सहित श्री अटलबिहारी वाजपेयी, श्री बलराज मधोक और श्री जगदीशप्रसाद माथुर पोस्टमार्टम स्थल पर पहुँचे।

श्री भाऊराव देवरस, जो कि मुगलसराय पहुँच चुके थे, पुलिस गाड़ी जिसमें पंडित जी का पार्थिव शरीर रखा था, के साथ-साथ वाराणसी पहुँचे।

इधर ५.१५ के लगभग लखनऊ से श्री रामप्रकाश गुप्त (उत्तर प्रदेश के तत्कालीन उपमुख्य मंत्री) और श्री गंगाभक्तसिंह (तत्कालीन सहकारी मंत्री) विशेष विमान से वाराणसी हवाई अड्डे पर उतरे और सायं ५.३० बजे पोस्टमार्टम स्थल पहुँच गए।

पोस्टमार्टम करने से पूर्व 'गुरु जी' का आना आवश्यक था। अतः प्रतीक्षा की गई। वे भी ढाई घण्टे की यात्रा के बाद कार द्वारा पोस्टमार्टम स्थल पर पहुँच गए। उनके साथ सर्वश्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, प्रो० राजेन्द्र-

सिंह (प्रांत प्रचारक उत्तर प्रदेश) माधव देशमुख तथा डॉ० आबा थट्टे। (गुरु जी के निजी सचिव) भी आए थे।

अब तक लखनऊ से श्री टम्बरेश्वरप्रसाद (तत्कालीन विद्युत् एवम् कृषि मन्त्री, उत्तर प्रदेश), श्रीमती लता खन्ना (दीनदयाल जी की धर्म बहन—दीनदयाल जी लखनऊ में इन्हीं के घर ठहरते थे—नगर निगम की सदस्या) तथा अन्य नेतागण भी पहुँच गए।

उधर पटना से प्रमुख अधिकारीगण भी कार द्वारा वाराणसी—पोस्ट-मार्टम स्थल पर पहुँच गए। इनमें सर्वश्री ठाकुरप्रसाद एडवोकेट, रामदेव-महता (भू. पू. सहकारिता मन्त्री, बिहार) विजयकुमार मित्र (भू. पू. कृषि एवं लघु मध्यम सिंचाई मन्त्री, बिहार) कैलाश मिश्र (बिहार प्रदेश जनसंघ के मन्त्री) तथा अश्विनीकुमार (बिहार प्रदेश के संगठन मन्त्री) प्रमुख थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सभी प्रमुख कार्यकर्त्ता जौनपुर शिविर में गये हुए थे, अतः बहु-संख्या में वे उस समय उपस्थित न हो सके।

गुरु जी के आते ही हलचल मच गई। उपस्थित जनता में सिहरन सी हुई। लोग रोने लगे, सुबकियां भरने लगे।

गुरु जी, प्रभुदत्त ब्रह्मचारी सहित पोस्टमार्टम कक्ष में गये। उनके पीछे अन्य अधिकारीगण एवं मन्त्री भी पहुँच गये। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी शव के पास पहुँच कर मन्त्र उच्चारण करने लगे। दीनदयाल जी का पार्थिव शरीर देखते ही गुरु जी एक-दम स्तब्ध रह गये। उनके मुँह से केवल इतना ही निकला, 'अरे इसे क्या हो गया ?'

एक क्षण के लिये हिमालय भी डोल गया। गुरु जी की आंख छल-छला आईं। वे बार-बार नाक से बहते हुए पानी को पोंछने लगे। दो-तीन बार उन्होंने उक्त शब्दों को दोहराया। मानों उनका मस्तिष्क अपने अन्यतम शिष्य के शव को

देखकर कुछ सोच नहीं पा रहा था। इतना महान् आघात गुरु जी कैसे सह पाए, यह जगन्नियन्ता ही जानता होगा।

थोड़ी देर बाद गुरु जी बाहर आ गये और वाराणसी के संघचालक डॉ० बनर्जी के साथ सायंकालीन 'सन्ध्या' के लिये उनके घर चले गये।

शव-परीक्षण प्रारम्भ हुआ। जनता शांत भाव से आहों और सिसकियों के बीच अपने प्रिय नेता के शव-परीक्षण की समाप्ति की बाट जोहने लगी। प्रतीक्षा की घड़ियां भी लम्बी होती हैं। फलतः यह समय काटे से नहीं कटता था। यह दुर्घटना है या हत्या है, इस विषय पर जनता में अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार बातचीत चल रही थी।

शव-परीक्षण प्रारम्भ होने पर सर्वश्री बलराज मधोक और रामप्रकाश गुप्त पुलिस को लेकर दुर्घटना-स्थल देखने चले गये।

एक घण्टे से अधिक समय शव-परीक्षण में लगा। शव-परीक्षण के पश्चात् शव जनसंघ के नेताओं को सौंपा गया।

शव एक स्ट्रेचर पर लिटाया हुआ था। इस समय दीनदयाल जी की मुखाकृति सामान्य थी, किन्तु एक आंख पर कुछ सूजन थी।

जनसंघ-नेताओं ने पोस्टमार्टम की रिपोर्ट प्राप्त करनी चाही। डाक्टरों ने पहले तो मना किया, फिर 'पुलिस को दे सकते हैं' का नियम बताया। अन्ततोगत्वा अगले दिन श्री रामप्रकाश जी गुप्त (तत्कालीन उपमुख्यमन्त्री उत्तर-प्रदेश) को रिपोर्ट दे दी जाएगी, यह आश्वासन प्राप्त कर अधिकारीगण को संतुष्टि हुई।

शव बाहर आते ही जनता अपने प्रिय नेता के दर्शनार्थ और माल्यार्पण करने के लिए टूट पड़ी। पुष्पों की वर्षा आरम्भ हो गई। रोने, सिसकने, आहें भरने और सुबकियां लेने की ध्वनि उस गम्भीर वातावरण को और अधिक दुःखग्रस्त बना रही थी।

इसी बीच शव को हवाई अड्डे तक पहुँचाने के लिए ट्रक भी आ गया था।

इधर, श्री गंगाभक्त जी, श्री अटल जी एवं श्री जगदीश माथुर कार से हवाई अड्डे के लिए चल दिये। हवाई अड्डा पोस्टमार्टम स्थल से १३ मील तथा शहर से १६-१७ मील दूर है। इन्होंने आकर वायुयान में शव भली-भांति रखने एवम् अधिकतम सवारी ले जा सकने के बारे में पूछताछ की।

हवाई जहाज में १८ सीटें थी। ९ एक ओर, ९ दूसरी ओर। बीच में पर्याप्त स्थान खाली था। अत: दिल्ली अधिक लोग साथ जा सकेंगे, ऐसी जानकारी प्राप्त हो गई।

उधर अपार जन-समुदाय के मध्य स्ट्रेचर को ट्रक में रख कर हवाई अड्डे लाया गया।

ट्रक पर से स्ट्रेचर सावधानी से उतार कर वायुयान में रख दिया गया। स्ट्रेचर वायुयान में इस प्रकार रखा था कि दीनदयाल जी का सिर पाइलेट की ओर तथा पैर वायुयान की दुम की ओर थे। दिल्ली चलने वालों के नाम का निर्णय ले लिया गया। इधर सर्वश्री बलराज जी और रामप्रकाश गुप्त, दोनों दुर्घटना-स्थल देखकर हवाई अड्डे पर पहुँच गए। वायुयान से १२ अधिकारी दिल्ली आने वाले थे। वे सब हवाई अड्डे पर उपस्थित थे, किंतु हवाई जहाज को चलने की आज्ञा न दी जा सकी—कारण, गुरु जी को अभी आना था।

१५-२० मिनट पश्चात् गुरु जी तथा भाउराव देवरस कार में पहुँच गए। उनके पहुँचते ही उपस्थित जनसमुदाय और संघ एवं जनसंघ के कार्यकर्त्ता आमने-सामने मुँह करके दो पंक्तियों में खड़े हो गए। गुरु जी जनता के मध्य से गुजर कर वायुयान की सीढ़ियों पर चढ़ गए।

अपने योग्यतम स्वयंसेवक को अन्तिम श्रद्धांजलि देने के लिए गुरु जी ने अपने दोनों हाथ दीनदयाल जी के मुँह के ऊपर से लेकर छाती तक लाते हुए अपने नेत्रों को लगाये। इसी प्रकार की प्रक्रिया उन्होंने तीन बार की। श्री भाउ-

राव देवरस ने जब शव-दर्शन किए तो वे अत्यन्त विह्वल हो रो पड़े, गिर पड़े। गुरु जी ने जब यह देखा तो कहा, 'इन्हें सम्भालो कोई।'

और गुरुजी इस प्रकार अन्तिम श्रद्धांजलि देकर वायुयान से नीचे उतर आये। पुत्र की मृत्यु पर पिता को जो शोक होता है, वही गुरुजी के अन्तःकरण में छाया हुआ है, किन्तु श्री गुरु जी न केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक होने के नाते सामाजिक एवं राष्ट्रीय नेता ही हैं, अपितु वे आध्यात्मिक महात्मा भी हैं, योगी संन्यासी भी हैं, इसीलिए इस महान् आघात को नीलकंठ की भाँति पी गए। केवल इतना ही कह पाए, 'हे प्रभु'!

रात्रि ९ बजकर १० मिनिट पर भारतीय वायुसेना का हवाई जहाज पं० दीनदयाल जी के शव को लेकर बनारस से दिल्ली के लिए रवाना हुआ। हवाई जहाज में सर्वश्री अटल जी, बलराज जी एवं जगदीश माथुर के अतिरिक्त निम्नलिखित नेता दिल्ली आ रहे थे—सर्वश्री रामप्रकाश गुप्त, गंगा भक्त सिंह, रमेशचन्द्र शर्मा एडवोकेट (लखनऊ), विजयकुमार मित्र (बिहार), कैलाशपति मिश्र (बिहार) अश्विनीकुमार (बिहार) माधवबाबू त्रिपाठी, टम्बरेश्वरप्रसाद तथा श्रीमती लता खन्ना (लखनऊ)।

× × ×

नई दिल्ली में डॉ. राजेन्द्रप्रसाद मार्ग पर स्थित ३० नम्बर कोठी संसद् सदस्य होने के नाते जनसंघ के प्रिय नेता और वर्तमान अध्यक्ष श्री अटलबिहारी वाजपेयी का निवास स्थान है। यहीं पर जनसंघ के केन्द्रीय-कार्यालय-प्रमुख श्री जगदीशप्रसाद माथुर रहते हैं। पण्डित दीनदयाल जी भी अपने दिल्ली निवास में इसी कोठी में ठहरते थे। अतः वाराणसी से शव को दिल्ली लाकर इसी कोठी में दर्शनार्थ रखने का निश्चय हुआ।

फलतः १२.२.६८ रविवार को रात्रि ८.०० बजे तक उक्त कोठी के भोजन कक्ष (डाइनिगरूम) में शव को रखने की पूरी व्यवस्था कर दी गई थी। एक

बड़े तख्त पर भगवा वस्त्रों के मध्य बिस्तर लगाया गया था। उसे गुलाब और गैंदे के पुष्पों से सजाया गया था। साथ ही आंगन में बर्फ की चार सिल्लियाँ रखी थीं। पुलिस-अधिकारी एवं एक मजिस्ट्रेट पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे, जो यातायात एवं शव-दर्शन के पश्चात् जनता के बाहर जाने की व्यवस्था कर रहे थे। जनता के बाहर जाने के लिए कोठी के पार्श्व भाग में मार्ग बनाया जा रहा था। बल्ली और रस्से आ चुके थे।

सूचना मिली कि हवाई जहाज रात्रि ८.३० बजे से पूर्व दिल्ली पहुँच रहा है। अतः सभी वरिष्ठ अधिकारीगण, जिनमें संसद् सदस्य श्री श्रीचन्द गोयल (चण्डीगढ़) श्री पीताम्बरदास जी, श्री यज्ञदत्त शर्मा, श्री केदारनाथ साहनी आदि थे, हवाई अड्डा पालम चले गये।

दिल्ली, नई दिल्ली की जनता एवं जनसंघ के कार्यकर्ता सीधे पालम हवाई अड्डे पर पहुँच रहे थे। जो लोग वहाँ नहीं पहुँच सके, वे अत्यन्त शोकातुर हृदय लिए, चेहरे पर वेदना के स्पष्ट चिह्न लिए हुए अटल जी की कोठी पर आ रहे थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ का कार्यकर्त्ता शिविर कुरुक्षेत्र में लगने के कारण प्रायः सभी कार्यकर्त्ता एवं अधिकारीगण वहाँ गए हुए थे।

पुलिस अपनी प्रारम्भिक व्यवस्था में संलग्न थी। सर्दी होने के कारण आए हुए स्वयंसेवकों और जनता के लिए कोठी के बाहर के कमरे खोल दिए गए थे। वे वहाँ बैठ गए थे। दूरभाष की दुर्दशा थी। वह एक मिनिट के लिए भी शांत न हो पाता था।

रात्रि के लगभग ११.१५ बजे विमान शव लेकर दिल्ली पहुँचा और ११.३० वह भूमि पर उतरा।

हवाई अड्डे पर हजारों नागरिक, सामाजिक कार्यकर्त्ता, नगर-निगम के सदस्य और महानगर परिषद् के पार्षद, संसद् सदस्य, कार्यकारी एवं मुख्यकार्यकारी पार्षद, नगर-निगम में जनसघ के नेता उपस्थित थे।

बम्बई से सर्वश्री नाना जी देशमुख, बच्छराज व्यास, रामभाऊ गोडबोले (महाराष्ट्र प्रदेश जनसंघ के संगठन मन्त्री) तथा उत्तमराव लक्ष्मण पाटिल (महाराष्ट्र प्रदेश जनसंघ के मन्त्री) हवाई अड्डे पर शव के स्वागत के लिए पहुँच चुके थे।

आंध्र से जनसंघी नेता श्री जुपुड़ी यज्ञनारायण जी भी हवाई अड्डे पर पहुँच चुके थे।

जनसंघ कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त विभिन्न राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। इनमें कांग्रेस संसदीय दल के सचिव श्री चन्द्रशेखर और श्री वेंकटासुब्रई भी उपस्थित थे।

वायुयान के ठहरते ही जनता ने 'अमर शहीद पं० दीनदयाल उपाध्याय : अमर रहें' के गगनभेदी नारों से वायुयान का स्वागत किया। दूसरी ओर अनेक नर-नारियों के रोने की आवाज तीव्र होती जा रही थी। सभी उपस्थित नर-नारियों की आँखों में आँसू छलछला आए थे और वे अपने रुमालों से उन्हें रोकने का असफल प्रयास कर रहे थे।

सर्वप्रथम मुख्यकार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मलहोत्रा, महानगर परिषद् के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण अडवानी, नगर-निगम के उपाध्यक्ष श्री बल-राज खन्ना दिवंगत नेता को पुष्पांजलि अर्पित करने के लिए विमान में गये।

थोड़ी ही देर में सर्वश्री अटलबिहारी वाजपेयी, बलराज मधोक, विजय कुमार मित्र (बिहार) और जगदीश माथुर अपने प्रिय साथी, नेता की अर्थी लिये हवाई जहाज से बाहर निकले। उनका बाहर निकलना था कि जनता में विद्युत् प्रवाह की भांति एक सिहरन सी हो उठी, रोने की आवाज तीव्रतर हो गई, उधर 'दीनदयाल उपाध्याय : अमर रहें' के नारे गगन में गूँजने लगे।

रेलिंग पर बहुत भीड़ थी। अर्थी रेलिंग की ओर लाई गई। जनता पुष्पवर्षा और माल्यार्पण करने लगी।

यहीं पर एम्बूलेंस गाड़ी खड़ी थी, जिसमें शव रखकर ३०, राजेन्द्र मार्ग ले जाना था। स्ट्रेचर को गाड़ी में रख दिया गया। गाड़ी में श्री बच्छराज

व्यास श्री जगदीश माथुर, नानासाहब देशमुख, दीनदयाल जी के ममेरे भाई श्री प्रभुदयाल शुक्ल और स्वामेश्वरनाथ जी बैठ गए। मार्गदर्शन के लिए श्री अटल जी ड्राइवर के समीप वाली सीट पर बैठ गए।

स्ट्रेचर को एम्बूलेन्स वैन में रख तो दिया, किन्तु एक कठिनाई उपस्थित हो गई। वैन छोटी थी और स्ट्रेचर बड़ा। इससे एक ओर तो द्वार बन्द नहीं हो सकता था, दूसरी ओर स्ट्रेचर को झटके लगने से शव को हानि पहुँचने की आशंका हो सकती थी। तीसरे, शरत्ऋतु की रात्रि में जबकि वायु भी सांय-सांय ध्वनि में अपनी पीड़ा व्यक्त कर रही थी, वैन-द्वार खुला छोड़ना सर्दी की चुनौती स्वीकार करना था। कोई चारा न देख श्री विजयकुमार मित्र, जो स्वस्थ शरीर में पहलवान लगते हैं, कोने की सीट पर आए और खिड़की का शीशा नीचे कर अपना मफलर उतार उसे खिड़की में से निकालकर स्ट्रेचर से घेरा देकर पकड़कर बैठ गए और सम्पूर्ण मार्ग वे इसी स्थिति में बैठे रहे।

शव-यात्रा का यह कारवाँ पालम हवाई अड्डे से चल पड़ा—३०, राजेन्द्र मार्ग की ओर। सबसे आगे मोटरसाइकिल और स्कूटर थे, उनके पीछे कारें थीं। तत्पश्चात् एम्बूलेंस कार थी।

रात्रि लगभग एक बजे पंडित दीनदयाल जी का पार्थिव शरीर अपने निवास-स्थल पर पहुँच गया। अटल जी अपने साथी, मित्र, नेता को घर वापिस तो ले आए, किन्तु उसमें आत्मा न थी, जीवन न था। अंग्रेजी की सूक्ति के अनुसार 'Home they brought the warrior dead.'

और शीघ्र ही इस युग की महान् विभूति; भारतीयता के ज्वलन्त प्रतीक; श्रम, सौजन्य और शालीनता के देवता एवं अजातशत्रु का पार्थिव शरीर बर्फ की सिल्लियों पर पहले से व्यवस्थित एवं सुसज्जित स्थान (डाइनिंग रूम) में दर्शनार्थ एवम् श्रद्धांजलि अर्पणार्थ रख दिया गया। श्रीमद्भगवत् गीता की एक प्रति उनके समीप रख दी गई। धूप और अगरबत्ती प्रज्वलित कर दी गईं। गीता का पाठ आरम्भ हो गया।

मेरे वन्धु दीनदयाल !

मेरे वन्धु दीनदयाल !
कई पन्ने लिखे
और फाड़ दिए
कहाँ को भेजूं
लिखूँ किस लिए ?
जगत में कोलाहल
भीतर है सन्नाटा
क्या कहूँ क्या लुटा
कितना बड़ा है घाटा—

सागर सा दुःख रे
छन्द बड़ा सीमित है
अब तो तुम्हारा वास
हमसे अपरिमित है
अँधियारे सी आँधी
मंडराती घटा ने
तुम्हें छीन लिया।
हमने भी क्या किया ?—

तुम इतने अकेले थे
अकेले ही चले गए ?
केवल कुछ श्लोक हो
युग को सुना गए—
जब कुटिल मौत
किसी रूप में आई
सच बोलो, कुछ पूछा
कुछ कह भी पाई
या कि यूँ ही,
मरोड़ दिया हाय !
तिनके सा तोड़ दिया—
मैंने भी मित्र अब
छन्द सब छोड़ दिया
जीवन ही मोड़ दिया
मुझे निष्ठा पर क्रोध है
स्रष्टा पर रोष है
कहीं नहीं तोष है—

अनुकृति को प्रतिकृति
प्रतिकृति को अपकृति
बहुत बहुत सुना है
बहुत बहुत सहा है
कैसे कहाँ रहा है
मेरा मैं क्या कहूँ ?
फिर भी यह मानता हूँ।
भाव लोक बिन्दु में
तुम्हीं अकेले नहीं—
एक युग था—एक गति थी
अब तो अगति है
मौन क्रम गति है।
बहुत बड़ी छाती पर
बहुत बड़ा घूँसा है
तेरी यह मृत्यु प्रिय
मूस नहीं मूसा है—
ऐसे आहत, हो गिरे
सूखे से पेड़ को
निर्मम प्रहारों से
झुका झुका दिया हो
फिर खींच लिया हो—
न तो वह चीखा
न शाखें चिल्लाईं
केवल कराहा
न कुछ कह पाया
जो कुछ था चाहा—

मुझे मनस्ताप है
मैंने यह कहा नहीं
चरण चरण बढ़ें साथ
छन्द छन्द झुके माथ
मेरी अनुभूति और
तेरा प्रतिबिम्ब साथ।

मैंने अकिंचन
प्रयाण अश्रु सिंचन
दूर बड़ी भीड़ से
जो कुछ किया है
वृत्त ही लिया है
मेरा जो छन्द है
तुझे दे दिया है !

श्री सोहनलाल श्रीवास्तव

★

४

अन्तिम दर्शन

दिनाङ्क १२ फरवरी, १९६८

३०, राजेन्द्रप्रसाद मार्ग भवन का महत्त्व आज किसी तीर्थ स्थान से कम न था।

अरुणोदय हो रहा था। विश्व के जीवन में स्पन्दन होने लगा था, किन्तु इस भवन में एक महामानव शान्त भाव से चिरनिद्रा में विश्राम कर रहा था। गीता का पाठ हो रहा था। भगवान् भास्कर भी उस तपस्वी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए रक्त-रश्मि-माला लिए क्षितिज से ऊपर उठ रहे थे। लीजिए, भारत के उपप्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई अपनी श्रद्धांजलि देने आ पहुँचे। उनके जाने के पश्चात् भारत की महामात्य श्रीमती इन्दिरा गाँधी दिवंगत नेता के दर्शनार्थ और श्रद्धांजलि अर्पणार्थ पहुंच गईं। थोड़ी देर में राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन पंडित दीनदयाल जी को श्रद्धांजलि देने पहुँच गए। शान्त और गम्भीर वातावरण और भी शोक निमग्न हो उठा, मानो शोक स्वयं मूर्तिमान होकर प्रकट हुआ हो। तत्पश्चात् तो केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल एवं अन्य उच्च नेताओं में ज्योति-पुरुष के दर्शन कर, माल्यार्पण कर एवं 'रीथ' रखकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने की मानो होड़ सी लग गई। इनमें प्रमुख नाम है—लोकसभा के अध्यक्ष श्री नीलम संजीव रेड्डी, उपराष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि, श्रीमती वायलट अलवा, श्री सत्यनारायणसिंह,

श्री फखरुद्दीन अली अहमद, आचार्य जे. बी. कृपलानी, श्रीमती सुचेता कृपलानी, हुमायूं कबीर, काश्मीर के मुख्यमन्त्री बख्शी गुलाममुहम्मद आदि।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के देहावसान का समाचार आकाशवाणी द्वारा समस्त भारत में फैल चुका था। भारत के कोने-कोने से लोग अपने नेता के अन्तिम शंनों के लिए उन्मत्त हो शीघ्रगामी साधनों का प्रयोग कर चले आ रहे थे। आखिर क्यों न आते? उपाध्याय जी एक शहर के न थे, एक प्रान्त के न थे, वे तो समस्त भारत के थे।

स्वामी शंकराचार्य की भांति उन्होंने भारत का भ्रमण किया था। उनके सम्मुख हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक, आसिन्धुसिन्धु पर्यन्त भारत का चित्र रहता था। उनकी दक्षिण यात्रा ने भगवान् राम की दक्षिण-यात्रा की भान्ति उत्तर-दक्षिण का जो समन्वय किया, वह जन-साधारण के आचार-विचार और भावना में अटूट हो गया।

रविवार ११ फरवरी की दोपहर से ही दिल्ली पर शोक और उदासी के बादल छाये हुए थे। सोमवार प्रातः भारी मन से लोग उठे। सभी को नित्यकर्म से निवृत्त हो आज के पवित्रतम तीर्थस्थान पर जाने की चिन्ता थी। वह श्रद्धांजलि अर्पित करने से कहीं वंचित न रह जाए, सभी के हृदय में भय था। भूख-प्यास विलीन हो चुकी थी। घर से निक ने की शीघ्रता थी।

६ बजते-बजते राजेन्द्रप्रसाद मार्ग पर राष्ट्रीय पर्व १५ अगस्त पर लाल-किले का-सा दृश्य बन गया। मार्ग प्रातः से ही साधारण यातायात के लिए अवरुद्ध कर दिया गया था। श्रद्धांजलि अर्पित करने वाली जनता वाहन से पुण्य-स्थल तक आ-जा सकती थी। दर्शनार्थियों की पंक्ति लग गई; एक बहुत लम्बी पंक्ति जो ३० राजेन्द्रप्रसाद मार्ग से जनपथ-राजेन्द्रप्रसाद मार्ग चौराहे को स्पर्श करने लगी थी। विशिष्ट व्यक्ति एवं अज्ञानवश आये हुए जन-सामान्य भवन के मुख्य द्वार पर भी एकत्रित हो जाते थे।

नर-नारी, आबाल-वृद्ध भारी हृदय से दर्शनार्थ उपस्थित थे। धैर्य का बांध टूटने पर अश्रु-प्रवाह बह निकलता था। कपोलों पर झरती हुई बूंदों को

पोंछने की भी सुध नहीं थी। निरन्तर बहती हुई अश्रु निर्झरिणी भी हृदय में प्रज्वलित शोकाग्नि को शांत करने में विफल हो रही थी।

मुख्य द्वार पर विशिष्ट व्यक्तियों का मार्गदर्शन और उनके आने-जाने की व्यवस्था महानगर परिषद् के दो सदस्य—सर्वश्री रामबाबू माहेश्वरी तथा केदार जी—कर रहे थे। समीप ही मुख्यकार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मलहोत्रा भवन की ओर मुंह किए अत्यन्त उदास एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी स्थिति में बहुत देर तक खड़े रहे। व्यवस्था का निरीक्षण करते रहे। अत्यन्त उदास एवं उतरे हुए चेहरे और रुदन से सूजी हुई आंखों वाले जनप्रिय नेता सर्वश्री अटल-बिहारी वाजपेयी और बलराज मधोक के दर्शन भी यदा-कदा मुख्य द्वार पर हो जाते थे। व्यवस्था करने में संलग्न अन्दर-बाहर आते-जाते अनेक जनसंघी नेताओं को देखा जा सकता था। इनमें सर्वश्री पीताम्बरदास, यज्ञदत्त शर्मा (पंजाब), श्रीचन्द गोयल (चण्डीगढ़) के नाम उल्लेखनीय हैं।

मुख्यद्वार की बाईं ओर बाहर पार-पथ पर महापुरुष की काया को ले जाने वाले वाहन को पुष्प-मालाओं और भगवा वस्त्र एवं जनसंघ-ध्वजों से अलकृत किया जा रहा था। ट्रैक्टर से ट्रौली फिट थी। राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के सब्जीमण्डी (दिल्ली) क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्त्ता उदास मुखाकृति एवं भारी हृदय से शव-रथ को सजा रहे थे। पुष्पशैया बना रहे थे, अपने दिवंगत नेता को लिटाने के लिए। मार्ग मे उन्हें कहीं कष्ट न हो, पीड़ा न हो, उनको शान्त निद्रा भंग न हो। ट्रैक्टर-ट्राली का मेल आज काल-चक्रिका बनकर पंडित दीनदयाल जी की काया की परलोकवाहिनी बनेगी।

आज संसद् का बजट अधिवेशन प्रारम्भ हो रहा था। सदन के दोनों सदनों (लोकसभा और राज्यसभा) में राष्ट्रपति डॉ० जाकिर हुसैन का भाषण होना था। संसद्-सदस्य न होते हुए भी पं० दीनदयाल जी को संसद् की ओर से श्रद्धांजलि दी जाए; अतः १०.४० बजे के लगभग सर्वश्री अटल जी, मधोक जी, श्रीचन्द गोयल, एम. एल. सोंधी आदि नेता संसद्-सदस्य होने के नाते विवशतावश संसद्-भवन चले गए।

इधर, समय हवाई घोड़े पर सवार हो तेजी से दौड़ा जा रहा था, उधर श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों की भीड़ उमड़ी चली आ रही थी। पुलिस का पूर्ण प्रबन्ध होते हुए भी कभी-कभी व्यवस्था गड़बड़ा जाती थी। ११.३० बजे के पश्चात् कुछ विशिष्ट नेताओं का आगमन हुआ। ११.३२ पर उत्तर-प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री चरणसिंह और ११.३७ बजे पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री लक्ष्मणसिंह गिल अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने आए। द्वार पर श्री गिल ने श्री विजयकुमार मलहोत्रा से हाथ मिलाया।

१२ बजते-बजते दर्शनार्थियों ने पंक्ति तोड़ दी। मुख्य द्वार पर सैंकड़ों लोग प्रथम-प्रवेश के लिए प्रयत्न करने लगे। परिणामत: घुड़सवार पुलिस को कर्त्तव्य बोध कराया गया। मुख्य द्वार से मुख्य सड़क तक तीन ओर रस्सी से जन-समुदाय को रोकने का प्रयास किया गया। अव्यवस्था होने का एक प्रमुख कारण यह भी था कि शव-यात्रा की तैयारी के लिए दर्शन-द्वार शीघ्र ही बन्द होने वाले थे। समस्त उपस्थित जनता का अपने नेता को श्रद्धांजलि अर्पित कर पाना न केवल कठिन था, बल्कि पूर्णत: असम्भव भी था।

थोड़ी व्यवस्था हो पाई थी कि १२.०३ बजे बाबू जयप्रकाश नारायण एवं उनकी धर्मपत्नी तथा १२.२६ पर सुरक्षा-मन्त्री सरदार स्वर्णसिंह अपनी श्रद्धांजलि देने एवं माल्यार्पण करने के लिए आए। सरदार स्वर्णसिंह जी अपनी कार मुख्य द्वार से काफी पीछे छोड़ आए थे। अत: उनके पैदल आगमन से जनता का ध्यान उधर आकर्षित होना स्वाभाविक था। दूसरे, ऐसे अवसर पर अधिकारीगण को प्रवंचना देकर मुख्य द्वार से प्रवेश करने का प्रयत्न जनता के कुछ लोग करते ही हैं। इसी भीड़-भाड़ में स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के सुपुत्र संसद् सदस्य श्री हरिकृष्ण १२.३६ बजे आए। मुख्य द्वार पर भीड़ देखकर वे एक बार तो किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए, किन्तु दूसरे ही क्षण उनके सहयोगियों ने मार्ग बनाकर उन्हें अन्दर भेजा। सरदार स्वर्णसिंह जब वापिस लौटे तो उन्होंने पंजाब के जनसंघी नेता एवं संसद्-सदस्य श्री यज्ञदत्त शर्मा की बगल में हाथ डाला हुआ था और वे परस्पर बातचीत कर रहे थे।

हिन्दू-संस्कृति के कट्टर अनुयायी का सनातन धर्म रीति से क्रिया-कर्म होना स्वाभाविक ही था। शव को शव-यात्रा के लिए तय्यार भी करना था। इधर १२.४६ बजे गीता का पाठ समाप्त हो गया। गीता-पाठ समाप्त होते ही दीनदयाल जी के पार्थिव शरीर को गंगा-जल से स्नान कराने की तय्यारी की जाने लगी। १२.५१ बजे पुरुष सूक्त के मन्त्रोच्चार से स्नान-क्रिया आरम्भ हुई। १२.५८ पर पुरुष सूक्त का पाठ पुनः आरम्भ किया गया। स्नान के पश्चात् अर्थी-बन्धन-क्रिया आरम्भ हुई। जिस नेता के इंगित मात्र से सारे कार्यकर्त्ता उसकी इच्छा में बंध जाते थे; आज उसी के शरीर को अपने हाथों बाँधते कितना कष्ट हुआ होगा ? आहें और सिसकियाँ एवं रोने की आवाजें पुरुष-सूक्त के मन्त्रों के मध्य सुनाई पड़ रही थीं।

मुख्य द्वार से १५-२० फुट आगे मुख्य मार्ग पर शव-रथ आ पहुँचा था। वह भगवा वस्त्र एवं जनसंघ ध्वजों से सुसज्जित था। उसके द्वार पर आते ही जनता का हृदय द्रवित हो उठा। कारण, अब यह प्रिय नेता को ले जाएगा। सुदूर क्षितिज के उस पार, जहाँ से कभी लौटना न होगा।

इधर १२.५३ बजे दिल्ली, हरियाणा, पंजाब तथा जम्मू और काश्मीर के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांतीय संघचालक एवं दिल्ली के महापौर लाला हंसराज जी गुप्त आ गए थे। १२.५७ पर सर्वश्री माधवराव जी मूले, बसन्त राव ओक, ब्रह्मदेव जी आदि नेता आए।

१ बजकर ४ मिनिट पर माइक से 'राम नाम सत्य है, सत्य बोलो गत्त है' का उच्चारण हुआ। श्री बच्छराज व्यास, नानासाहब देशमुख, डॉ० मंगलसेन आदि नेता अपने कंधों पर अपने नेता, अपने मार्ग-दर्शक, अपने साथी-सहयोगी की अर्थी उठाए बाहर निकले। उन्हें भवन-द्वार से शव-रथ तक पहुँचने में ३-४ मिनिट लग गए और १ बजकर ८ मिनिट पर अर्थी ट्रैक्टर-ट्राली के संयोग से बने रथ पर रख दी गई। 'राम नाम सत्य है' का घोष बन्द हो चुका था।

जनसमुदाय पुष्प-वर्षा कर रहा था। अनेक लोग माल्यार्पण कर रहे थे। पुलिस ने मुख्य द्वार पर नियन्त्रण व्यवस्था शिथिल कर दी। जनता रथ तक आ चुकी थी। जनता जोर-जोर से 'दीनदयाल उपाध्याय : अमर रहे' के नारों से गगन को गुंजा रही थी।

और १ बजकर १४ मिनिट पर शव यात्रा प्रारम्भ हुई। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का पार्थिव शरीर इस कोठी को सदा-सर्वदा के लिए छोड़कर चल दिया। पंडित जी अपने दिल्ली-निवास में इस कोठी में रहते थे, अब नहीं ठहरेंगे। वे अपने साथियों श्री अटलबिहारी वाजपेयी और श्री जगदीशप्रसाद माथुर (जनसंघ केन्द्रीय-कार्यालय प्रमुख) से रूठकर चल दिए और अटल जी अपने साथी को इस प्रकार रूठकर जाते देख सकने में अपने को असमर्थ समझकर ही मानो पहले ही संसद भवन में चले गये थे। गीता में भगवान् श्री कृष्ण का वचन स्मरण हो आया—

जातस्य हि ध्रुवा मृत्यु; ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

'मानव मृत्यु पर दो क्रियाएँ रहती हैं—प्रेत क्रिया और पिण्ड क्रिया। मृत व्यक्ति प्रेत माना जाता है—जब तक सपिण्डीकरण क्रिया नहीं कर ली जाती। उसके पश्चात् वह प्रेत से 'पितर' हो जाता है। मृत्यु के समय व्यक्ति अन्नमय कोष को त्यागकर प्राणमय कोष प्राप्त करता है। प्राणमय कोष प्राप्त करने के पश्चात् समस्या उपस्थित होती है अन्नमय कोष के नष्ट करने की। यह कार्य होता है दाह-संस्कार द्वारा शरीर को अग्नि में भस्म कर देने से।'

और जनता पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय के शव को दाह-संस्कार-हेतु ले चली।

५

शव-यात्रा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक, भारतीय जनसंघ के रथी, भारत मां के सपूत, उच्चकोटि के देश-भक्त का पार्थिव शरीर पंच-तत्व-मिश्रण के लिए चल पड़ा। 'अमर शहीद पं० दीनदयाल उपाध्याय : अमर रहें', और 'भारत माता की जय' के नारों से गगन गूंज उठा। सम्पूर्ण डॉ० राजेन्द्रप्रसाद मार्ग श्रद्धालुओं से भरा हुआ था। चार अश्वारोही सिपाही जलूस के आगे-आगे चल रहे थे। शव-रथ के आगे जनसंघ के विशिष्ट अधिकारीगण थे।

शव-रथ को जनपथ पर आते-आते १६ मिनिट का समय लग गया। एक बजकर ३० मिनिट पर जनपथ मार्ग पर शव-रथ ने प्रवेश किया। जनपथ मार्ग के दोनों ओर जनता अपने नेता के दर्शन कर उन्हें माल्यार्पण करने के लिए सड़क के दोनों ओर खड़ी थी। अब जलूस का आकार बहुविस्तृत हो चुका था। शव-रथ के पीछे महिलाएँ एकत्रित हो गई थीं जो 'गायत्रीमंत्र' का सस्वर पाठ करती चल रही थीं।

शव-रथ के आगे संघ-जनसंघ के कुछ विशिष्ट अधिकारी, संसद्-सदस्य, मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मलहोत्रा एवं अन्य प्रान्तों के मन्त्री पैदल चल रहे थे। दिल्ली के महापौर लाला हंसराज गुप्त, दीनदयालजी के ममेरे अनुज श्री प्रभुदयाल शुक्ल, दिल्ली प्रान्त के भूतपूर्व प्रान्तीय प्रचारक श्री वसन्तराव ओक तथा श्रीसुन्दरसिंह भण्डारी रथ के ऊपर बैठे थे। दीनदयालजी के अनन्य साथी श्री जगदीश माथुर बहुत उदास ड्राइवर के पीछे नीचे बैठे हुए थे।

'अमर शहीद दीनदयाल उपाध्याय : अमर रहें' के साथ 'डॉ० श्यामा-प्रसाद मुखर्जी : अमर रहें', 'देश के शहीदों को : भूलो मत, भूलो मत', 'माता के सपूतों को : भूलो मत, भूलो मत' के नारों के अतिरिक्त 'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम' का सस्वर वन्दन चल रहा था।

जलूस का नेतृत्व शताधिक मोटर-साइकिल और स्कूटर कर रहे थे। उनके पीछे साइकिलें थीं और पीछे-पीछे श्रद्धालुगण अपने हृदय की तड़पन को मुँह के उच्चारण से कम करने का प्रयास करते पैदल चल रहे थे।

जनपथ के दोनों ओर भवनों के छज्जे भरे थे। पेड़ों और बिजली के खम्भों पर भी मनुष्य चढ़े हुए थे। साइकिल सवार अपनी साइकिलों को मिलाकर उन पर खड़े थे।। जहाँ कहीं भी थोड़ा स्थान सहारे के लिए मिला स्वयं की मृत्यु का भय छोड़, उसी का अवलम्ब ले महामानव की विदाई के लिए खड़े हो गए। अपने प्रिय नेता के शोक में जनपथ का शानदार मार्किट अपने हृदय-कपाट बन्द किए था। पूर्णतः नीरवता थी।

जनता की पुष्प वर्षा, माल्यार्पण और मूक अभिवादन को स्वीकार करता हुआ शव-रथ अत्यन्त मन्दगति से बढ़ रहा था। जिन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित कर दी, रथ जिनके आगे से चला गया, वे कुछ खो बैठे। अर्थी समीप आती देखकर जनता यह समझती थी कि कुछ पा लिया। लेकिन उसमें कुछ ऐसे भी लोग थे जो खोकर पुनः प्राप्त्यर्थ आगे पहुँच जाते थे।

आज सरदी काफी कम थी। भगवान् भास्कर भी अपनी तेज किरणें प्रकट कर पूर्ण हृदय से दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि दे रहे थे। वायु के शरत्कालीन थपेड़े आज प्रकृति के किसी कोने में मुंह छिपाए आँसू बहा रहे थे। आकाश बिल्कुल साफ था।

२ बजकर ५ मिनिट पर जनपथ समाप्ति पर अनेक मार्किट एसोसियेशन्स की ओर से माल्यार्पण की गई। अर्थी थोड़ी देर वहाँ रुकी रही।

जनपथ का चौराहा पार कर अर्थी ने नई दिल्ली के भव्य, विशाल एवं

चमचमाने बाजार कनॉट प्लेस में प्रवेश किया। भारत की राजधानी का यह आलिशान बाजार पैरिस को भी नीचा दिखाने वाला है, किन्तु आज वह शान्त और निर्जीव है। जहाँ फैशन-परस्त नर-नारी कृत्रिम मुस्कान से इसकी शोभा को द्विगुणित करते थे, वहाँ आज वे पटरी पर हृदय की वेदना और मन की एकाग्रता से शान्तभाव से खड़े हैं।

जलूस के कनॉट प्लेस में प्रवेश करने के पश्चात् जैसे ही शव-रथ वहाँ आया जम्मू काश्मीर के मुख्यमन्त्री श्री गुलाम मुहम्मद सादिक ने २ बजकर १० मिनिट पर विशिष्ट व्यक्तियों के बाड़े में प्रवेश किया और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वे अब अर्थी के साथ-साथ चल रहे थे। कनॉट प्लेस के 'सी ब्लाक' पर दर्शकों के मध्य चुपचाप उदास खड़े सर्वश्री अटलबिहारी वाजपेयी, बलराज मधोक, एम. एल. सोंधी, कंवरलालगुप्त आदि संसद्-सदस्यों ने जलूस में प्रवेश किया। इन नेताओं के आते ही शव-जलूस में एक बार हलचल सी हुई। जनता इनके दर्शन करने के लिए रुकने लगी। कुछ थोड़ी सी अव्यवस्था भी हुई, किन्तु कार्यकर्त्ताओं ने जलूस को विश्रृंखलित होने से बचा लिया।

अर्थी ने २ बजकर ३६ मिनिट पर ओडियन मार्ग पर प्रवेश किया। ओडियन-से लेकर मिन्टोरोड ब्रिज और थामसन रोड के प्रारम्भ तक लाखों नर-नारियों के मुण्ड ही मुण्ड दिखाई देते थे। अपार जनसमूह का प्रवाह जय-जय कार के नारों से गगन को गुंजा रहा था। ब्रिज के ऊपर से सम्भवतः गुजरती हुई रेलगाड़ी को रोक कर यात्री इस दिव्य-पथ के यात्री के दर्शनार्थ खड़े थे। सर्दी-गर्मी की चिन्ता नहीं, भूख-प्यास की फिक्र नहीं, शारीरिक कष्ट का मूल्य नहीं। अर्थी बहुत रुक-रुक कर चल रही थी।

२ बजकर ५ मिनिट पर अर्थी ने थामसन रोड पर प्रवेश किया। यहां आकर जलूस कुछ विश्रृंखलित हो गया था। इसके दो कारण थे। पहला, इस लम्बे मार्ग पर शोक-वेदना और वीर-बैन उच्चारित करते-करते सूखे कंठों को एक परिवार बाल्टी में जल लाकर गीला करने का भरसक प्रयास कर

रहा था। दूसरे, लोग अजमेरी गेट पर, जहाँ एक ओर जनसंघ का कार्यालय है और दूसरी ओर कांग्रेस का प्रदेश कार्यालय है, होने वाले स्वागत को देखने के लिए तीव्रता से बढ़ गए थे। जनसंघ के नेता सर्वश्री अटल जी, मधोक जी, कंवरलाल जी भी अपने दिवगंत-नेता के स्वागतार्थ पहले जा रहे थे।

अजमेरी गेट आ ही गया। जी.बी. रोड से अजमेरी गेट की ओर मिलने वाले मार्ग पर अवस्थित सिपाही के चबूतरे पर विशिष्ट मंच बनाया हुआ था। मंच के ऊपर पंडित जी का एक चित्र रखा हुआ था। पंडित जी को कॉलीकट जाते हुए मद्रास के समीप एक स्टेशन पर भेंट किया हुआ एक पीला उत्तरीय और गहरे भगवे रंग का तौलिया उस चित्र को सुशोभित कर रहे थे। मंच पर जनसंघ और कांग्रेस के नेता दीनदयाल जी को श्रद्धांजलि देने खड़े थे। अजमेरी गेट के दोनों ओर की बिल्डिगों, बिजली के खम्भों और अजमेरी गेट की नवनिर्मित गोल चारदिवारी पर जनता खचाखच भरी हुई थी। पैदल चल रहे जलूस में बहुत धक्का-पेल हो रही थी। श्री कंवरलाल गुप्त स्वागतार्थ स्थान के नीचे सड़क पर जनता को आगे बढ़ने और व्यवस्था रखने में पुलिस की सहायता कर रहे थे।

दीनदयाल जी अजमेरी गेट आए हैं। वे अब कार्यालय की ओर नहीं जाएँगे, जहां बैठकर और कार्य करके जनसंघ का लालन-पालन करते थे; उनका मार्ग-दर्शन, उनके प्रवचन, उनकी मीटिंगें अब इस कार्यालय में न हो सकेंगी। आज वे ट्रक-टाली की काल-चक्रिका पर लेटे हुए हैं। काल के क्रूर हाथों ने उनके कर-पल्लव, बांध दिए हैं, उसके पैर तोड़ दिए हैं। सिर को कुचल दिया है। अजातशत्रु का भी शत्रु होता है, चाहे वह स्वयंमेव काल ही क्यों न हो, यह मानने को विवश होना पड़ता है। उनकी काया सोई थी। वे स्वतः उठने में असमर्थ थे। जाग्रत कराने का साहस किसी में न था। अतः वे आज अपनी मन्द मुस्कान से हाथ जोड़कर कार्य-कर्त्ताओं को अभिनन्दित नहीं कर पाएंगे।

जनता के प्राण श्री दीनदयाल उपाध्याय के प्राणों का अपहरण हो चुका था। वे पार्थिव शरीर की वाहिका पर चिर-निद्रा में सुप्त थे। अर्थी पर बंधे थे। शव-रथ स्वागत मंच के समीप आया। ३ बजकर १५ मिनिट पर दिल्ली जनसंघ के प्रधान क्रांतिकारी नेता स्वर्गीय भाई परमानन्द जी के सुपुत्र डॉ० महावीर जी, कोषाध्यक्ष श्री हरिकृष्णजी, पूर्वी जिला प्रधान वैद्य दौलतराम जी ने अश्रुपूरित नेत्रों से शव पर माल्यार्पण किया। दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष श्री राजेश शर्मा ने शव पर फूल-मालाएँ चढ़ाईं। जी. बी. रोड़ की अनेक व्यापारिक संस्थान-एसोसियेशन्स की ओर से माला एवं फूल अर्पित किए गए। अजमेरी द्वार स्थित जनसंघ एवं कांग्रेस कार्यालय के दलीय ध्वज आधे झुके हुए थे।

जलूस को अब दिल्ली के तंग बाजारों में से गुजरना था। ये थे अजमेरी गट मार्ग, चावड़ी बाजार और नई सड़क। यहां की मुख्य सड़कें भी दैनन्दिन यातायात की दृष्टि से बहुत छोटी हैं। फिर इतने बड़े जलूस को कैसे सम्भाल सकती थी। सड़क के दोनों ओर दुकानों, मकानों, छज्जों, बरामदों पर सब जगह जनता ही जनता थी। लगता था दिल्ली की समस्त जनता इन बाजारों और सड़कों पर एकत्रित हो गई है।

अजमेरी गेट पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम समाप्त होने पर श्री अटल जी और बलराज जी शव-रथ पर बैठ गए।

इनके अतिरिक्त ट्राली पर निम्नलिखित नेता शव के समीप पहले ही बैठे हुए थे—सरकार्यवाह श्री बालासाहब देवरस, श्रीबच्छराज व्यास, लाला हंसराज गुप्त, श्री पीताम्बरदास जी, श्री नानासाहब देशमुख, श्री प्रकाशदत्त भार्गव, श्री प्रभुदयाल शुक्ल, श्री वसन्तराव ओक, श्री सुन्दरसिंह भण्डारी एवं श्री जगदीश माथुर।

शव-यात्रा की अग्रिम पंक्ति में पैदल चलने वालों में सर्वश्री रामप्रकाश गुप्त (तत्कालीन उपमुख्यमंत्री), वीरेन्द्रकुमार सकलेचा (उपमुख्यमंत्री) रामगोपाल शालवाले (संसद् सदस्य), कंवरलाल गुप्त, हरदयाल देवगुण,

विजयकुमार मलहोत्रा, अमरचन्द शुभ एवं डा० रामलाल वर्मा के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

स्थान-स्थान पर लोग, संस्थाएँ, मार्किट एसोसिएशन्स, दल और विद्यालय पुष्प मालाएँ और रीथ रख कर श्रद्धांजलि दे रहे थे। चावड़ी बाजार प्रवेश पर सर्वश्री रामबाबू माहेश्वरी और रामप्रकाश गुप्त (जनसंघ की ओर से महानगर परिषद् के निर्वाचित सदस्य) ने माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। इस समस्त मार्ग के चप्पे-चप्पे पर पुष्प वर्षा हो रही थी।

३ बजकर १७ मिनिट पर अजमेरी गेट मार्ग पर प्रवेश करने वाले जलूस ने २-३७ पर चावड़ी बाजार प्रवेश किया और ३-४४ पर नई सड़क पर। नई सड़क पर गुजरने में पूरे ५६ मिनिट लगे। ४ बजकर ४३ मिनिट पर अर्थी ने नई सड़क की श्रद्धांजलि स्वीकार कर चान्दनी चौक में प्रवेश किया।

चान्दनी चौक अर्थात् दिल्ली नगर का हृदय-स्थल, दिल्ली का ऐतिहासिक बाजार। इसी घंटाघर-स्थल पर काश्मीर आन्दोलन में जनसंघ के प्रथम प्रधान डा० श्यामप्रसाद मुखर्जी ने श्री एन. सी. चटर्जी (हिन्दू महासभा) और श्री नन्दलाल शास्त्री (रामराज्य-परिषद्) के साथ सत्याग्रह किया था। आज उसी स्थान पर दिल्ली नगर-निगम के जन-प्रतिनिधि अपने दल-गत भेद-भाव विस्मरण कर दीनदयाल जी को श्रद्धांजलि देने के लिए खड़े थे। सर्व-प्रथम नगर-निगम में जनसंघ के नेता श्री केदारनाथ साहनी ने माल्यार्पण किया। तत्पश्चात् श्री देसराज चौधरी (कांग्रेस दल के नेता) चौ० सूरतसिंह, जयप्रकाश गोयल आदि नगर-निगम सदस्यों ने पुष्प मालाएँ चढ़ाईं।

चान्दनी चौक का रमणीक बाजार आज बन्द और शान्त था। जिस चान्दनी चौक ने अनेक बार कत्ले आम देखा था, आज वही चान्दनी चौक पथराई हुई आंखों से जननेता पं० दीनदयाल जी को हृदय विदारक श्रद्धांजलि देते देख रहा था। सड़क के दोनों ओर अपार जनसमूह अपने नेता को श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए खड़ा था। स्थान-स्थान पर लोग स्टूल, बैंच तथा

तख्त डालकर उन पर खड़े थे। बिजली के खम्भे, पेड़ों के तने, मकानों के छज्जे सब नर-नारियों से भरे थे।

चान्दनी चौक में तीन स्थानों पर अर्थी का विशिष्ट स्वागत हुआ। पहला, दिल्ली हिन्दुस्तानी मर्केन्टाइल एसोसियेशन द्वारा ४ बजकर ५८ मिनिट पर। यहां सड़क के आर-पार तार बांधकर उसके मध्य में एक भव्य हार लटकाया गया था। ज्यों ही शव-रथ उस स्थान की ओर बढ़ा, हार तागे के सहारे नीचे उतर गया और शव-रथ के रुकने पर स्वर्गीय नेता के वक्षस्थल पर फैल गया, जिसे श्री वसन्तराव ओक ने उठाकर पण्डित जी के गले में डाल दिया। इसके साथ ही तार को दो तीन झटके देते ही उस पर बँधी हुई कागज की नौका से पुष्पवृष्टि हुई, जो पण्डित जी के पार्थिव शरीर पर फैल गई। 'पुष्प असंख्य प्रार्थनाओं का साकार प्रतीक हैं', इस विश्वास के साथ पुष्प-वर्षा का मूल्यांकन करें तो श्रद्धांजलि का दूसरा आध्यात्मिक पहलू भी दृष्टिगोचर होता है। इस सम्पूर्ण शव-यात्रा में यह अपने ढंग की श्रद्धांजलि थी।

दूसरी विशिष्ट श्रद्धांजलि ऐतिहासिक स्थान फव्वारे पर गुरुद्वारा शीशगंज की ओर से ५ बजकर १८ मिनिट पर दी गई। गुरुद्वारा शीशगंज से माइक पर दीनदयाल जी की हत्या पर शोक संवेदनाएं प्रकट की जा रहीं थीं। शव-रथ आने पर माल्यार्पण किया गया, सरोपा (सफेद वस्त्र) चढ़ाया गया तथा बिगुल द्वारा शोकध्वनि की गई।

तीसरी विशिष्ट श्रद्धांजलि ५ बजकर ३२ मिनिट पर आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से दी गई। वहाँ संसद्-सदस्य रामगोपाल शालवाले माला हाथ में लिए उपस्थित थे। जैसे ही अर्थी समीप आई श्री वीर प्रदुमन जोशी ने आर्यध्वज और माला तथा फूल उस पर चढ़ाए। यह 'ओ३म्' चिह्नित आर्यध्वज दीनदयाल जी के चरणों पर फैलाकर उढ़ा दिया गया।

यों चान्दनी चौक समाप्ति से निगमबोध घाट क्षेत्र-द्वार तक सड़क के दोनों ओर अपार जनसमूह खड़ा था, किन्तु अब शवरथ की चाल तेज कर

दी गई। सूर्य देवता अस्ताचल की ओर जा रहे थे। उनकी शक्ति क्षीण हो रही थी।

५ बजकर ५२ मिनिट पर अर्थी जमनाबाजार पार करती हुई निगमबोध घाट के प्रथम प्रवेश द्वार पर पहुँची। यहाँ पर पुलिस का बहुत सख्त पहरा था। सहस्रों लोग पहले ही यहाँ एकत्रित थे। पुलिस ने चितास्थल तक जनता को रोकने का यह प्रथम अवरोधक रखा था। श्री रामभज जी (महानगर परिषद् के पार्षद) तथा श्री अमरचन्द शुभ (कार्यकारी पार्षद) अर्थी आने से पूर्व जनता को रोकने में पुलिस की सहायता कर रहे थे, पर जनता मानती ही न थी। वह तो अपने प्रिय नेता को चिता तक श्रद्धांजलि भेंट करना चाहती थी। अर्थी आने पर अर्थी के आगे और पीछे चलने वाली टोली ने भी अन्दर घुसने का प्रयास किया। ट्रॉली पर बैठे नेताओं (अटल जी एवं बलराज जी) ने खड़े होकर जनता से पीछे हटने को कहा। उधर माइक से बार-बार जनता को अनुशासन में रहने और दाह-संस्कार-स्थल तक न पहुँचने की प्रार्थना की गई। अन्ततः शव-रथ ने प्रथम अवरोधक द्वार पार किया और बहुत से व्यक्ति उसके साथ 'श्री राम, जय राम, जय-जय राम' का सस्वर उच्चारण करते हुए अन्दर घुस गए।

यहाँ से चिता-स्थल के दो अन्य अवरोधक द्वारों की भी स्थिति यही थी। यद्यपि पुलिस ने पाइप और बल्लियों से जनता को रोकने के लिए दृढ़ व्यवस्था की हुई थी, किन्तु अपार जनसमूह के सम्मुख यह व्यवस्था फेल होने लगी। भीड़ के बहुत बड़े धक्के जो दो-चार बार लगे, उसमें भी सैकड़ों व्यक्ति अन्दर चले गए। शेष बाहर रह गए।

६

निगमबोध घाट

काश्मीरी गेट क्षेत्र के पार्श्व भाग में पवित्र यमुना के तट पर स्थित निगम बोध घाट दिल्ली की प्रमुख श्मशान भूमि है। दिल्ली बहुत लम्बी-चौड़ी होने के कारण उसमें अब अनेक श्मशान क्षेत्र बन गये हैं और लोग समीपस्थ स्थानीय श्मशान में दाह-संस्कार कर देते हैं। किन्तु कट्टर धार्मिक व्यक्ति अथवा महापुरुषों का दाह-संस्कार करने के लिए यमुना तट के इस श्मशान को महत्त्व-दिया ही जाता है।

अब से १५ वर्ष पूर्व सन् १९५३ में स्वर्गीय डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का शव दिल्ली न आ सका और सीधा कलकत्ता भेज दिया गया तो जनसंघ के तत्कालीन महामंत्री पं. मौलिचन्द शर्मा के नेतृत्व में डॉ. मुखर्जी के चित्र का तर्पण करने के लिए विशाल शोक जलूस दिल्ली के प्रमुख मार्गों से होता हुआ, इसी श्मशान घाट पर आया था।

अब इस श्मशान भूमि का भी दैनन्दिन काया-कल्प होता आ रहा है। पहले यमुना जब क्रोधित हो जाती थी तो सम्पूर्ण भूमि को आत्मसात् कर लेती थी, किन्तु अब पक्का घाट बनाकर और ऊँची दीवार निर्मित कर यमुना के क्रोध को प्रभावहीन कर दिया गया है। पहले श्मशान भूमि तक आने वालों के लिए धूप और वर्षा से कोई बचाव का स्थल न था। और न थी हारे-थके व्यक्तियों के लिए बैठने की सुव्यवस्था, किन्तु अब अच्छी और श्रेष्ठ व्यवस्था है। चिता-स्थल भी पृथक्-पृथक् मजबूत बने हैं। सब पर नम्बर पड़े हैं। वर्षाकाल के लिए कुछ चिता-स्थलों पर टीन की चादरों से छत बनाई हुई है। नहाने अथवा मुँह-हाथ धोने के लिए नल हैं; बरमे हैं। मृतक के नामांकनार्थ दिल्ली-नगर-निगम-का छोटा-सा कार्यालय भी इसी क्षेत्र में अवस्थित है।

पं० दीनदयाल जी जनसंघ के प्रधान थे। आज देश के राजनीतिक वातावरण में कांग्रेस के पश्चात् जनसंघ का अत्यन्त सम्माननीय स्थान है। दूसरे, दिल्ली नगर-निगम और दिल्ली महानगर-परिषद् पर जनसंघ का पूर्ण अधिकार है। इतना ही नहीं दिल्ली से संसद् की ७ में से ६ सीटें जनसंघ ने जीती थीं। अतः दीनदयाल जी के अन्त्येष्टि-स्थान की सजावट के लिए ११ फरवरी से ही कार्य आरम्भ हो गया था।

मुख्य मार्ग साफ कर बजरी बिछा दी गई थी। कार, स्कूटरों को खड़ा करने का स्थान ठीक कर दिया गया था। अन्त्येष्टि के लिए श्मशान क्षेत्र में एक विशाल स्थण्डिल १८$\frac{२}{३}$' × १८$\frac{२}{३}$' × ६' बना दिया गया था। विद्युत्-प्रकाश और लाउडस्पीकर का श्रेष्ठ प्रबन्ध हो चुका था। इसके अतिरिक्त लोहे के पाइप लगाकर जनता को रोकने और विशिष्ट व्यक्तियों के आने-जाने का समुचित प्रबन्ध हो चुका था।

६ बजकर १२ मिनिट पर यह शव-रथ श्मशान क्षेत्र के अन्दर चबूतरे से थोड़ा दूर आकर रुक गया। ट्रैक्टर-ट्राली से उतारकर शव उस चबूतरे पर ले जाया गया। यहाँ जनसंघ, संघ तथा अन्य संस्थाओं के नेताओं ने शव को कन्धा दिया। छान्दोग्योपनिषद् के शब्दों में 'वे उस दिवंगत को उस अग्नि के

समीप, जहाँ से वह आया था— ले चले' (ते प्रेतं दिष्टमिती अग्नय एव हरन्ति यत एवेतो यत: सभूतो भवति) ।'

६ बजकर २३ मिनिट पर लाउडस्पीकर से मन्त्रोच्चारण आरम्भ हुआ और अर्थी से हटाकर शव चिता पर रख दिया गया।

चिता पर शव रखने के उपरांत ६ बजकर ४४ मिनिट पर अंतिम श्रद्धांजलि कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। श्रद्धांजलि अर्पण करने से पूर्व लाउडस्पीकर से नाम बोला जाता था, तब वह महापुरुष दीनदयाल जी के चरणों में पुष्पमाला अर्पित करता था।

श्रद्धांजलि अर्पित करने में सर्वप्रथम स्थान था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री बालासाहब देवरस का। तत्पश्चात् थे लाला हंसराज गुप्त, माननीय बाबा साहब घटाटे (नागपुर के संघचालक), माननीय माधवराव जी मूले। इसके बाद श्रद्धांजलि इस क्रम से अर्पित की गई—सर्वश्री लालकृष्ण आडवानी, विजयकुमार मलहोत्रा, पीताम्बरदास जी, यज्ञनारायण जी, बलराज मधोक, अटलबिहारी वाजपेयी, जगन्नाथराव जोशी, जे. बी. कृपलानी, रामप्रकाश गुप्त (उ. प्र. तत्कालीन उपमुख्यमन्त्री), वीरेन्द्रकुमार सकलेचा (म. प्र. उपमुख्य मन्त्री) डॉ० महावीर, डॉ० बलदेवप्रकाश (पंजाब), चौधरी मुख्तारसिंह (हरियाणा), श्रीमती सिंधुताई (राष्ट्रीय सेविका समिति), गिरिराज किशोर, भैरोंसिंह शेखावत (राजस्थान) देशराज चौधरी, नारायणराव शेजवलकर, बच्छराज व्यास, बख्शी गुलाम मुहम्मद (संसद् सदस्य), सीताराम जैपुरिया, एस. ए. आगा, बी. डी. देशमुख, श्यामलाल यादव, रामचन्द्र विकल, गोपाल शास्त्री, आर. के. बिड़ला, रघुवीरसिंह शास्त्री (आर्यनेता), ओ३म्प्रकाश त्यागी, रमेश मिश्र, अमरचन्द शुभ आदि।

श्रद्धांजलि कार्यक्रम समाप्त होते ही घी और केवड़ा डाला गया, चन्दन की लकड़ी रखी गई और हवन-सामग्री छिड़की गई। तत्पश्चात् सम्पूर्ण शव को लकड़ियों से ढक दिया गया। श्री प्रभुदयाल शुक्ल ने ७ बजकर ६ मिनिट पर

मन्त्रोच्चारण के बीच चिता की तीन बार प्रक्रिमा करके अग्नि प्रज्वलित कर दी। ऋग्वेद के शब्दों में—'अपेत वीत वि च सर्प तातः' (कृपया जाइए, अब लौटिये यहाँ से)।

इस समस्त क्रियाकर्म को दुःखित जनता छलछलाई आँखों से अपलक देख रही थी—देख रही थी, अपने प्रिय नेता और महान् देशभक्त को। जनता जय-जयकार कर रही थी। 'दीनदयालजी अमर रहें' की ध्वनि से गगन गूँज रहा था। इधर, माइक से मन्त्रोच्चारण हो रहे थे। चिता के समीप चबूतरे पर क्रियाकर्म कराने वाले तीन महापण्डित विद्वानों के अतिरिक्त दीनदयाल जी के ममेरे भाई सर्वश्री प्रभुदयाल शुक्ल (गंगापुर सिटी में गार्ड), के साथ ब्रह्मानन्द शुक्ल (उज्जैन में टिकट-कलेक्टर), संतशरण शुक्ल (सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट) भी खड़े क्रिया में सहयोग दे रहे थे। मन्त्रोच्चारण के बीच घी की आहुतियाँ डाली जा रही थीं।

७ बजकर २३ मिनिट पर अन्त्येष्टि के अवसर पर अन्तिम संस्कार 'कपाल क्रिया' का कार्य श्री प्रभुदयाल शुक्ल ने सम्पन्न किया।

रात्रि का अंधकार फैलने लगा था, पवन शनैः शनैः चलने लगी थी। उधर, दीनदयाल जी की चिता धू-धू करके जल रही थी। तभी ७ बजकर ३७ मिनिट पर 'तृण तोड़ने' की प्रथा पूरी करने के लिए उपस्थित जन-समूह से बैठने की प्रार्थना की गई। वेद मंत्रों के बीच तृण तोड़ दिया गया—जाने वाले की काया से सम्बन्ध तोड़ दिया गया।

काया से सम्बन्ध तोड़ने पर क्या उस दिवंगत आत्मा से भी सम्बन्ध टूट सकता है, कदापि नहीं। कारण उस देशार्थ-समर्पित-प्राण, समाजमुखी पुरुषार्थी काया एवं सेवा-परायण मनीषी को, जिसने अपनी समग्र कर्म चेतना, प्रतिभा और जीवन का राई-रत्ती सब कुछ देश पर निछावर किया है, भारतवासी कदापि नहीं भूल सकते।

७

संगम में अस्थि-प्रवाह

हिन्दू-संस्कृति में मानव के पार्थिव शरीर के अवशेषों को गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के मिलन-स्थल 'संगम' में प्रवाहित करने का बहुत महत्त्व है। यही कारण है कि हिन्दू-कुल में उत्पन्न भारत के महामात्य पंडित जवाहर-लाल नेहरू यद्यपि शिक्षा-दीक्षा, आचरण और व्यवहार में पूर्णतः पाश्चात्य सभ्यता के प्रेमी थे, किन्तु अन्ततः उनके फूल (अस्थियाँ) भी संगम में प्रवाहित किए गए। गंगा की थाती गंगा को अर्पण कर दी गई थी। भारतीय-संस्कृति के प्रति अटूट निष्ठावान श्री दीनदयाल जी की अस्थियों को संगम में क्यों न प्रवाहित किया जाता ?

शनिवार १७.२.६८ प्रातः १०.२० पर 'तूफान एक्सप्रेस' से यह अस्थि-कलश प्रयाग जाने वाला है। अतः 'टूरिस्ट कार' सुरक्षित करवा दी गई थी। (टूरिस्ट कार में दोनों साइडों में बैठने का स्थान होता है और मध्य खाली रहता है।) जनसंघ ध्वजों और झंडियों से उसे सजा दिया गया था। रेलवे-विभाग की ओर से जनसंघ कार्यकर्ताओं की सुविधार्थ 'टूरिस्ट कार' के साथ

एक 'स्लीपर काउच' तथा प्रथम श्रेणी का डिब्बा अतिरिक्त जोड़ दिया गया था।

३०, राजेन्द्रमार्ग, नई दिल्ली से अस्थिकलश को रेलवे स्टेशन ले जाने के लिए श्री प्रभुदयाल शुक्ल और श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने जैसे ही उठाया श्री अटल जी की आँखें छलछला गईं। आँसू की बूंद टपककर मन की व्यथा प्रकट कर गईं। समस्त मोह, ममता और प्रेम आँसुओं में ढलकर बहने लगा।

३०, राजेन्द्रमार्ग से सोमवार १२.२.६८ को जब श्री दीनदयाल जी का पार्थिव शरीर अग्नि-समर्पण के लिए ले जाया जा रहा था, अटल जी वहाँ न थे। वे अपने अनन्य सखा को जाते देख सकने का साहस हृदय में न संजो पाए थे। आज उसी साथी की अस्थि और भस्मि को बिदा करने की दारुण घड़ी में उपस्थित रहने का उन्होंने प्रयास किया, किन्तु हृदय से यह वेदना सही नहीं गई। इसलिए आँखों का छलछलाना स्वाभाविक ही था।

द्वार पर कार तय्यार खड़ी थी। अस्थि-कलश को कार की पिछली सीट पर रख दिया गया। कलश के एक ओर पं० दीनदयाल जी के ममेरे भाई श्री प्रभुदयाल शुक्ल बैठे और दूसरी ओर 'लरिकाई का प्रेम कहो अलि कैसे छूटे' के प्रतीक और जनसंघ के महामन्त्री श्री सुन्दरसिंह भण्डारी बैठे। अगली सीट पर श्री अटल जी बैठ गए।

कार चल पड़ी। दीनदयाल जी सदा-सर्वदा के लिए ३०, राजेन्द्रमार्ग का निवास छोड़ चले। जिस कोठी की दीवारों ने उनका जीवन देखा था, उसी कोठी के डाइनिंग रूम ने रोते हुए उनके पार्थिव शरीर को विश्रान्ति दी। और आज यह कोठी निस्तब्ध खड़ी जाने वाले की ओर एक टक निहार रही है, मानों मूक वाणी में पूछ रही है—

इलाही क्या किया तूने, कि आलम में तलातुम है,
गलब की एक मुश्ते खाक जेरे आस्मां रख दी !

× × ×

नई दिल्ली का स्टेशन आज अपार जनसमूह से भरा है। हृदय का दुःख मुख से 'पं० दीनदयाल उपाध्याय—अमर रहें' के रूप में उच्चरित हो रहा है। जैसे ही प्रभुदयाल जी शुक्ल ने अस्थिकलश लिए प्लेटफार्म पर प्रवेश किया, जनता का हृदय रो पड़ा। नारों के मध्य रोने की ध्वनि स्पष्ट सुनाई देने लगी। अस्थिकलश सुसज्जित कोच में रख दिया गया। कलश के पीछे दीनदयाल जी का एक भव्य चित्र रखा था।

श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में होड़ लग गई। चार-चार, पांच-पांच की पंक्तियां लग गईं। क्रम से एक-एक श्रद्धालु पुष्प और माला लिए डिब्बे के अन्दर जाता। कलश पर पुष्पांजलि समर्पित करता। उसका हृदय कहता यहीं खड़े रहो—श्रद्धानवत होकर, किन्तु अन्य जन इस पुण्य से वंचित न रह जाएँ, अतः पैर उसे बाहर चलने को प्रेरित करते। इसी क्रम में गाड़ी का समय हो गया। गाड़ी चलने से दो मिनिट पूर्व श्रद्धालुओं का गाड़ी में प्रवेश रोक दिया गया और द्वार पर आकर खड़े हो गये जनता के प्रिय नेता श्री अटलबिहारी वाजपेयी। उन्होंने कर-बद्ध जनता से बिदाई ली। और गाड़ी चल दी।

× × ×

गाड़ी में दिल्ली से साथ जाने वालों में अटल जी, महामंत्री श्री सुन्दरसिंह भंडारी के साथ प्रभुदयाल शुक्ल, ब्रह्मानन्द शुक्ल के अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यकर्ता थे—

संसद् सदस्य—सर्वश्री बलराज मधोक, जगन्नाथराव जोशी, नारायणस्वरूप शर्मा, यज्ञदत्त शर्मा, ओंकारलाल बेरवा, रामस्वरूप विद्यार्थी और श्रीचन्द गोयल।

प्रमुख कार्यकर्ता—सर्वश्री जगदीश माथुर (केन्द्रीय कार्यालय प्रमुख), श्री राजेन्द्र शर्मा (कार्यालय सचिव—संसदीय कार्यालय), मास्टर योगेन्द्रनाथ (दिल्ली प्रदेश कर्यालय-प्रमुख), भैरोंसिंह शेखावत, परमेश्वरम् (अखिल भारतीय मंत्री)।

महानगर परिषद्---सर्वश्री लालकृष्ण अडवानी (अध्यक्ष), अमरचन्द शुभ, डॉ० रामलाल वर्मा तथा शिवनारायण सरसूनिया (कार्यकारी पार्षद्) मदनलाल खुराना (मुख्य सचेतक)।

सर्वश्री लोकवीरसिंह, श्यामापद बैनर्जी, सोमदेव आर्य, डॉ० सत्यपाल चुघ, केदारनाथ सचदेव, प्रेमचन्द गुप्त, पं० परमेश्वरी दास। (सदस्य महानगर परिषद्)

सदस्य नगर-निगम, दिल्ली—सर्वश्री केदारनाथ साहनी (जनसंघ दल के नेता) वैद्य विद्यारत्न, विश्वम्भर दत्त, जम्बूप्रसाद, मदनमोहन अब्रोल (उपाध्यक्ष, दिल्ली परिवहन समिति), चौधरी भूपसिंह, मुकन्दलाल पतियाल (पश्चिमी दिल्ली के क्षेत्रीय अध्यक्ष), देवीदास, मनोहरलाल कुमार, अमीरचन्द सब्बरवाल(सदर बाजार के क्षेत्रीय अध्यक्ष), चौधरी हरवंशसिंह (एल्डरमॅन)।

उत्तर-प्रदेश के (तत्कालीन) मंत्री—श्री टम्बरेश्वरप्रसाद।

दिल्ली-प्रदेश के कार्यकर्ता—सर्वश्री रामनारायण जैन, शंकरदास, बब्बूमल, मदन गोपाल, रामरग (चान्दनी चौक क्षेत्र)

सर्वश्री धनराज ओझा (करौल बाग क्षेत्र)

सर्वश्री राजाराम, मंगतराम, रामलाल गुप्ता गोपालदास (दक्षिणी दिल्ली क्षेत्र)

सर्वश्री राजेन्द्र कपूर, श्यामसुन्दर नागपाल, महता कृष्णलाल (सदर क्षेत्र)

सर्वश्री हरिकृष्ण (बाहरी दिल्ली क्षेत्र)

सर्वश्री ईश्वरदास(प्रदेश मंत्री)और कृष्णलाल भसीन(मोरीगेट मंडल मंत्री)

अन्य विशिष्ट नेता : श्री सोहनसिंह जी (राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ, दिल्ली-प्रदेश के प्रचारक-प्रमुख)

श्री के. आर. मलकानी (सम्पादक-ऑरगनाइजर)

श्री गुप्त (हिन्दुस्तान-समाचार)।

गाड़ी दिल्ली से चलकर फरीदाबाद, कोसीकलां, मथुरा, राजा की मंडी, आगरा कैंट, आगरा सिटी, टूंडला, फिरोजाबाद, शिकोहाबाद, इटावा, फफून्द, कानपुर और फतेहपुर स्टेशनों पर ठहरती हुई रात्रि १२-३० के लगभग इलाहाबाद पहुँची।

जहाँ भी गाड़ी ठहरती थी, सहस्रों बच्चे-बूढ़े, नर-नारी, संघ और जन-संघ के सदस्य और कार्यकर्ता एवं श्रद्धालु जनता उमड़ी पड़ती थी, अपने महान् नेता की अस्थियों के कलश के दर्शनार्थ एवं पुष्प चढ़ाने और माल्यार्पण करने के लिए। गाड़ी थोड़ी ही देर ठहरती थी, अतः डिब्बे में किसी को प्रवेश नहीं करने दिया गया। हां, खिड़की इस ढंग की थी, कि उसमें से कलश के स्पष्ट दर्शन हो जाते थे। गाड़ी रुकते ही द्वार पर प्रायः अटल जी आ जाते थे और श्रद्धालुओं से माला और पुष्प लेकर कलश पर चढ़ा देते थे। जापान के मनीषी कगावा कहते हैं, 'जब भाषा की पहुँच भगवान् तक नहीं हो पायी, तो वह फूल बन गई। फूल के सौंदर्य पर भगवान् मुग्ध हो गए और उन्होंने उसे हृदय में बिठा लिया।' वहाँ भी फूलों के माध्यम से श्रद्धालुओं की भावनाएँ अपने दिवंगत नेता तक पहुँच रही थीं। अटल जी को आराम देने की दृष्टि से कहीं-कहीं यह कार्य श्री जगदीश माथुर कर लेते थे।

जनता 'पं० दीनदयाल उपाध्याय : अमर रहें', 'भारतीय जनसंघ : अमर रहे', के नारे लगा रही थी। इन नारों के बीच-बीच में यदा-कदा सिसकियों की आवाज भी सुनाई दे जाती थी, जिससे वातावरण अत्यधिक वेदनापूर्ण बन जाता था।

सभी स्टेशनों पर एक ओर पुष्प माल्यार्पण का कार्य-क्रम चल रहा था, दूसरी ओर प्रसाद रूप में पुष्प एवं मालाएँ श्रद्धालुओं को दी जा रही थीं। वे इस प्रसाद को इस रूप में अंगीकार कर रहे थे '......जो फूलों की भाषा समझता है वह कभी दुःखी नहीं रह सकता—न उसे धन की कमी रहेगी और न यश की।'

मथुरा, आगरा और कानपुर पर स्वागतार्थ विशिष्ट मंच बनाए गये थे। माइक का प्रबन्ध था। जनता अपने प्रिय नेता अटल जी से दिवंगत नेता के विषय में दो-चार शब्द सुनकर हृदय शीतल करना चाहती थी। मथुरा और आगरा में दीनदयाल जी के निकट सम्बन्धी सपरिवार आए थे, उन्हें गाड़ी के अन्दर आकर श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर प्रदान किया गया।

कानपुर, जहाँ दीनदयाल जी ने युवावस्था के अनेक वर्ष व्यतीत किये थे; जहाँ उन्होंने शिक्षा की उपलब्धि की थी; जहाँ वे सन् १९३७ की मकर-संक्रांति के पावन दिवस पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने थे; वह कानपुर अपने प्रिय नेता को भव्य श्रद्धांजलि अर्पित करने में कैसे पीछे रह सकता था? वहाँ श्रेष्ठ मंच और माइक की सुव्यवस्था थी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उत्तर-प्रदेश के प्रांतीय संघचालक बैरिस्टर नरेन्द्र-जीत सिंह और उनकी धर्मपत्नी तथा उत्तर-प्रदेश भारतीय जनसंघ के प्रधान गंगाराम जी हाथ में चुने हुए गुलाब के फूल लेकर डिब्बे के अन्दर आए। बैरिस्टर नरेन्द्रजीतसिंह जी पुष्पांजलि अर्पित कर दुःखित हृदय से दो क्षण भाव-विभोर हो हतबुद्धि से खड़े रहे, किन्तु गंगाराम जी का हृदय इस दृश्य को देखकर फूट पड़ा आँखों से अश्रुधारा बह चली और नरेन्द्रजीतसिंह जी की धर्मपत्नी तो सुबक-सुबक कर रोने लगीं।

इस प्रकार कानपुर जैसा बड़ा स्टेशन हो या फफूंद जैसा छोटा स्टेशन (जहाँ स्टेशन तक पर भी विद्युत् प्रकाश का अभाव है और आबादी स्टेशन से बहुत दूर है) जनता अपने दिवंगत नेता को अन्तिम श्रद्धांजलि देने के लिए टूटी पड़ रही थी और इस प्रकार गाड़ी चलते-चलते यमुना, गंगा और अदृश्य सरस्वती के संगम से पावन स्टेशन इलाहाबाद पर मध्य-रात्रि से कुछ क्षणों के बाद पहुँच गई।

× × ×

मध्य-रात्रि का समय, शरत्-ऋतु, शीत का प्रकोप यौवन पर, फिर भी

सहस्रों व्यक्ति इलाहाबाद स्टेशन पर 'पं० दीनदयाल उपाध्याय : अमर रहें', 'भारतीय जनसंघ : अमर रहे' के घोषों से गगन को गुंजा रहे थे, कैसा अद्-भुत दृश्य था। सबके हृदय में एक पीड़ा थी, सबकी दृष्टि एक ओर थी, सब की वाणी एक ही घोष कर रही थी। उन्होंने जीवन में सीखा भी यही है, 'संगच्छध्वम् सम्वदध्वम्, संवोमनांसि जानताम्।'

गाड़ी रुकी। सुसज्जित टूरिस्ट कार से श्री प्रभुदयाल जी शुक्ल अटल जी और सुन्दरसिंह जी भंडारी के साथ अस्थि-कलश लिए द्वार पर आए। उत्तर-प्रदेश के तत्कालीन उपमुख्यमंत्री श्री रामप्रकाश गुप्त अस्थि-कलश के स्वागतार्थ स्टेशन पर उपस्थित थे। गाड़ी से उतरते ही श्री नाना जी देशमुख ने कलश को उठाने में सहयोग दिया। तत्पश्चात् अस्थि-कलश पुष्प वर्षा के मध्य पूर्व निर्मित सुसज्जित मंच पर लाकर रख दिया गया। यहाँ इलाहाबाद के प्रमुख नागरिकों की ओर से माल्यार्पण होने लगा।

१५-२० मिनिट पश्चात् अस्थि-कलश को विशेष रूप से सुसज्जित ट्रक में रखकर स्वरूप रानी पार्क में ले जाया गया। इलाहाबाद की जनता के दर्श-नार्थ कलश को रखने के लिए यही स्थान निर्धारित हुआ था। यहाँ सैंकड़ों नर-नारी उपस्थित थे। अस्थि-कलश के वहां रख दिए जाने पर सब लोग कीर्तन करने लगे और कीर्तन का यह कार्य-क्रम प्रातःकाल तक चलता रहा, जब तक कि अस्थि-कलश को संगम में प्रवाह के लिए ले जाने की तय्यारियाँ न होने लगीं।

दिल्ली से गए कार्यकर्ताओं के लिए धर्मशालाओं में ठहरने का प्रबन्ध था। उत्तर-प्रदेश के राजकीय परिवहनों एवं कारों द्वारा कार्यकर्ता अपनी-अपनी धर्मशालाओं में विश्राम के लिए चले गए।

१८ फरवरी १९६८ प्रातः १० बजे से अस्थिकलश का जलूस शुरू करने की तैयारी होने लगी। पवित्र-कलश को फूल-मालाओं से सुसज्जित ट्रक में रखा गया। कलश के पीछे दीनदयाल जी का भव्य चित्र रखा हुआ था।

जनसंघ के झण्डे फहरा रहे थे। लगभग १०-३० बजे यह जलूस स्वरूप-रानी पार्क से संगम की ओर चला। हजारों लोग अस्थिकलश रथ के साथ कीर्तन करते, नारे लगाते और दीनदयाल जी की जय-जयकार करते चल रहे थे। 'अस्थि-कलश यात्रा' में उत्तर-प्रदेश जनसंघ के सभी कार्यकर्ता, उत्तर-प्रदेश के मंत्री एवं अन्य प्रांतों से आए अधिकारीगण भी उपस्थित थे। ट्रक के आगे जनसंघ के वरिष्ट नेता सर्वश्री अटल जी, बलराज जी आदि चल रहे थे।

स्वरूप रानी पार्क से संगम तक का ५ मील लम्बा पथ पथिकों से भर गया था। इलाहाबाद की जनता ने मार्ग के दोनों ओर खड़े होकर दिवंगत नेता के 'फूलों' पर फूल वर्षा कर एवं माल्यार्पण कर अश्रुपूरित नेत्रों से अपनी श्रद्धांजलि भेंट की।

गंगा-तट पर जलूस लगभग १२ बजे मध्याह्न पहुँच गया। अपार जन-समूह गंगा-तट से २०० गज दूर रोक दिया। अस्थि कलश को ट्रक से उतार-कर श्री सुन्दरसिंह भंडारी नाव की ओर ले चले। जनसंघ की ओर से अव्य-वस्था को रोकने के लिए नावों का पहले से ही प्रबन्ध किया गया था। नावों पर नम्बर पड़े थे; प्रत्येक नाव पर कितने व्यक्ति बैठेंगे और कौन-कौन व्यक्ति किस नाव पर बैठेगा, यह सभी कुछ निश्चित था। नावों में बैठकर संगम की ओर जाने वाले प्रतिनिधियों को 'प्रवेश-पत्र' (पास) दिए गये थे। अर्धशतक से अधिक नावों के इस कारवाँ के मध्य में पुष्प, मालाओं और जनसंघ ध्वजों से सुसज्जित एक नाव थी। इसमें कलश रखा गया था। इसका क्रमांक एक था। इसमें दीनदयाल जी के सम्बन्धी सर्वश्री प्रभुदयाल शुक्ल, ब्रह्मानन्द शुक्ल, विनोद-कुमार शुक्ल, विजय कुमार और अरुण कुमार के अतिरिक्त जनसंघ के सभी वरिष्ट नेता सर्वश्री अटलबिहारी वाजपेयी, बलराज मधोक, सुन्दरसिंह भंडारी, नाना जी देशमुख, जगदीश माथुर, भाऊराव देवरस और रामप्रकाश गुप्त थे।

जनसंघ ध्वजों से लहराती इन नावों के कारवां के साथ कांग्रेस ध्वज और एस. एस. पी. ध्वज वाली दो नावें थीं। इनमें कांग्रेस, एस. एस. पी. और

भारतीय क्रांतिदल के अनेक नेता अपनी श्रद्धांजलि देने पहुँचे थे। इनमें प्रमुख व्यक्ति थे—इलाहाबाद के तीन भूतपूर्व महापौर—सर्वश्री सी. एल. कक्कड़ (निर्दलीय), बैजनाथ कपूर (कांग्रेस) तथा विश्वम्भरनाथ पांडे (कांग्रेस), श्री चुन्नगुरु (एम. एल. ए.) और श्री सालिगराम जायसवाल (एस. एस. पी.)।

शेष जनता गंगातट से ही नावों के भव्य जलूस और अस्थि-प्रवाह-कार्यक्रम के दर्शनार्थ अनुशासन में खड़ी रही।

जलधारा में चलता हुआ नावों का जलूस अत्यन्त सुहावना लग रहा था। इस युग का तपस्वी, कर्मयोगी और जनहित के लिए अर्पण करने वाले दधीचि की जो यमुना की गोदी में जन्मा, उसकी धार में किल्लोल कर खेला, उसका अपना सपूत 'चिताभस्म' के रूप में आया है। आज उसकी अस्थियाँ त्रिवेणी के पवित्र संगम में प्रवाहित होने जा रही हैं। कुछ क्षण बाद काया के अन्तिम अवशेष का भी साथ छूटने जा रहा है।

देखते-देखते नावें संगम के समीप पहुँचने लगीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था संगम उनके स्वागतार्थ स्वयं आगे बढ़ आया हो। उसकी धाराएँ उस पुण्यात्मा की अस्थियों का आलिंगन करने मचल उठीं। चंचल धारा में नावों के डगमगाने का भय था। अतः त्रिवेणी में जाने के लिए तीन नावें (प्रमुख, पुलिस और प्रेस) इकट्ठी बांधकर त्रिमूर्ति का रूप धारण कर पवित्रतम त्रिनद की ओर बढ़ चलीं।

अकस्मात् आकाश मेघाच्छन्न हो गया। वरुण देवता भी अपनी अश्रु-अंजलि लेकर त्रिवेणी के संगम पर पहुँच गए। इधर तीन नावें संगम-स्थल पर पहुँची, उधर समस्त प्रकृति की ओर से प्रतीक रूप में वरुण देवता कुछ बूंदें गिराकर चले गए। आकाश साफ हो ग ा, मानो रोने पर दुखित व्यक्ति का हृदय हल्का हो गया हो।

वेद-मन्त्रों की ध्वनि के बीच अटल जी, प्रभुदयाल शुक्ल और ब्रह्मानन्द शुक्ल ने अस्थिकलश का मुंह संगम के जल की ओर कर दिया। प्रेस फोटो-

ग्राफरस के बल्ब चमके, आकाशवाणी के टेप रिकार्डर ने यन्त्र द्वारा त्रिवेणी में समाहृत होती अस्थियों की आवाज को रिकार्ड किया और देखते-देखते हुतात्मा दीनदयाल जी के 'फूलों' को माँ गंगा-यमुना ने बढ़कर एक साथ आंचल में समेट लिया । 'दीनदयाल एक से अनेक होकर धरा से उठकर ब्रह्माण्ड तक ऊँचे होकर विशाल अथाह सागर का रूप लेने माँ-गंगा की लहरों के हिंडोले पर झूलते सबके देखते ही देखते अन्तर्धान हो गए । और उनके कोटि-कोटि प्रियजन लुटे-पिटे से कंगाल, फकीर से सर झुकाए लौट पड़े। जो कुछ मुट्ठीभर राख बची थी, वह भी विराट् का सौंप चुके। अब तो कहने-सुनने को केवल स्मृतियाँ शेष रह गई हैं ।'

❦

८

दो प्रमुख लेख

चरैवेति ! चरैवेति !!

आम चुनाव के बाद देश की राजनीति ने मोड़ लिया है। कांग्रेस का युग समाप्त हुआ। नये युग का आविर्भाव हो रहा है। उसके लिए नये विचार, नयी नीति और नये नेतृत्व की आवश्यकता है। पुरानी पीढ़ी अपना काम कर गयी, अब नयी पीढ़ी को आगे आना होगा।

आज की राजनीति दो युगों के सन्धिकाल की राजनीति है। संक्रमण की कामचलाऊ व्यवस्था है। उसे टिकाऊ समझने की भूल न करें और न उसे भावी राजनीति का नमूना ही समझें।

अतीत एक तथ्य है, वर्तमान अस्थिर है और भविष्य अज्ञात। अज्ञात से कुछ लोगों को डर लगता है, इसलिए वे वर्तमान से चिपके रहना चाहते हैं

या बीते को वापस लाना चाहते हैं। प्रकृति के नियम और काल के क्रम के विपरीत काम करने वाले सफल नहीं हो सकते।

भविष्य से डरिये मत, बल्कि उसके निर्माण में रुचि लीजिये। संजोये सपनों को संवारिये, कल्पना को कर्म से गढ़िये और योजना को युक्ति से पूरा करिये। यदि कृतयुग का निर्माण करना है, तो इस आर्ष वचन को याद रखें—

> कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
> उत्तिष्ठस्त्रेतामाप्नोति कृतं सम्पद्यते चरन्॥
> चरैवेति, चरैवेति॥

वादों के विवादों में फंसने की जरूरत नहीं। अपने अन्तःकरण की प्रवृत्ति को ही प्रमाण मानकर चलिये। वही धर्म है। उसी में से तप की प्रेरणा मिलेगी और कर्म को दिशा प्राप्त होगी।

जो प्रवृत्ति और व्यवस्था, जो राजनीति और अर्थनीति, जो सामाजिक नियम और शिक्षा-पद्धति हमें कर्म-विहीन, आलसी और निद्रालु बनावे वह कलियुगी है। उसे बदलना होगा। कृत युग का उद्घोष है—चरैवेति।

अतः राजा और रंक, पूंजीपति और श्रमिक, अमीर और गरीब सबको श्रम की साधना में जुटना होगा। श्रम से पराङ्मुख, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरक्षण समाप्त करने होंगे। श्रम के लिए फड़कती भुजाओं को काम देना होगा। जहाँ राष्ट्रव्यापी श्रम है, वहाँ निर्धनता और विषमता टिक नहीं सकती। जहाँ समता और सम्पन्नता है, वहाँ सत्य है और वही शिव और सुन्दर है। नया युग श्रम युग हो, तभी कृत युग होगा। हममें से प्रत्येक इस युग-निर्माण में जुट जाय, यही कामना है।

व्यामोह का युग समाप्त हुआ। मोह निद्रा समाप्त होकर जागरण कुलबुला रहा है। आज की उथल-पुथल इसका द्योतक है। कुछ लोग फिर से थपथपी देकर या अफीम पिलाकर सुलाना चाहते हैं। उनसे सावधान रहें।

अब तो हमें आँख खोलकर खड़ा होना होगा और चलने की तैयारी करनी होगी।

हम किस ओर चलें, इसका विचार करना होगा। देश में अनेक दल और शक्तियां काम कर रही हैं, जिन्होंने अभी तक जनता को जगाया है और अब वे उसे आगे चलने के लिए भी प्रेरित कर रही हैं। उनके सिद्धान्त, नीतियाँ और कार्यक्रम हमें पसन्द नहीं। वे देश के लिए हितकारी सिद्ध नहीं होंगे। जीवन के सत्य अधिक प्रभावी हैं, विकृत पर प्रकृति की और प्रकृति पर संस्कृति की विजय सुनिश्चित है, भारत की मिट्टी का मुझे भरोसा है।

जो राह का डर बताकर न चलने की सलाह देते हैं, उनकी मत सुनिये। गलत राह पर भी चलें तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, पर चलने की शक्ति जाती रही, तो ठूंठ बनकर रह जाएँगे। और हमें तो अपनी राह बनानी है, जिस ओर हम चलेंगे, वही रास्ता होगा।

(जनदीप स्मारिका)

'त्रिभाषा फार्मूला' नहीं 'द्विभाषा सूत्र' चाहिए

कांग्रेस की कार्यसमिति ने एक प्रस्ताव के द्वारा केन्द्र सरकार से यह कहा कि वह भाषा के प्रश्न पर पुनर्विचार करे तथा ऐसी व्यवस्था करे जिससे सभी देशवासियों के साथ समान रूप से न्याय हो। इस प्रस्ताव के द्वारा उससे केन्द्र की कांग्रेस सरकार तथा संसदीय कांग्रेस दल के प्रति अपना अविश्वास नहीं तो कम से कम उसके निर्णयों से घोर असहमति अवश्य प्रकट की है। जब भाषा बिधेयक और सम्बद्ध प्रस्ताव पर लोकसभा और राज्यसभा में विचार हो रहा था तब न केवल जनसंघ एवं अन्य विरोधी दलों के सदस्यों ने बल्कि कुछ कांग्रेसी सदस्यों ने भी यह मांग की थी कि इतने महत्त्वपूर्ण विषय पर कोई भी निर्णय जल्दबाजी में न किया जाय तथा सर्वसम्मत हल निकालने का प्रयत्न किया जाय। किन्तु खेद का विषय है कि गृहमन्त्री श्री यशवन्तराव चह्वाण तथा प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी दोनों ही अपने हठ पर डटे रहे तथा उन्होंने कांग्रेसी संसद् सदस्यों की आत्मा का हनन करके अपना विधेयक और प्रस्ताव पारित करवा लिया। अब वे किस मुंह से इस प्रस्ताव में संशोधन लाएंगे ? निश्चित ही देशवासियों को यह लगेगा कि दक्षिण के कुछ प्रान्तों में हिंदी विरोधी आन्दोलन तथा मद्रास विधानसभा के हिन्दी को समाप्त करने का प्रस्ताव और मद्रास के मुख्यमंत्री की धमकियों का यह परिणाम है कि कांग्रेस कार्यकारिणी इस प्रकार का विचार कर रही है। यह स्थिति कांग्रेस के लिए अप्रतिष्ठाकारक होने के साथ ही उन तत्त्वों का हौसला बढ़ाने वाली है, जो केन्द्र को चुनौती देकर देश में पृथक्तावाद को बल देना चाहते हैं, किन्तु यह भी सत्य है कि जो गलत कदम उठाया गया है उसका परिमार्जन भी करना ही होगा। यदि यह काम सही ढंग से और सही दिशा में तथा दृढ़ता से उठाया गया तो लाभ होगा अन्यथा मामला और गम्भीर बन जाएगा।

अंग्रेजी अनिवार्य क्यों ?

कांग्रेस कार्यकारिणी ने जो हल सुझाया है वह देश के गले नहीं उतारा जा सकता। उन्होंने पुराने त्रिभाषा सूत्र का राग अलापा है तथा अंग्रेजी और हिंदी दोनों की अनिवार्यता पर बल दिया है। पिछला अनुभव और आज की भावनाएँ यह बताती हैं कि इस अनिवार्यता को न तो अंग्रेजी वाले मानने को तैयार हैं और न अंग्रेजी विरोधी। जहां तक अंग्रेजी का सम्बन्ध है वह पिछले सवा सौ वर्षों से देश भर में अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती रही है तथा राजकाज में भी उनका अबाध और अनिवार्य व्यवहार रहा है। जब तक यह अनिवार्यता समाप्त नहीं होती, भारत की भाषाओं के व्यवहार का प्रारम्भ भी नहीं हो सकता। जब भारतीय भाषाओं के राजभाषा के रूप में व्यवहार की बात की जाती है, तो कुछ लोग यह आपत्ति करते हैं कि यह काम एकदम झटके से नहीं हो सकता। उनकी आपत्ति सही है पर उसके लिए अंग्रेजी की अनिवार्यता बनाये रखने का हल गलत है, क्योंकि यदि अंग्रेजी अनिवार्य रही तो परिवतन की स्वतंत्रता ही नहीं रहेगी। वे लोग, परिवर्तन एक झटके में होता है, यही कल्पना करते हैं; किन्तु उस दिन को केवल टालना चाहते हैं या लोगों को भ्रम में डाल कर परिवर्तन की बात को खत्म कर देना चाहते हैं। वास्तविकता यह है कि सक्रमण काल में अंग्रेजी रहेगी, पर अंग्रेजी की अनिवार्यता नहीं रहेगी। 'अंग्रेजी हटाओ' का उद्देश्य 'अंग्रेजी की अनिवार्यता' हटाओ मात्र है। जो लोग अंग्रेजी के हामी हैं और उसके गुणों का वर्णन करते नहीं अघाते, उन्हें इससे नहीं डरना चाहिए—क्योंकि यदि अंग्रेजी में सच में कुछ शक्ति है तो वह अपने बलबूते पर टिक जाएगी, उसे राज्य के बल की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए और यदि वह निरर्थक बोझा है तो उसे ढोते रहने का कोई अर्थ नहीं। कांग्रेस कार्यकारिणी ने अंग्रेजी को अनिवार्य बनाने की बात कही है; वह कभी मान्य नहीं होगी।

अब प्रश्न हिन्दी की अनिवार्यता का आता है। संविधान के अनुसार तो २६ जनवरी १९६५ के बाद उसका प्रयोग अनिवार्य रूप से होना चाहिए, किंतु अभी यह स्थिति नहीं है। उसके कारण दो हैं। प्रथम तो शासन की इस दृष्टि से तैयारी नहीं है, दूसरे कुछ लोग हिंदी को केन्द्र की राजभाषा मानने को तैयार नहीं हैं। वे अंग्रेजी को ही चाहते हैं। दूसरा मत तो स्वीकार नहीं किया जा सकता, किंतु प्रथम कारण से उनको व्यावहारिक दृष्टि से कुछ साथी मिल जाते हैं। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम उनसे लड़ाई करने के झगड़े में न पड़ते हुए पहली बात की तैयारी करें। तैयारी के लिए हिंदी का प्रयोग करना पड़ेगा। 'किंतु जो हिन्दी नहीं जानते उनके लिए अंग्रेजी के प्रयोग की सुविधा देनी होगी। निश्चित ही यह स्थिति हिन्दी की अनिवार्यता की नहीं होगी। अनिवार्यता न रहने से यह हो सकता है कि अंग्रेजी को विदा होने में कुछ समय अधिक लगे, किन्तु उसके साथ ही प्रशासन और संक्रमण की कठिनाइयाँ भी कम हो जाएँगी तथा हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों को निखरने और रूढ़ होने का अवसर मिल जाएगा। किन्तु यह तभी सम्भव है जबकि हिंदी के प्रयोग की छूट हो तथा अंग्रेजी की अनिवार्यता न रहे।

अतः आज तो सर्वसम्मत हल यही हो सकता है कि अंग्रेजी और हिंदी दोनों में से किसी की अनिवार्यता न रहे तथा दोनों के प्रयोग की छूट हो। इससे दोनों पक्षों का समाधान होना चाहिए। दोनों भाषाओं में से जिसका दम होगा वह टिक जाएगी। क्या अंग्रेजीवाले इस चुनौती को स्वीकार करेंगे ? श्री अन्नादुराई इसके लिए तैयार नहीं दिखते। क्योंकि उन्होंने अँग्रेजी को अनिवार्य किया है तथा हिंदी की पढ़ाई को अनिवार्यतः बन्द किया है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि तमिलनाड़ में भी हिन्दी को वे बिना कानून का सहारा लिये नहीं रोक सकते। उनके इस कदम से घबराने की

जरूरत नहीं। वह दिन दूर नहीं जब मद्रास की जनता और विद्यार्थी अनुभव करेंगे कि उनका इससे नुकसान हुआ है तथा वे हिंदी की पढ़ाई के लिए आन्दोलन करेंगे। पर अन्नादुराई सोच रहे हैं कि वे इस हानि से बचने का उपाय स्वतन्त्र तमिलनाड़ बनाकर जनता को अपने पीछे ले आएंगे, परन्तु तमिल जनता की राष्ट्रीयता इतनी गहरी है कि निश्चित ही वह उनके चक्कर में नहीं आएगी। किंतु कांग्रेस द्वारा अनिवार्य हिन्दी का प्रस्ताव निश्चित ही उन्हें बल प्रदान करेगा।

संसद् द्वारा पारित प्रस्ताव में सरकारी नौकरियों में भर्ती के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों में से एक को अनिवार्य किया गया है। तर्क दिया जाता है कि जब शासन का काम इन दोनों भाषाओं में होगा, तब कम से कम एक का ज्ञान तो आवश्यक होना ही चाहिए। तर्क में बल है। किन्तु जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है उनका कहना है कि उन्हें अतिरिक्त पढ़ाई करनी पड़ेगी। जबकि हिन्दी भाषियों का काम अकेले हिन्दी से ही चल जाएगा। यह स्थिति विभेदकारी तो है ही, इससे हिन्दी का भी अहित होने की सम्भावना है। राज-सेवा-आयोग में एक प्रश्न-पत्र हिन्दी या अंग्रेजी का रहेगा। उमीदवारों को यह छूट रहेगी कि वे दोनों में से किसी एक भाषा की परीक्षा में बैठें। स्पष्ट है कि जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है वे हिन्दी के प्रश्न-पत्र में उनके साथ सहज नहीं टिक पाएंगे, जिनकी मातृभाषा हिन्दी है। फलतः वे अंग्रेजी ही लेंगे। इसी प्रकार गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आन्ध्र, कर्णाटक, केरल प्रांतों में भी जहाँ हिन्दी बड़ी तेजी से बढ़ रही है अंग्रेजी को चुना जायगा। अतः आवश्यक यह है कि राजसेवा की भर्ती की परीक्षा के लिए न तो अंग्रेजी और न हिंदी को अनिवार्य किया जाए। जब सब पढ़ाई मातृभाषा के माध्यम से होने वाली है तथा राजसेवा आयोग की परीक्षाएं भी मातृभाषा के माध्यम से होने वाली हैं, तो हिन्दी या अंग्रेजी के अलग प्रश्नपत्र की आव-

श्यकता नहीं है। हाँ, भर्ती के उपरान्त स्थायी होने के पूर्व इन भाषाओं में से किसी भी एक में परीक्षा पास करना आवश्यक होना चाहिए। इस परीक्षा के अंकों का परिणाम कर्मचारी की सेवा की शर्तों पर नहीं होना चाहिए। उत्तर-प्रदेश में अंग्रेजी काल में राजकाज में हिन्दी और उर्दू के सम्बन्ध में वही व्यवस्था लागू थी।

जिनकी मातृभाषा हिन्दी है उनके लिए एक अहिंदी भाषा का अध्ययन आवश्यक और उपयोगी होगा। अथवा काम में इस प्रकार से भी लोगों के लिए कम से कम दो भाषाओं का ज्ञान आवश्यक होगा। यह न्याययुक्त तो होगा ही बल्कि इससे भी अधिक हिंदी के अखिल भारतीय पृष्ठभूमि में विकसित होने के लिये लाभकारी होगा।

अतः हमें त्रिभाषा सूत्र के स्थान पर द्विभाषा सूत्र की ही आवश्यकता है—मातृभाषा और हिन्दी या संक्रमणकाल में अंग्रेजी तथा जिनकी मातृभाषा हिंदी है, उनके लिए एक अन्य भारतीय भाषा। भारतीय जनसंघ ने कालीकट अधिवेशन में यही सूत्र स्वीकार किया है। यह उस विशाल जनमत का प्रतिनिधित्व करता है, जो आज देश में व्याप्त है तथा अनिवार्यता के सिद्धान्त का परित्याग करने के कारण उन लोगों के भी मुंह बन्द कर देता है जो किसी एक ही कोटि का विचार करते हैं। मैं शासन से आग्रह करूंगा कि वह पूर्वाग्रह तथा दुराग्रह का परित्याग कर इस आधार पर ही भाषा-व्यवस्था में संशोधन करे। उसने अन्यथा किया तो वह आन्दोलन को व्यापक और उग्र ही करेगा।

('पाञ्चजन्य' साप्ताहिक से साभार)

९

पाँच नेताओं के उद्गार

(क)

'यद्यपि एक के बाद एक आगे आता रहेगा'

—श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर 'गुरु जी'

मन में बड़ा विषाद छा गया है। क्या हुआ होगा और किस प्रकार से यह मर्मबेधी घटना घटी होगी, इसका तो पता लगाने वाले लगाएंगे। कुछ भी पता लगे, अपने संघ का एकनिष्ठ कार्यकर्ता उठ गया। जीवन के यौवन में आगे अनेक प्रकार से कार्य करने की क्षमता उनकी बढ़ती ही जा रही थी। परन्तु अब उस समृद्ध क्षमता का लाभ प्राप्त होने की सम्भावना नहीं रही।

दो-तीन दिन पहले मैं मिला था। बड़े आनन्द और प्रेम से बातचीत हुई थी। मैंने पूछा था कि "तुम्हारा आगे का क्या कार्यक्रम है? कहाँ मिलोगे? उन्होंने कहा कि "मैं पटना जा रहा हूँ। कुछ दिन बाद कानपुर में मिलूंगा।' पटना पहुँचने के पूर्व ही यह काण्ड हो गया।

आदर्श स्वयंसेवक

बाल्यकाल अर्थात् छात्रजीवन से ही स्वयंसेवक के नाते जो अपने कर्त्तव्य

का बोध प्राप्त कर लेते हैं और समग्र जीवन की शक्ति संघ-कार्यार्थ ही समर्पित करने वाले जो थोड़े से लोग रहते हैं, उनमें उनका बड़ा स्थान था। संघ के स्वयंसेवक से अपेक्षा रहती है कि वह अपने अन्दर स्वयंसेवक के सब गुण कायम रखे, अपने संगठन का ध्यान रखे, तथा उसके भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों की महत्ता को हृदय में जागृत रख कर उनमें सम्मिलित होता रहे, और उसे यदि अन्य कोई काम भी करने के लिए दिया जाये तो वह परिश्रम से निभाये, वह कार्य किसी भी क्षेत्र का क्यों न हो। उनको (दीनदयाल जी को) राजनीति में काम करने के लिए कहा गया और उन्होंने वह किया। कितनी योग्यता से किया, उसकी कल्पना कुछ लोगों की होगी; परन्तु यदि अब यह कहा जाए कि अब भारतीय जनसंघ के नाम से देश में जो राजनीतिक संगठन खड़ा है, वह उनकी योजनाबद्ध परिश्रम-शीलता का ही परिणाम है, तो अत्युक्ति न होगी, जनसंघ में बहुत से लोग बोलने वाले रहे, बहुत से दौड़धूप करने वाले रहे, बहुत से केवल शोभा देने वाले रहे, परन्तु नींव के पहले पत्थर से काम प्रारम्भ करके इतनी ऊँची मर्यादा तक कार्य पहुँचाने का श्रेय यदि विशेषतः किसी व्यक्ति को है, तो उन्हीं को देना पड़ेगा।

वे उसके सर्वोच्च पद पर भी पहुँचे। यद्यपि मेरी इच्छा नहीं थी कि वे अध्यक्ष-पद ग्रहण करें और उनकी भी इच्छा नहीं थी। मुझे उनसे कहना पड़ा था कि थोड़े समय के लिए, साल भर के ही लिए, आपद्धर्म के रूप में, अध्यक्ष-पद स्वीकार कर लो—इसलिए उन्होंने इस पद को स्वीकार किया; नहीं तो वे स्वीकार करने वाले नहीं थे। उन्हें मान-मान्यता या पद की लिप्सा नहीं थी और इसीलिए उनके मन में अध्यक्ष पद स्वीकार करने की बिल्कुल इच्छा नहीं थी। मैं भी नहीं चाहता था, परन्तु किसी न किसी परिस्थिति के कारण मुझे भी एक प्रकार से बाध्य होकर उन्हें पद-ग्रहण के लिए कहना पड़ा था। और मेरे कहने के कारण, स्वयंसेवक जिस तरह निर्देश-आदेश का पालन करता है, इसी नियम के अनुसार उन्होंने उसका पालन किया।

उनकी अध्यक्षता के समय से थोड़े दिनों में ही जन-मानस के ऊपर बड़ा अच्छा परिणाम दिखाई पड़ा। बड़े-बड़े विरोधी भी सोचने लगे कि अन्ततोगत्वा देश की बागडोर संभालने वाला यही राजनीतिक (जनसंघ का) कार्य है। कुछ लोग यह भी कहने लगे कि इसके पीछे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जो शक्ति है, वह व्यक्ति के रूप में मूर्तिमान खड़ी है।

तीन बलिदान

ऐसा दिखाई देता है, जनसंघ का निर्माण कुछ बड़ी ही कठिन स्थिति में हुआ है। उसका भाग्य खराब है। पहले उसके अध्यक्ष डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी थे, उनकी एक प्रकार से राजनीतिक हत्या हुई। फिर उसके बाद बड़े भाग्य से डॉ० रघुवीर प्राप्त हुए। वे भी बड़े योग्य पुरुष थे। उनके कारण विदेशों में भी इस राजनीतिक क्षेत्र का बोलबाला हो सकता था और प्रभाव निर्माण हो सकता था, किंतु थोड़े ही दिनों में उनका अपघात हो गया और इसके बाद सर्वांग-परिपूर्ण कार्य करने वाला जो अध्यक्ष (दीनदयाल जी) प्राप्त हुआ, वह अब इस प्रकार गया।

मैं काशी गया था, उनके शरीर को देखने के लिए। विमान से शरीर को विदा करने के बाद यहाँ आया; परन्तु मैंने आंसू नहीं बहाये। कुछ पता नहीं लोगों ने मेरे बारे में क्या समझा होगा। अपने पुराने सुभाषितों में यह वचन आता है कि 'जो कार्यार्थी है, वह दुःख और सुख इन दोनों को अवहेलित करके काम करता है—'मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखम् न च सुखम्।' भगवत्कृपा से मेरे मन की शायद ऐसी ही कुछ स्थिति बन गई है और मैं उसको पचाकर चलने के लिए प्रस्तुत हुआ हूँ। अब दूसरा कोई भी उतनी योग्यता से कार्य उठाने के लिए आगे नहीं आएगा, ऐसी कोई बात नहीं है। कार्य बड़ा है, संगठन का कार्य है, अनेक कार्यकर्त्ताओं की परम्परा विद्यमान है, जो एक के बाद एक आगे आते रहेंगे। कोई स्थान रिक्त नहीं रहेगा और मुझे पूर्ण आशा है कि ऐसा ही होगा। इस संबध में अधिक नहीं बोलता। जितना बोलूं थोड़ा ही है। सहना तो पड़ेगा ही।

इतना बोलने के लिए भी मन के ऊपर नियंत्रण रखने में बहुत परिश्रम करना पड़ा। ईश्वर की कृपा से नियंत्रण रख सका। उसका परिणाम शरीर की थकावट के रूप में बहुत अधिक हुआ। मैं प्रत्यक्ष करुण दृश्य देखकर आया हूँ, इसलिए सोचा कि इसका उल्लेख सबके सामने कर दूँ।

सर्वांग परिपूर्ण योग्यता

हममें से प्रत्येक यह अनुभव करे कि उनकी जैसी सर्वाङ्ग परिपूर्ण योग्यता अपने अन्दर भी आवे। उनकी तरह दायित्व निभाने की योग्यता हरएक को बढ़ानी चाहिए। मेरे कहने का यह अर्थ नहीं लगाना चाहिए कि मैं सब लोगों को राजनीतिक क्षेत्र की ओर अपना झुकाव करने के लिए कह रहा हूँ। वस्तुतः झुकाव तो बिलकुल होना ही नहीं चाहिए। जिस व्यक्ति का मैंने यहाँ उल्लेख किया, उसका राजनीतिक क्षेत्र की ओर कतई झुकाव नहीं था। पिछले वर्षों में, कितनी ही बार मुझसे उन्होंने कहा—"किस झमेले में मुझे डाल दिया। मुझे फिर से अपना प्रचारक का काम करने दें।" मैंने कहा—"भाई तुम्हारे सिवाए इस झमेले में किसको डालें ?" संगठन के कार्य पर जिसके मन में इतनी अविचल श्रद्धा और दृढ़ निष्ठा है, वही उस झमेले में रहकर, कीचड़ में भी कीचड़ से अस्पृश्य रहता हुआ सुचारु रूप से वहाँ की सफाई कर सकेगा, दूसरा कोई नहीं कर सकेगा। इसलिए मैंने कहा कि उधर (राजनीतिक क्षेत्र) की ओर अपना झुकाव करने के लिए मैं किसी को नहीं कह रहा।

(जौनपुर में प्रकट किए गए शोकोद्गार)

★

"How Can I explain to you my difficulty ? The wound is deep, very deep. I do not know when it will heal, or if ever it will heal. Words fail me. The pain is beuumbing. I simply can't write throgh I would very much like to......"

—Shri Guruji

(ख)

'उनकी राख से सैकड़ों दीनदयाल पैदा होंगे'

—श्री बालासाहब देवरस

मनुष्य मरणधर्मा है । हम सभी की मृत्यु एक न एक दिन होनी है । किन्तु श्री दीनदयाल जी की मृत्यु ने हम सभी को मृत बना दिया है । श्री दीनदयाल जी के अभाव की कल्पना करना ही हम सबके लिए कठिन है ।

श्री दीनदयाल जी हम सबके प्रिय थे । यदि दीनदयाल जी बीमार पड़े होते तो हजारों में उनकी सेवा करने की होड़ लग जाती । यदि उन्हें रक्त की आवश्यकता पड़ती तो हजारों लोगों में रक्तदान की होड़ लग जाती । यदि उनका जीवन खतरे में है, पता लगता तो हजारों लोग उनकी रक्षार्थ अपना जीवन चढ़ाने को तत्पर हो जाते, किन्तु वे हमको सेवा का कोई भी अवसर दिए बिना ही चले गए । हमारा कष्ट और दर्द असहनीय है ।

१९३७ में जब वे संघ के स्वयंसेवक बने तब से मेरा उनसे परिचय था । उनमें अनेक गुण विद्यमान थे और समय के साथ-साथ उनके गुण प्रकट होते जा रहे थे । श्री दीनदयाल जी प्रतिभा के पुंज थे, साधना की मूर्ति थे । जब रात्रि में सब सो जाते थे, तब वे लिखना और पढ़ना आरम्भ करते थे और यह क्रम पर्याप्त देर तक चलता रहता ।

उपाध्याय जी ऐसे महान् थे कि सभी उनसे प्रेम करते थे और सभी उनकी प्रशंसा करते थे । जैसा कि उनके विषय में श्री नाथ पै ने सार्वजनिक शोकसभा में गीता का उदाहरण प्रस्तुत किया था—"लोग उनकी प्रशंसा करते हैं, जिसके मन में किसी के विरुद्ध कोई बात नहीं होती, जो भय-द्वेष और आत्म-प्रशंसा से परे होता है और ऐसा ही प्राणी मुझ (भगवान्) को भी प्रिय होता है ।" श्री दीनदयाल जी ऐसे ही प्राणी थे ।

श्री दीनदयाल जी को देख कर मुझे किसी अन्य की नहीं, अपितु संघ के संस्थापक डा० हेडगेवार की स्मृति हो आती है, जिनकी ईमानदारी से सभी उनसे प्रभावित होते थे और हम सब एक चुंबक की भांति उनके प्रति खिचते चले जाते थे । श्री उपाध्याय जी भी ऐसे ही थे ।

मेरा गत ३० वर्षों से उनके साथ घनिष्ट परिचय था। इस अवधि में मैंने कभी उनको यह कहते नहीं सुना कि उन्होंने यह किया और वह किया है। अहंभावना या 'मैं' शब्द का प्रयोग उन्होंने शायद ही कभी किया हो। इस संसार में उनका निजी सामान था—उनका बिस्तर, कुछ कपड़े और पुस्तकें। वे न तो अपने विषय में ही कुछ बोलते थे और न वे किसी की बुराई ही करते थे। वे तो गुणों के सागर थे।

ऐसे महामानव का तिरोहित होना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जनसंघ और देश पर एक क्रूर आघात है। किन्तु हम केवल चीत्कार करते हुए हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठे रह सकते। डा० हेडगेवार भी इसी आयु में स्वर्ग सिधारे थे। उस समय कुछ लोगों ने सोचा था कि डाक्टर साहब की मृत्यु के बाद संघ समाप्त हो जाएगा। किंतु संघ जीवित रहा और आज भी जीवमान है। इसी प्रकार श्री दीनदयाल जी के निधन से जनसंघ को कोई धक्का नहीं पहुँचने दिया जा सकता।

श्री दीनदयाल जी एक स्वयंसेवक थे और उनकी प्राथमिक निष्ठाएँ संघ के प्रति ही थीं। दीनदयाल जी विभिन्न प्रांतों के उन कुछ कार्यकर्ताओं में से थे, जिन्हें डा० हेडगेवार से भेंट करने तथा उनसे प्रेरणा लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। डा० हेडगेवार कहा करते थे कि एक अच्छा स्वयंसेवक वह नहीं है, जिसके बिना संघकार्य चल ही नहीं सकता। एक अच्छा स्वयंसेवक तो वह है जो अपने जैसे अन्य अच्छे स्वयंसेवकों का निर्माण करता है। उसके अभाव में भी कार्य चलाया जा सकता है। अच्छा स्वयंसेवक वह नहीं है, जिसने स्वयं को ही मुख्य बिन्दु बना लिया है, अपितु वह है जो इस केन्द्र-बिंदु को विकीर्ण कर सकता है। दीनदयाल जी के जीवन का आदर्श यही था। सारे देश में उन्होंने कार्यकर्ताओं को नेता बनाया था। दीनदयाल जी की राख से सैकड़ों दीनदयाल उत्पन्न होंगे।

यदि जनसंघ कार्यकर्ताओं ने यह विचार किया कि किसी विशेष परिस्थिति में पण्डित जी ने क्या कहा था और क्या किया था, तो वे कभी गलती नहीं कर सकते हैं।

(ग)

हे सहयोगी हुतात्मा !

श्री भाऊराव देवरस

मेरे सहयोगी,

श्रद्धांजलि स्वीकार करो। तुम्हारे जीते जी, कभी प्रशंसा के दो शब्द न कहे होंगे, लिखना तो दूर रहा। कालीकट के अधिवेशन में जब तुम जनसंघ के अध्यक्ष बने, एक बार सोचा था कि तुम्हारा मित्र, निकट सहयोगी के नाते मैं तुम्हारे गौरवान्वित होने पर दो शब्द प्रशंसा के लिखूं। परन्तु तत्काल विचार आया कि अपने बीच यह औपचारिकता जैसी बात होगी और यह तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा। मैंने लिखने का विचार छोड़ दिया। अब मेरे शब्द सुनने के लिए तुम नहीं हो, इसे पढ़ नहीं सकोगे। इसलिए अश्रुपूर्ण नयनों से श्रद्धांजलि समर्पित कर रहा हूँ। अढ़ाई वर्ष पूर्व, जिनके स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन में मैं कार्य कर सका, वे भय्याजी दाणी चले गये। आज क्रूर काल ने संघकार्य का मेरा निकटस्थ साथी, सहयोगी छीन लिया।

जुलाई १९३७ में मैं सघकार्य व पढ़ने के लिए लखनऊ आया और मेरी तुम्हारी भेंट उसी वर्ष के अन्तिम दिनों में कानपुर में हुई। मकर-संक्रमण पर जब तुम उस वर्ष कानपुर शाखा के प्रथम स्वयंसेवक बने तबसे निरन्तर स्नेह मित्रता बढ़ती गयी। तुम सन् ३९ में कानपुर में पढ़ाई समाप्त कर एम० ए० करने के लिये आगरा गये। मेरी पढ़ाई समाप्त हो चुकी थी, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आगरा चला आया। आगरा में संघकार्य का प्रथम प्रयास तुम्हारा ही रहा। आगरा से तुम पढ़ने के लिए प्रयाग आये, एल० टी० की पढ़ाई करने। हमारा सम्बन्ध बढ़ता ही गया और शिक्षा समाप्त कर तुम संघ-कार्यार्थ निकल पड़े। बिना कुछ बोले—भगवान् ने तुम्हें इसी निमित्त तो जन्म दिया था।

संघ के उन प्रारम्भिक दिनों में जब कार्य अत्यन्त कण्टकाकीर्ण था—उस समय तुम इस कार्य के लिये चल निकले। तब संघ कार्य के विचारों को उत्तर-प्रदेश में कोई जानता नहीं था। तुमने स्वयंसेवक के नाते इस कार्य की धुरी अपने कंधों पर उठा ली। उत्तर-प्रदेश के संघकार्य की नींव में तुम ही हो। आज का यह संघ रूप तुम्हारे ही परिश्रम का, तुम्हारे कर्तृत्व का फल है। अनेक संघ-कार्यकर्ता तुम्हारे जीवन से प्रेरणा लेकर चल रहे हैं—इस मार्ग

पर। अपने जीते जी तुम इसी मार्ग पर चलने के लिए अनेकों को प्रोत्साहित करते रहे—और आज मरकर भी तुम करोड़ों देशवासियों को प्रेरणा देते रहोगे—इसी कर्त्तव्य पथ पर चलने के लिये।

संघ संस्थापक के मुख से आदर्श स्वयंसेवक के गुणों पर भाषण सुना था, तुम उसके मूर्तिमंत प्रतीक थे। प्रखर बुद्धिमत्ता, असामान्य कर्तृत्व, परन्तु निरहंकार, नम्रता के आदर्श। आश्चर्य लगता था तुम्हारे प्रगल्भ विचार और चिन्तन की गम्भीरता का—परन्तु इसके साथ ही तुम्हारा सादा सरल जीवन बड़ा ही मनोहारी संगम था उन सब बातों का, जो संघ के प्रत्येक स्वयंसेवक के जीवन में सतत् साधना के विषय माने जाते हैं। असामाम्य कर्तृत्व कला के तुम धनी थे, परन्तु भाषणबाजी का अभिमान कहीं छू भी नहीं पाया था। तुम उच्चकोटि के लेखक थे, किंतु अपनी डिमडिम बजाने से दूर-दूर, बहुत दूर। तुमने राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया, नेता बने, मालाएँ पहनीं, जय-जयकार सुनी, फोटो देखे, सम्पूर्ण देश में प्रसिद्धि प्राप्त की, किन्तु तुम सदैव बने रहे एक 'आदर्श स्वयंसेवक'। राजनीति तुम में कभी प्रवेश नहीं कर पायी। राजनीति की वारांगना तुम्हारे निर्मल पावित्र्य के कारण तुम्हें छू सकने का साहस न कर सकी, राजनीति का नशा तोस्बिहुत दूर की बात थी।

गीता में मैंने सात्त्विक गुणों का वर्णन पढ़ा है। दैवी संपदा की बातें सुनी हैं। अनाशक्त, निष्काम कर्मयोगी आदि शब्द कान पर आते रहे, परन्तु उनका प्रत्यक्ष रूप आचरण तुमने चरितार्थ किया। शुद्ध चरित्र, देशभक्ति, लोकसंग्रही, समाज के सुख-दुख के साथ एकरूप होने वाला विशाल हृदय। सचमुच तुम्हारे समान तुम ही थे।

विचार आता है अपने संघ के पूज्य आद्य सरसंघचालक का। कुछ बातों में कितना विलक्षण साम्य दिखाई पड़ता है। उनके ही समान तुम्हारे भी बाल्यकाल में माता-पिता तुम्हें छोड़कर चले गये। उनका जन्म भी दारिद्रय में हुआ और तुम्हारा भी, परन्तु उनके समान ही तुमने स्वावलम्बन से श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी-जीवन में ही राष्ट्रसेवा का व्रत ग्रहण किया और धन, सुख, परिवार—सब प्रकार की मोहमाया को त्यागकर राष्ट्रदेवता के

चरणों पर तुमने भी अपने को समर्पित कर दिया। संघ-संस्थापक पूजनीय डाक्टर जी अहोरात्र लगातार १५ वर्ष संघ कार्य करते-करते उसी परिश्रम से अपने शरीर को गलाकर चले गये, तुमने राजनीति के क्षेत्र में—जनसंघ के क्षेत्र में जनसंघ के निर्माण हेतु १५ वर्ष तिल-तिल जलकर आत्माहुति दे दी। पूजनीय डाक्टर जी ५१ वर्ष समाप्त कर गये और तुम भी इसी आयु में इह-लोक छोड़कर चले गये। तुम उनके सच्चे अनुयायी बने। राष्ट्र-समर्पित जीवन की उपलब्धि के शीर्षबिन्दु से तुम्हें अब कोई हटा नहीं सकेगा। तुम्हारा बलिदान वहाँ से सतत् अनेक अन्तःकरणों को ज्योतित करता रहेगा। आज समाज तुम्हारे श्रेष्ठत्व को कितना आंक सकेगा? किन्तु यह निश्चित है कि भावी इतिहास तुम्हारे विचार और कार्य को इस देश में तेजस्वी शक्तिशाली रूप में देखेगा और महापुरुषों की श्रेणी में तुम्हारा मूल्यांकन होगा। स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा गान्धी आदि की हौतात्म्य-मालिका में तुम भी गूँथे जाओगे। देश तुम्हारा सम्मान करेगा।

राजनीति के क्षेत्र में व्यक्ति और नीति के सम्बन्ध में कठोरता पूर्वक स्पष्ट आलोचना सुनने वाला तुम्हारे जैसा कौन होगा? वैसा मित्र अब नहीं रहा। तुम्हारे जैसी सब कुछ सहन करने की शक्ति बहुत विरल पाई जाती है। संघ क्षेत्र की समस्या, उलझनें और उनका विश्लेषण करने के लिए साथी के नाते भी तुम्हारे जैसा कहाँ ढूँढूंगा? बस, अब सब कुछ मौन हो गया। मौन ही कर्त्तव्य पथ पर चलना होगा—बढ़ना होगा।

अब नागपुर की संघ-बैठकों में तुमसे भेंट नहीं होगी। अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त बिखरा हुआ सामान, रात्रि में देर तक जागनेवाला और इसी कारण देरी से प्रातः उठने वाला 'निकट' का स्थान रिक्त रहेगा। "पंडित जी, चाय तैयार है, उठो!" चिल्लाने वाला मैं अब सदैव मौन रहूँगा। भोजन के समय तुम नहीं दिखाई देते थे तब "अरे! पंडित जी को स्नानगृह में ढूंढो" कहने वाला मैं और मेरे बाल-विनोद अब समाप्त हो गए। केन्द्रीय बैठक में किसी

भी प्रश्न पर पक्ष-उपपक्ष दोनों का विचार करते चलने की तुम्हारी परिपाटी और उस कारण तुम्हारे "खर" शब्द पर हुए सबका हास्य-विनोद, वे सब मधुर व्यंग्य अब केवल स्मृति के विषय बन गये हैं। और साथ ही लखनऊ में अकस्मात् भेंट होने पर सहज होने वाली आमोद-प्रमोद के कार्यक्रमों का साथी छूट गया।

तुम्हारे लेख, वाणी, वार्तालाप सब-सब सदैव के लिए समाप्त हो गए। हे सहयोगी हुतात्मा! मेरा प्रणाम स्वीकार करो और कर्त्तव्य-पथ पर चलने वाले सतत् प्रेरणा शक्ति देते रहो। यही नम्र प्रार्थना है।

'हम चुनौती स्वीकार करते हैं'

—अटलबिहारी वाजपेयी

नन्हा दीप बुझ गया, हमें अपने जीवन-दीप जला कर अंधकार से लड़ना होगा।

सूरज छिप गया, हमें तारों की छाया में अपना मार्ग ढूंढना होगा।

हमारा मित्र, सखा, नेता और मार्गदर्शक चला गया, हमें उनकी पवित्र-स्मृति को हृदय में संजो कर ध्येय-पथ पर आगे बढ़ना होगा।

पण्डित जी का जीवन एक समर्पित जीवन था। शरीर का कण-कण और जीवन का क्षण-क्षण उन्होंने राष्ट्रदेव के चरणों में चढ़ा दिया था।

सम्पूर्ण देश उनका घर था, सारा समाज उनका परिवार। उनकी आंखों में एक ही सपना था, उनके जीवन का एक ही व्रत था।

राजनीति उनके लिए साधन थी, साध्य नहीं। यह मार्ग था, मंजिल नहीं। वे राजनीति का आध्यात्मीकरण चाहते थे। वे भारत के उज्ज्वल अतीत से प्रेरणा लेते थे तथा उज्ज्वलतर भविष्य का निर्माण करना चाहते थे। उनकी आस्थाएं सदियों पुराने अक्षय राष्ट्रजीवन की जड़ों से रस ग्रहण करती थीं, किन्तु वे रूढ़िवादी नहीं थे। भविष्य के निर्माण के लिए वे भारत को समृद्धिशील आधुनिक राष्ट्र बनाने की कल्पना लेकर चले थे।

वे महान् चिन्तक थे। चिन्तन के क्षेत्र में वे बंधे-बंधाये रास्ते से चलने के हामी नहीं थे। इसलिए उन्होंने भारतीय जनसंघ को ऐसा विकसित किया जो अतीत की गौरवगरिमा को लेकर चलता है और जो आने वाले कल की चुनौती का सामना करने के लिए भी सन्नद्ध है। आज जनसंघ जो कुछ है, वह सब उन्हीं की देन है।

उन्हें कभी किसी पद ने मोहित नहीं किया। वे संसद् के सदस्य नहीं थे, लेकिन संसद्-सदस्यों के निर्माता थे। उन्होंने कभी पद नहीं चाहा। बड़ी मुश्किल से उन्हें अध्यक्ष पद का भार संभालने के लिए तैयार किया था। उन्होंने प्रेरणा दी कि चलो विन्ध्याचल के पार कन्याकुमारी पर जहाँ भारत माता के चरणों को सिंधु धो रहा है, भारत की एकता का जागरण मंत्र फूंकें। उनके नेतृत्व में हमने आसेतु-हिमाचल भारत की एकात्मता को गुंजाने का संकल्प किया। कालीकट अधिवेशन हुआ। हम वहां गए। उनकी अध्यक्षता में अधिवेशन सफल हुआ। लोगों ने कहा कि जनसंघ ने कार्यसिद्धि का ऐतिहासिक दृश्य उपस्थित किया। जनता की आंखें आशा और विश्वास के साथ उन पर जा लगी थीं, देश और विदेश के लोगों ने कहा कि कालीकट में जनसंघ ने नया रूप धारण किया है, परन्तु जनसंघ ने नया रूप नहीं धारण किया—देखने वालों की आंखों में बदल आया था। उन्हीं आंखों में कुछ आंख ऐसी थीं जिनमें पाप था; जलन थी; जिनमें हिंसा की चिनगारी सुलग रही थी, उन आंखों को यह दृश्य चुभा और आज पंडित दीनदयाल जी को हमसे विलग कर दिया। किन परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हुई कोई विश्वासपूर्वक नहीं कह सकता। जाँच हो रही है, किन्तु जिसके इशारे पर लाखों लोग जान देने के लिए तैयार थे, सन्नद्ध थे, उसे रात के अंधेरे में अपने अनुयायियों से दूर, देशवासियों से पृथक् मौत की गोद में ढकेल दिया। यह घाव सदा हरा रहेगा, यह काँटा हमारे हृदय में सदैव कसकता रहेगा।

पंडित जी जिस कार्य के लिये जन्मे, जिये और जूझे, उसी के लिए होतात्म्य (शहादत) स्वीकार कर उन्होंने अपना जीवन व्रत पूर्ण कर लिया। किंतु उनका स्वप्न अभी अधूरा है। उनका कार्य अभी अपूर्ण है।

उनके जीवन पर किया गया आक्रमण राष्ट्रीयता पर आक्रमण है। उनके शरीर पर लगी हुई चोटें लोकतंत्र पर किये गये प्रहार हैं। हम राष्ट्रविरोधियों और लोकतंत्र के शत्रुओं की इस चुनौती को स्वीकार करते हैं।

उपाध्याय जी को हमसे छीन कर जो लोग यह समझते हैं कि जनसंघ की प्रगति का रुद्ध कर देंगे, वे न ही उपाध्याय जी को पहचान पाए और न वे यही जानते हैं कि हम उनके अनुयायी किस मिट्टी के बने हैं।

उपाध्याय जी का कार्य व्यक्तिनिष्ठ नहीं; तत्वनिष्ठ था। उन्होंने सदैव आदर्शों पर बल दिया और सिद्धान्तों के लिए जीना सिखाया। उनके वियोग में व्यथित होकर न हम अपने होश-हवाश गुम होने देंगे, और उनके देहावसान के दारुण दुःख से उत्पन्न अकर्मण्यता को ही अपने ऊपर हावी होने देंगे। हमें स्वयं को पण्डित जी का योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध करना है। हमें उनके ऋण को चुकाना है।

आइये, पण्डित जी के रक्त की एक-एक बूंद को माथे का चन्दन बनाकर ध्येय-पथ पर अग्रसर हों। उस चिता से निकली हुई एक-एक चिनगारी हृदय में धारण कर परिश्रम की पराकाष्ठा और प्रयत्नों की परिसीमा करें। इस नव दधीचि की अस्थियों का वज्र बनाकर आधुनिक वृत्रासुरों पर टूट पड़ें और इस पवित्र भूमि को निष्कटक बनायें।

पण्डित जी अब नहीं रहे। किन्तु उनका कार्य अभी शेष है। उनके लिए स्वयं को समर्पित करके हम उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

★

(ङ)

'हत्यारी दुर्भावनाओं को रौंदते हुए हम आगे बढ़ेंगे'

—सुन्दरसिंह भण्डारी

गत दिसम्बर मास में पं० दीनदयाल जी उपाध्याय जनसंघ के अध्यक्ष बने, उसके बाद मुझे महामंत्री का कार्य सौंपा गया, किंतु उनकी अनुपस्थिति में मुझे किस पद पर रहना है और क्या कार्य करना है इसका विशेष अन्तर नहीं था। उनके स्नेह की छत्रछाया में और उनके मधुर सम्बन्ध की प्रेरणा से उन के मार्गदर्शन में हम सबने कार्य किया है। डा० श्यामाप्रसाद जी मुखर्जी ने जनसंघ के मंच की स्थापना की और पण्डित दीनदयाल जी ने उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की। जनसंघ के विचारों को उन्होंने मंत्र रूप में हमारे सामने रखा। राजनीति के क्षेत्र में उत्तेजना और आन्दोलन के वशीभूत भटकावा आना स्वभाविक माना जाता है। पण्डित दीनदयाल जी ने सुदृढ़ सिद्धांत-पक्ष उपस्थित किया, जिससे राजनीति अपने मार्ग में मर्यादा विहीन न हो सके। इन सिद्धांतों के आधार पर समय-समय पर विभिन्न कठिनाइयों एवं समस्याओं से जूझने के लिए उन्होंने मार्गदर्शन किया। भारतीय जनसंघ उन सिद्धांतों के लिए बना है। उसी कसौटी पर हर एक प्रश्न पर निर्णय देने का नियम बनाया गया है। पण्डित जी द्वारा निर्मित यह नियम परम्परा उनके जाने के बाद भी स्थायी धरोहर के रूप में विद्यमान है। 'एकात्म मानवतावाद' का मंत्र जो पंडित जी ने हमें दिया है, हमारे लिए प्रकाशपुञ्ज है। समाज के सभी वर्गों का साथ लेकर उनके हितों की चिंता करते हुए इस देश की नीतियां बनायी जाएं, उन्होंने जनसंघ के विचारों के मूल में यही बात रखी।

विश्वास की बात

इन महत्वपूर्ण विचारों को कार्यकर्ताओं के समक्ष रखने की उनकी पद्धति भी अनूठी थी। लाखों अनुयायी देश में ऐसे हैं जो केवल इसीलिये कि यह बात श्री दीनदयाल जी ने कही है, मान लेने के लिए सदैव तैयार रहते हैं। कार्यकर्ताओं का ऐसा विश्वास उन्हें प्राप्त था। किंतु उन्होंने उस विश्वास का उपयोग कभी अपनी बात मनवाने के लिए नहीं किया। न कभी आग्रह किया। बहुधा राजनीति के क्षेत्र में बहुमत की बात कही जाती है, किंतु पण्डित जी तो प्रत्येक कार्यकर्ता को समझने तथा समझाने का प्रयत्न करते थे। एक भी कार्यकर्ता क्यों न हो, विभिन्न उदाहरण देकर पूरी कोशिश के साथ उसकी सब शंकाएँ निर्मूल करने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। पण्डित जी प्रत्येक कार्यकर्ता की भावना को समझते थे। उनकी भावना का आदर करते हुए उन शब्दों का चयन करते थे कि वह निश्चय कार्यकर्ताओं का सामूहिक निश्चय प्रकट होता था। इसी कारण ऐसा होता था कि कार्यकर्ता अपनी बात उनके सामने रखकर निश्चिन्त हो जाता था। वे जैसा चाहें उन भावनाओं को शब्दों का रूप देते थे। इसी पद्धति में से संभवतः कुछ लोगों को ऐसा लगा कि यदि पंडित दीनदयाल जी नहीं रहेंगे तो यह संगठन गूंगा पड़ जावेगा। यह बात भी सच है कि हम सबने उन पर बहुत बोझ डाल रखा था। वे सगठन की माँ बने थे।

उन पर सब कुछ सौंपकर हम भी कुछ आलसी बन गये थे। कार्य की सब प्रकार की चिन्ता करते हुए पण्डित दीनदयाल जी नित्य परिश्रम में रत रहे। पंडित जी का स्वास्थ, शरीर इन कारणों से किस प्रकार पीड़ित होता था, यह सब देखने का दुर्भाग्य हमें मिला है। किन्तु उन्होंने कभी चेहरे पर शिकन नहीं आने दी। अधिवेशनों में, बैठकों में अथवा कार्यकर्त्ताओं के साथ वार्त्तालाप करते समय कब किस बात के लिए समय मिलेगा उसका भी ध्यान नहीं रहता था। स्नान, भोजन भी ठीक समय पर नहीं हो पाता था। बड़ी-बड़ी

गंभीर समस्याओं से लेकर संगठन के छोटे से छोटे पहलू पर भी उनकी दृष्टि रहती थी। छोटे से छोटे कार्यकर्त्ता और साधारण सदस्य के सहयोग तक को वे ध्यानपूर्वक देखा करते थे। उनकी छोड़ी हुई इस कड़ी को हमें आगे बढ़ाना है। जिनके दिमाग में यह धारणा बैठ गई है कि इस संगठन के शीर्ष-बिन्दु पर बैठे व्यक्ति को चोट पहुंचाकर वे इसे तहस-नहस कर सकेंगे, उनकी दुर्भावनाओं को रौंदते हुए हम आगे बढ़ेंगे।

संगठन पर भीषण आघात हुआ है और उनकी निर्मम हत्या से हमारा मार्गदर्शक छिन गया है, किन्तु पंडित दीनदयाल जी ने जिस कुशलता तथा परिश्रम से इस संगठन के तन्त्र की रचना की है, जो स्वस्थ सुदृढ़ परम्परायें निर्माण की हैं उनके आधार पर हम कह सकते हैं कि हम आततायियों के कुटिल मंसूबों को विफल कर देंगे। यही निश्चय चारों ओर गुंजाना हमारी उनके प्रति श्रद्धांजलि है।

१०

श्रद्धांजलियाँ

जनसंघ-कार्यसमिति की श्रद्धांजलि

"भारतीय कार्य-समिति की बैठक आज एक भयानक राष्ट्रीय दुर्भाग्य की कराल छाया में हो रही है। जनसंघ की स्थापना के बाद यह पहला ही अवसर है जब कार्यसमिति का मार्ग-दर्शन करने के लिए श्री उपाध्याय हमारे बीच में नहीं हैं। जिन्हें काल के क्रूर हाथों ने अपने एक क्रूर अप्रत्याशित प्रहार से हमारे मध्य से उठा लिया है और आज हम उनकी मृत्यु पर शोक प्रकट करने और उनकी पावन स्मृति में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने एकत्र हुए हैं।

श्री उपाध्याय एक महान् देशभक्त, कुशल संगठनकर्त्ता, मौलिक विचारक, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ और रससिद्ध साहित्यकार थे। सादा-जीवन और उच्चविचार की जीती जागती प्रतिमा 'श्री उपाध्याय' भारत की सनातन संस्कृति के प्रतिनिधि और सन्देश-वाहक थे। उनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित था। उनके देहावसान से सार्वजनिक जीवन की जो क्षति हुई है, वह अपूर्णीय है।

पंडित जी के बिना जनसंघ की कल्पना करना ही कठिन है। जब से जनसंघ के संस्थापक डॉ० मुखर्जी ने उन्हें महामन्त्री के पद पर मनोनीत किया, वे जनसंघ के प्रेरणा स्रोत तथा उसके संगठन के आधार रहे। थोड़े ही वर्षों में देश के राजनैतिक जीवन में जनसंघ ने जो प्रमुख स्थान प्राप्त किया है उसका श्रेय यदि किसी एक व्यक्ति को है तो वह श्री उपाध्याय हैं।

उनका निःस्वार्थ जीवन, उनकी आदर्शवादिता, उनकी अनुशासनप्रियता, सबको साथ लेकर चलने की क्षमता, लाखों कार्यकर्त्ताओं के लिए उदाहरण बन गई और उन्हें आगे बढ़ने के लिए निरन्तर प्रेरणा देती रहेगी।

जिन परिस्थितियों में श्री उपाध्याय की मृत्यु हुई वे हृदय-विदारक तथा गम्भीर रूप से चिन्ताजनक हैं। जिस दशा में उनका शव मुगलसराय रेलवे प्लेटफार्म से थोड़ी दूर पर पड़ा पाया गया वे संदेहों और आशंकाओं से परिपूर्ण है। अभी तक जो तथ्य उपलब्ध हुए हैं वे इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उनकी मृत्यु किसी दुर्घटना के कारण नहीं हुई अपितु हत्या का यह स्पष्ट मामला है। यह तो एक उच्चस्तरीय एवं विस्तृत जाँच से ही पता चल सकता है कि यह जघन्य कृत्य किस उद्देश्य से किया गया और इसके लिए कौन उत्तरदायी है? उत्तर-प्रदेश सरकार ने सम्पूर्ण काण्ड की जाँच का आदेश दिया है, किन्तु कार्यसमिति अनुभव करती है कि चूँकि इस दुःखदकाण्ड से रेलवेविभाग भी सम्बन्धित है, अतः केन्द्रीय सरकार को स्वतः भी इस मामले की पूरी छानबीन करनी चाहिए।

भारतीय कार्यसमिति दिवंगत नेता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हुए स्वयं को उन आदर्शों के लिए पुनः समर्पित करती है, जिनके लिए पंडित जी जिये, जुटे और मृत्यु को प्राप्त हुए।"

★

भारत के राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन—

"मुझे श्री दीनदयाल उपाध्याय की मृत्यु की खबर को सुनकर गहरा आघात लगा। दिवंगत नेता के परिवार के सदस्यों के प्रति मेरी गहरी सहानुभूति है।"

उपराष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि—

"श्री उपाध्याय भारत मां के महान् पुत्र थे। उनकी मृत्यु से गहरा दुःख हुआ है। उनके निधन से एक बहुत बड़ा राष्ट्रीयतावादी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति भारत ने खो दिया है।"

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी—

"मुझे श्री उपाध्याय की मृत्यु की खबर सुनकर गहरा आघात पहुँचा है। श्री उपाध्याय देश के राजनीतिक जीवन में एक प्रमुख भूमिका अदा कर रहे थे। उनकी ऐसी दुखद परिस्थितियों में असामयिक और अप्रत्याशित मृत्यु से उनका कार्य अधूरा रह गया।

जनसंघ व कांग्रेस के बीच मतभेद चाहे जो हों, मगर श्री उपाध्याय सर्वाधिक सम्मानप्राप्त नेता थे और उन्होंने अपना जीवन देश की एकता एवं संस्कृति को समर्पित कर दिया था।"

जम्मू-काश्मीर जनसंघ के अध्यक्ष श्री प्रेमनाथ डोगरा—

"जिन परिस्थितियों में उनका शव पाया गया है, उनकी मैं कल्पना तक नहीं कर सकता। यह रहस्यमय है। श्री उपाध्याय की मृत्यु से मेरा व्यक्तिगत नुकसान हुआ है और देश तथा उसकी एकता व अखण्डता को घोर क्षति पहुँची है।"

उपप्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई—

स्व० पं० जी से मेरा प्रत्यक्ष परिचय नहीं था, परन्तु जिस अनन्य भाव से, निष्ठा से वे देश की सेवा कर रहे थे उससे मैं परिचित था। भारतीय-संस्कृति में, धर्म में, देश की अखण्डता एकता में उनकी बहुत बड़ी श्रद्धा थी और वे चाहते थे कि इस देश का विकास भारतीय-संस्कृति के अनुसार हो। धर्म-जो हमारी संस्कृति की बुनियाद है, वह प्रबल बने। इन्हीं आदर्शों की पूर्ति के लिए वे जीवन भर लगे रहे, इसी ध्येय की पूर्ति के लिए अपनी सारी शक्ति को लगा दिया। संसार (गृहस्थी) भी नहीं बसाया।

मैं समझता हूँ कि राष्ट्र-सेवा के भिन्न-भिन्न मार्गों पर चलते हुए मत-भिन्नता आ सकती है, परन्तु मतों में अन्तर होने पर भी परस्पर सज्जनता का बर्ताव करना आवश्यक होता है। तभी समाज का विकास सम्भव है। स्व० पं. जी इस सज्जनता के प्रतीक थे। इस प्रकार के उदार जन-सेवक, अनन्य राष्ट्र-भक्त, निष्ठावान, चारित्र्यशाली जीवन का हम अनुकरण करें और ये गुण अपने अन्दर पाएं, तभी देश ऊँचा उठ सकेगा।

गृहमन्त्री श्री यशवन्तराव चह्वाण—

पं० जी से मेरा पुराना परिचय था, लम्बी दोस्ती थी। इस परिचय से मेरे मन पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे एक ऐसी हस्ती हैं कि जो काम हाथ में लेंगे उसे या तो पूरा करके रहेंगे या फिर खुद खत्म हो जाएँगे। उन के व्यक्तित्व में कुछ ऐसी ताकत थी कि वे अपने साथियों को साथ रख सकते थे और यही नहीं कि अपनी बात उन तक पहुँचा सकते थे अपितु उनके साथी भी यह मानते थे कि वे अपने हैं। इतने अपने हैं कि उनसे कुछ भी कहा जा सकता है, हर बात की इनके यहाँ सुनाई होगी।

लोग कहते हैं कि वे भोले-भाले थे। मैं ऐसा नहीं मानता। भोले-भाले व्यक्ति को तो कोई भी ठग सकता है, किंतु उन्हें ठगना सम्भव नहीं था।

वे सीधे अवश्य थे। जो कहना चाहते थे विनम्र किन्तु सीधे, स्पष्ट ढंग से, सीधी जबान में कह देते थे। यही सीधापन उनके रहन-सहन, खानपान, बोलचाल में भी सदा प्रगट होता था। मैं समझता हूँ कि हमारे देश के नेताओं में इस गुण का होना अत्यन्त आवश्यक है। इस तरह से गुणों से सम्पन्न व्यक्ति का इस देश से इतनी जल्दी चले जाना सचमुच एक बड़ा भारी अभाव ले आया है। यह देश की एक अत्यन्त अपूरणीय क्षति है।

आचार्य कृपलानी

गीता में कहा है—तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सपदं दैवीमभिजातस्य भारत!

तेज, क्षमा, धैर्य, बाहर-भीतर की शुद्धि, किसी में भी शत्रु-भाव का न होना, अपने प्रति पूज्यता के अभिमान का अभाव, दैवी सम्पदा को प्राप्त हुए पुरुष के ये लक्षण हैं।

स्व० उपाध्याय जी भी ऐसी ही दैवी सम्पदा के स्वामी थे। ज्यादा बहस मुबाहिसे में झगड़े में न पड़ कर शान्त मौन भाव से काम में लगे रहते थे। बड़े ही देशप्रेमी थे। यद्यपि वे जनसंघ के प्रधान थे, परन्तु वे कभी भी पार्टी-बाजी में नहीं पड़ते थे। ऐसा देशभक्त इतनी जल्दी हममें से उठ गया यह बड़े ही दु.ख की बात है।

आज कुछ ऐसी स्थिति हो गई है कि इस प्रकार के लोग चले जाते हैं तो उनकी जगह पूरी होती नहीं, वह खाली की खाली ही रह जाती है। उस जगह को भरने के लिए हम सब लोग अपने जीवनों को ढालें, मोड़ें और उन के जैसा देशप्रेम, सेवाभाव अपने कर्त्तव्यों के द्वारा प्रगट करें, यही उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि होगी।

प्रसोपा नेता श्रीनाथ पै, संसद्-सदस्य

नियति की लीला अगाध होती है। १९६४ में दिल्ली के रामलीला मैदान में ही पं० जवाहरलाल नेहरु की मृत्यु पर आयोजित शोक-सभा में सर्वप्रथम दीनदयाल जी के दर्शन किये और फिर उसी रामलीला मैदान में उन्हीं को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करने का प्रसंग भी मेरे सामने आ गया।

प्रथम दर्शन से पूर्व मैं अनुमान नहीं लगा पाया था कि कितने असाधारण व्यक्ति हैं। उसी अवसर पर जो बातचीत हुई उसका मेरे मन पर भारी प्रभाव पड़ा। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन में जिस प्रकार के सादगी और सरलता के प्रतीक नेता कार्यकर्ता होते थे, वैसे ही मुझे वे भी लगे। उसके बाद तो कई बार भेंट हुई, परिचय घनिष्ट होता गया और हर मुलाकात में मुझे उनके जीवन के उन नये से नये पहलुओं का ज्ञान होता गया जो सब दृष्टि से श्रेष्ठ एवं कल्याणकारी माने जाते हैं।

गीता में भगवत्प्रिय का लक्षण लिखते हुए इस प्रकार कहा गया है—

"यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैः मुक्तो यः स च मे प्रियः।

अर्थात् जिससे लोग परेशान नहीं होते और जो लोगों से परेशान नहीं होता, हर्ष, क्रोध, भय, बेचैनी से जो मुक्त हो, वही मेरा प्रिय भक्त है।

वस्तुतः वे इसी कोटि के महामानव थे। कई विषयों पर यद्यपि हमारे मतभेद भी होते थे, किंतु उनका व्यक्तित्व इतना प्रसन्न, इतना उदार, लगन-श्रद्धा इतनी तीव्र कि कभी लगता ही नहीं था कि वे हममें से बाहर के व्यक्ति हैं। हम मानते थे कि मार्ग भले ही भिन्न-भिन्न हों, परन्तु उपासना भी उसी राष्ट्र-देव की ही कर रहे हैं, मंजिल हमारी एक ही है।

आज जब देश चारों ओर से संकटों से घिरा है और देशवासी स्वयं भी अपने भारतीयपने को भूल बैठे हैं उस स्थिति में उनका स्मरण, जिनके लहू की बूंद-बूंद में राष्ट्रीयता भरी थी, जिनका अणु-अणु राष्ट्रीय था, हमारे

लिए अत्यन्त प्रेरणादायक होगा। अधूरे राष्ट्रवाद का चिन्तन छोड़ सम्पूर्ण, प्रखर राष्ट्रवाद के हम पुजारी बनें, यही भारत माँ के उस सुपुत्र के जीवन का सन्देश है।

प्रसोपा के महामंत्री श्री प्रेम भसीन—

"उनके निधन का समाचार सुनकर महान् शोक हुआ और देश से एक महान् देशभक्त व समर्पित-आत्मा का तिरोधान हो गया। देशवासी उनकी दीर्घकालीन लगनशील सेवाओं को सदैव याद रखेंगे।"

उत्तर-प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष श्री जगदीशशरण अग्रवाल—

"देश ने इस गंभीर संकट के समय एक महान् नेता खो दिया। उनके जैसे दृढ़ चरित्रबल और कर्त्तव्यनिष्ठा वाला दूसरा नेता बड़ी मुश्किल से मिलेगा।"

सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाश नारायण—

"श्री उपाध्याय की मृत्यु से देश का एक योग्य और जनसंघ का सबसे बड़ा नेता छिन गया।"

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री नाइक—

"श्री उपाध्याय की मृत्यु से देश का एक महान् सपूत खो गया। श्री उपाध्याय महान् और देशभक्ति की मूर्ति थे। अपनी विनम्रता से उन्होंने लोगों के दिलों में जगह बना ली थी।"

संसोपा नेता संसद्-सदस्य श्री मधुलिमये—

"श्री उपाध्याय एक महान् निस्वार्थ समाजसेवी थे। उनकी मृत्यु के कारणों की तुरन्त जांच होनी चाहिए।"

उ० प्र० के तत्कालीन उपमुख्यमंत्री श्री रामप्रकाश—

"श्री दीनदयाल जी उपाध्याय का निधन सम्पूर्ण देश पर भीषण वज्रपात है।"

प्रसोपा-अध्यक्ष श्री एन० जी० गोरे—

"श्री उपाध्याय एक अथक योद्धा और प्रतिष्ठित राजनीतिक कार्यकर्त्ता थे।"

संसद् सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री—

"श्री उपाध्याय के निधन से गहरी क्षति पहुँची है।"

जनसंघ मन्त्री श्री नानाजी देशमुख—

"श्री उपाध्याय की मृत्यु से केवल जनसंघ के लिए नहीं, बल्कि सारे देश के लिए महान् आघात पहुँचा है।"

केन्द्रीय सूचना मन्त्री श्री शाह—

"श्री उपाध्याय जननेता थे। वे दूरदर्शी थे और उन्होंने सारा जीवन देश के विकास के लिए समर्पित कर दिया था।"

सन्त फतहसिंह—

"जनसंघ-नेता की मृत्यु से देश को भीषण आघात लगा है।"

पंजाब-प्रदेश जनसंघ अध्यक्ष श्री बलदेवप्रकाश—

"श्री उपाध्याय भारत की महानतम विभूति थे।"

भू० पू० रेलमन्त्री श्री पाटिल—

"श्री उपाध्याय महान् देशभक्तों में से एक थे। उनसे देश को बहुत आशाएँ थीं।"

संसोपा महामंत्री श्री रामसेवक—

"श्री उपाध्याय एक महान् संगठनकर्ता थे।"

म० प्र० के उपमुख्यमन्त्री श्री वीरेन्द्रकुमार सकलेचा—

"श्री दीनदयाल जी एक महान् चिंतक, सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री और महान् देशभक्त थे।"

म० प्र० जनसंघ अध्यक्ष श्री शेजवलकर —

"श्री दीनदयाल की मृत्यु का समाचार वर्णनातीत है।'

श्री क० मा० मुंशी—

"श्री उपाध्याय के निधन से भारत का एक महान् सपूत उठ गया। जनसंघ का महान नेता चला गया; देश ने एकता एवं लोकतन्त्र का महान सेनापति खो दिया।"

भा० से० समाज के अध्यक्ष स्वामी हरिनारायणानन्द—

"वे एक राष्ट्रनिष्ठ कर्मयोगी नेता थे, जिन्होंने अपना सारा जीवन लोक-सेवा में लगा दिया था।"

श्री केदारनाथ साहनी—

"——…भारत मां के अनन्य सपूत थे। वे देश की नींव के उन पत्थरों में से थे, जो बाहर से नहीं दिखाई देते।"

संसोपा-अध्यक्ष एवं संसद्-सदस्य श्री एस० एम० जोशी—

"…उनकी सरलता और सादगी महान् थी।"

बैरिस्टर एन० सी० चटर्जी-

"श्री दीनदयाल परिश्रमी, सत्यनिष्ठ और साधक थे।"

हिन्दू महासभा-अध्यक्ष श्री नित्यनारायण बनर्जी—

"श्री उपाध्याय की मृत्यु से हिंदू-संस्कृति का एक महारथी उठ गया।"

म० प्र० के मुख्यमंत्री श्री गोविन्दनारायण सिंह—

"श्री उपाध्याय अन्यतम प्रतिभाशाली थे।"

चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य—

"......वे (श्री उपाध्याय) हमारे राजनैतिक क्षेत्र के महान् विचारकों में से थे।"

बंग प्रदेश जनसंघ अध्यक्ष प्रो० हरिपद भारती—

"...श्री उपाध्याय का दारुण निधन जनसंघ की अपूरणीय क्षति है।"

"हिन्दुस्तान दैनिक के सम्पादक श्री रतनलाल जोशी—

"देश दूसरे दीनदयाल के लिए तरसेगा और वह उसे नहीं मिलेंगे।"

'वीर अर्जुन' के सम्पादक श्री के. नरेन्द्र—

"........आज एक-एक जनसंघी अपने दिल में श्री दीनदयाल उपाध्याय की याद रखते हुए वह काम पूरा करने का प्रयत्न करेगा जिसके लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी।"

'पांचजन्य' के सम्पादक श्री वचनेश त्रिपाठी—

"......हम दीनदयाल तो नहीं बन सकते पर उनकी प्रेरणा और आदर्शवाद का सम्बल लेकर उनके पुनीत मार्ग पर दो-चार पग तो आगे बढ़ ही सकते हैं। आज हमारा यह संकल्प ही उस महान् आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।"

११

विचार-मंथन

सृष्टि में जैसे संघर्ष दिखता है, वैसे ही सहयोग भी नजर आता है। वनस्पति और प्राणी एक दूसरे की आवश्यकता को पूरा करते हुए भी जिन्दा रहते हैं। हमें आक्सीजन वनस्पतियों से मिलता है तथा वनस्पतियों के लिए आवश्यक कार्बन-डायोक्साइड वे प्राणी-जगत से प्राप्त करती हैं। इस परस्पर पूरकता के कारण ही संसार चल रहा है। संसार में इस एकता का दर्शन कर उसके विविध रूपों के बीच परस्पर पूरकता को पहचान कर उनमें परस्परानुकूलता का विकास करना तथा उसके संस्कार करना ही संस्कृति है।

× × ×

बलाबल का विचार कर राष्ट्र संघर्ष में नहीं कूदते, बल्कि न्याय और अपने राष्ट्रीय हित और मूल्यों की रक्षा का विचार कर युद्ध की विभीषिका का सहर्ष वरण करते हैं। शक्ति और सामर्थ्य का प्रश्न तो युद्ध का संकल्प करने के बाद ही होता है।

× ×

विशेष अवसरों को छोड़कर राज्यपाल एक संवैधानिक प्रमुख मात्र है। उसे न तो प्रदेश - सरकार की मुहर बनना चाहिए और न केन्द्र की दलीय सरकार का हस्तक। अतः इस पद पर ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति होनी चाहिए, जो सही माने में स्वविवेक का प्रयोग कर सकें, तथा जिनकी निश्पक्षता में सन्देह की गुंजायश न हो। हारे हुए राजनीतिज्ञों अथवा सेवा-निवृत अफसरों के स्थान पर यह अच्छा होगा कि हम सर्वोच्च न्यायालय के सेवा-निवृत न्याया-धीशों को यह स्थान दें।

× ×

यह तो सभी मानते हैं कि राज्य का कोई न कोई लक्ष्य होना चाहिए। अतः सर्वोपरिता राज्य की नहीं, आदर्श की होनी चाहिए। राष्ट्र का आदर्श अर्थात् 'चिति'।

चिति गहन है। उसकी अभिव्यक्ति और व्यवहार के नियमों को ही उस राष्ट्र का धर्म कहते हैं। अतः महत्ता यदि किसी चीज की है तो वह "धर्म" है। धर्म, यह महत्व की चीज है। यदि हमारा प्राण कहीं है तो वह धर्म में है। धर्म गया कि प्राण गया। इसलिए जिसने धर्म छोड़ा, वह राष्ट्र से च्युत हो गया। उसका सब कुछ चला गया।

× ×

धर्म का सम्बन्ध केवल मन्दिर, मस्जिद से नहीं। उपासना व्यक्ति-धर्म का एक अंग हो सकती है, किंतु धर्म तो व्यापक है। मन्दिर, मस्जिद लोगों में धर्माचरण की शिक्षा का प्रभावी माध्यम भी रहे है, किन्तु जिस प्रकार

विद्यालय विद्या नहीं हैं, वैसे ही मन्दिर में धर्म भिन्न है। हो सकता है कोई बालक रोज पाठशाला जाय, फिर भी अपढ़ रह जाय। उसी प्रकार प्रतिदिन मन्दिर या मस्जिद में जाने वाला व्यक्ति भी धर्महीन हो सकता है। मन्दिर-मस्जिद में जाना मत, मजहब, रिलिजन है। रिलिजन अर्थात् धर्म नहीं। रिलिजन को बहुत बार लोगों ने धर्म मान लिया। अंग्रेजी अनुवाद के कारण हमारी जो बहुत-सी हानियां हुई हैं उनमें से एक बहुत बड़ी हानि यह भी है।

धर्म तो एक व्यापक चीज है। यह जीवन के सभी पहलुओं से सम्बन्ध रखने वाली चीज है। उससे समाज की धारणा होती है। उससे आगे बढ़ें तो सृष्टि की धारणा भी होती है। यह धारणा करने वाली जो चीज है वह 'धर्म' है।

× ×

दल बदलने वालों में से निन्यानवे प्रतिशत वे लोग हैं जो कांग्रेस को छोड़ कर दूसरे दलों में आए और फिर उन दलों को छोड़कर चले गये। ज्यों-ज्यों दलों का गठन निश्चित नीति और सिद्धांतों के आधार पर होता जायेगा, उन का संगठन मजबूत होगा तथा जनता की राजनीतिक शिक्षा होकर वह अपने मत का उपयोग दलों के कार्यक्रमों का विचार कर करेगी, यह प्रवृत्ति कम हो जाएगी।

× ×

केन्द्र और प्रदेशों की करों से आय १९५१-५२ में कुल ६३८ करोड़ रु० थी जो अब १९६७-६८ के बजट के अनुसार ३५९९ करोड़ रु० अनुमानित है। इसी बीच में भूराजस्व दुगुना, आयकर और कम्पनी कर चौगुना, बिक्री-कर नौगुना तथा उत्पादन शुल्क अठारह गुना हो गया है। इन करों की दरों में समय-समय पर तत्कालिक आधार पर वृद्धियाँ हुई हैं और वे बाद में स्थायी बना दी गई हैं। कुछ वस्तुओं पर उत्पादन शुल्क, बिक्रीकर तथा चुंगी

सभी कर लगे हैं, जिनसे उनके मूल्यों में भारी वृद्धि हो जाती है। पिछले पन्द्रह वर्षों में आय के वितरण में अन्तर आया है। रुपये की कीमत गिरी है। राज्यों की पुनर्रचना हुई है। योजना के सम्बन्ध में भी पुनर्विचार हो रहा है। अतः सभी दृष्टियों से यह आवश्यक है कि एक कर-जांच आयोग नियुक्त किया जाय जो आर्थिक विकास, पूंजीनिर्माण, लोक-कल्याण, विषमताओं में कमी तथा विकेन्द्रित प्रशासन की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर सम्पूर्ण कर-पद्धति तथा विभिन्न करों के सम्बन्ध में अपना प्रतिवेदन दे।

× ×

मन्दी से राजस्व की आय गिरती है। दूसरी ओर प्रशासन-व्यय बढ़ने के कारण मूल्य बढ़ते हैं। फलतः कोशिशों के बावजूद घाटे की अर्थव्यवस्था टाली नहीं जा सकेगी। इस विषय के किताबी सूत्र पर निर्भर न रहकर व्यावहारिक उपाय अपनाने चाहिएं। बेकार क्षमता का उपयोग करने तथा आशुफलदायी क्षमता उत्पन्न करने के लिए यदि घाटे की अर्थव्यवस्था का सहारा लिया जाय तो वह लाभदायक ही सिद्ध होगी।

× ×

नियोजन का अर्थ विभिन्न क्षेत्रों के लक्ष्य निश्चित करने और उनका गणित के अनुसार समीकरण बिठाना मात्र नहीं है। नियोजन के लिए कल्पकता, दूरदर्शिता और व्यावहारिकता की नितान्त आवश्यकता है। अभी तक की योजनाओं में इनका अभाव रहा है।

× ×

आज तक योजना का आधार विदेशी साधन, तन्त्रज्ञ, पूंजी—और अब कच्चा माल तथा बाजार भी—रहा है। जो नहीं है उसकी प्राप्ति की तो योजना बनाई जाती है, किंतु जो है उसको बचाने की तथा उसके सहारे नये निर्माण का विचार नहीं किया जाता। हमने खेती और स्वदेशी उद्योगों की ओर दुर्लक्ष्य किया तथा हमारे लिए अहितकर एव अप्रतिष्ठाकारक शर्तों

पर भी विदेशी गठबन्धनों का स्वागत किया। विदेशी निहित स्वार्थ आज इतने प्रबल हैं कि वे देश के आर्थिक कार्यक्रमों को ही नहीं, अपितु आर्थिक, शैक्षणिक एवं राजनीतिक क्षेत्र की नीतियों को भी प्रभावित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। यदि हमें स्वतन्त्रता बचानी है तो आर्थिक क्षेत्र में स्वावलम्बी बनना होगा।

× ×

सत्य तो यह है कि यदि किसान की इंधन की आवश्यकताएँ मृदुकोक से पूरी कर दी जाएं और उसे गोबर और खाद के रूप में प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित किया जाय तो हमें उर्बरकों के नये कारखानों की आवश्यकता नहीं रहेगी। व्यावहारिक आर्थिक अनुसन्धान की राष्ट्रीय परिषद् की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि "भारत प्रतिवर्ष दस सिन्द्रियाँ जला देता है।" किन्तु हम घर की चीजों को छोड़कर बाहर वालों को बुलावा दे रहे हैं।

× ×

प्रान्तीय व्यामोह कुछ इतना बढ़ गया है कि करोड़ों क्यूबेक पानी समुद्र में तो फेंक देते हैं, नदी-पानी के बंटवारे के प्रश्न पर हम एक इंच भी झुकने को तैयार नहीं हैं।

× ×

मूल्य-नीति का प्रमुख उद्देश्य उत्पादकों विशेषकर प्राथमिक उत्पादकों की आय को नीचे गिरने से बचाना होना चाहिए, क्योंकि कृषि-आय ही तो शेष अर्थ-व्यवस्था टिकाने का और उसके विकास का साधन बनती है।

× ×

खाद्यान्नों के राज्य क्षेत्र तथा विभिन्न वस्तुओं के ले जाने-लाने पर रोक लगाई गई। रोक आर्थिक दृष्टि से गलत तथा संविधान की भावना के प्रतिकूल है। इस प्रकार की रोक से वितरण का स्वाभाविक प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है, जिससे मानवजनित अभाव पैदा होता है तथा तस्कर व्यापार और

चोरबाजारी को प्रोत्साहन मिलता है। यह नीति राष्ट्रीय एकात्मता के मार्ग में बाधक है।

× ×

जन-आन्दोलन एक बदलती हुई व्यवस्था के युग में स्वाभाविक और आवश्यक है। वास्तव में वे समाज की जागृति के साधन और उसके द्योतक हैं। हाँ, यह आवश्यक है कि ये आन्दोलन दुस्साहसपूर्ण और हिंसात्मक न हों, प्रत्युत् वे हमारी कर्मचेतना को संगठित कर एक भावात्मक क्रान्ति का माध्यम बने।

× ×

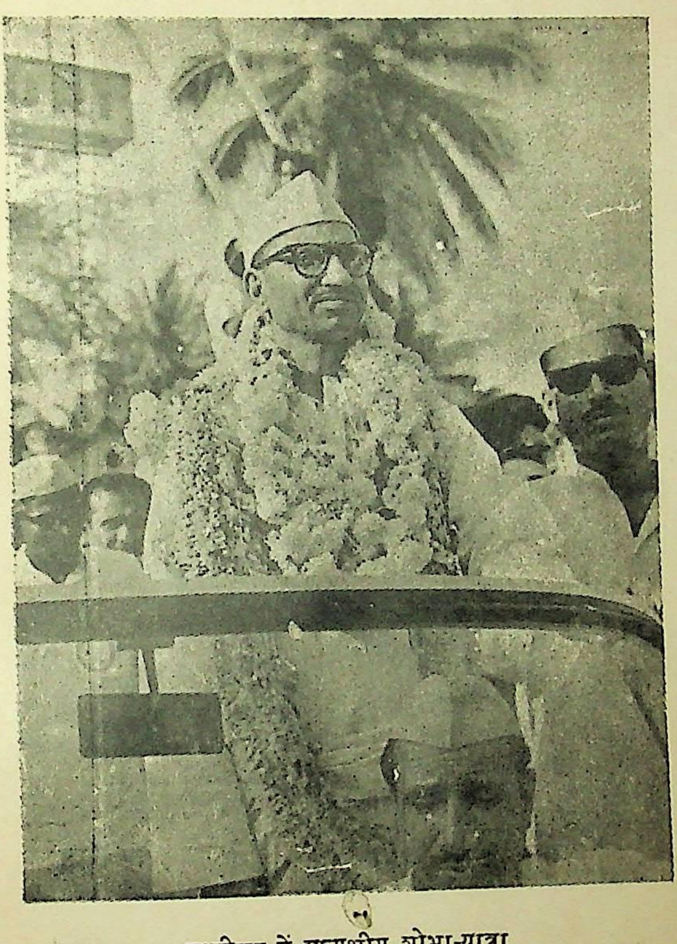
हम अतीत के गौरव से अनुप्राणित हैं, परन्तु उसको भारत के राष्ट्र-जीवन का सर्वोच्च बिंदु नहीं मानते; हम वर्तमान के प्रति यथार्थवादी हैं; किंतु उससे बंधे नहीं, हमारी आँखों में भविष्य के स्वर्णिम सपने हैं किंतु हम निद्रालु नहीं, बल्कि उन सपनों को साकार करने वाले जागरूक कर्मयोगी हैं। अनादि अतीत, अस्थिर वर्तमान तथा चिरन्तन भविष्य की कालजयी सनातन-संस्कृति के हम पुजारी हैं।

× ×

हिन्दमहासागर और हिमालय से परिवेष्टित भरतखण्ड में जब तक एकरसता, कर्मठता, समानता, सम्पन्नता, ज्ञानवत्ता, सुख और शान्ति की सप्तजाह्नवी का पुण्य-प्रवाह नहीं ला पाते हमारा भगीरथ तप पूरा नहीं होगा।

चित्रावली

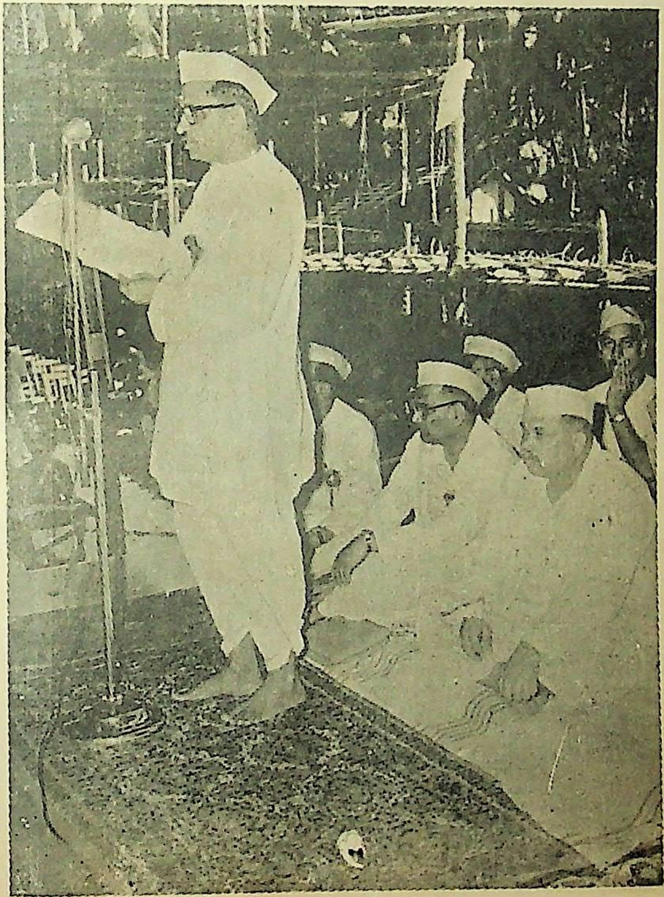
अस्थि-प्रवाह तक २१ चित्रों का एलबम



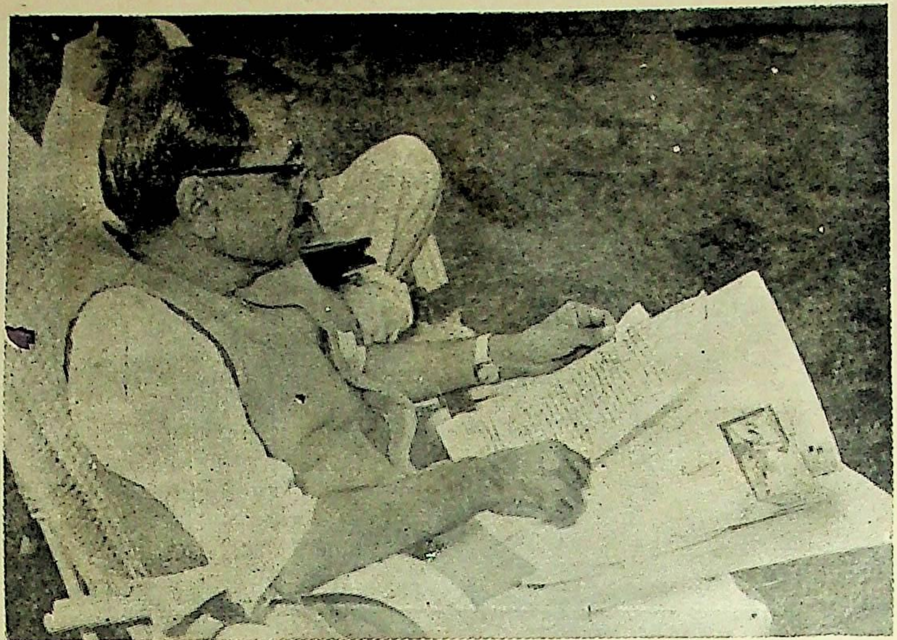
कालीकट में अध्यक्षीय शोभा-यात्रा



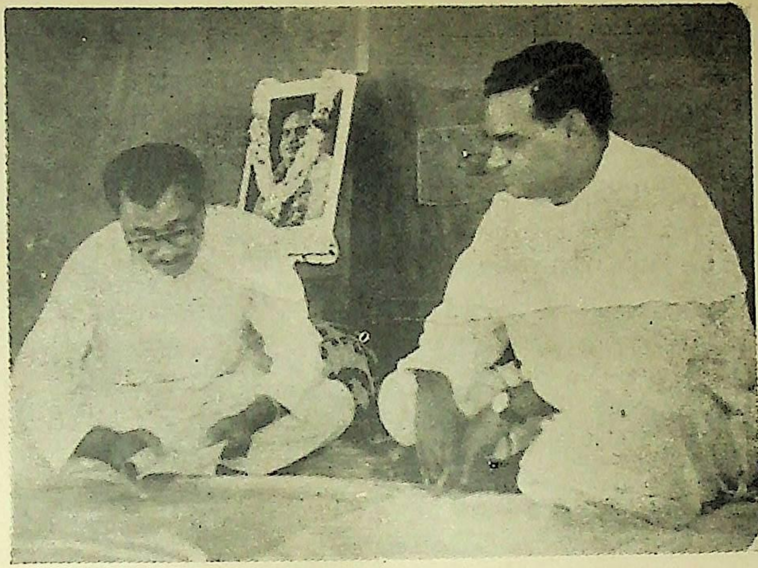
कालीकट में विशिष्ट हार पहनते हुए



कालीकट में अध्यक्षीय भाषण देते हुए



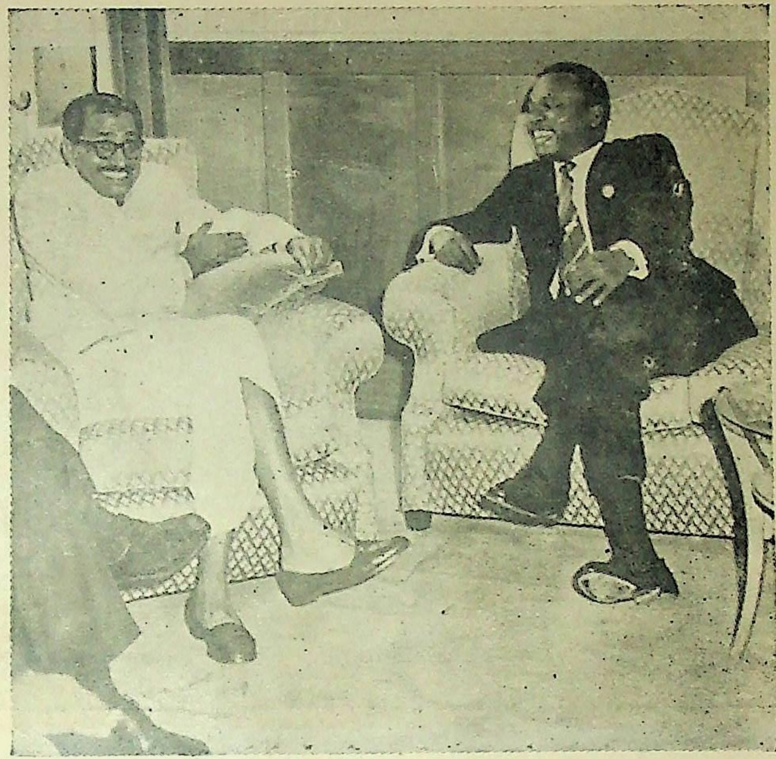
अध्ययन-रत दीनदयाल जी



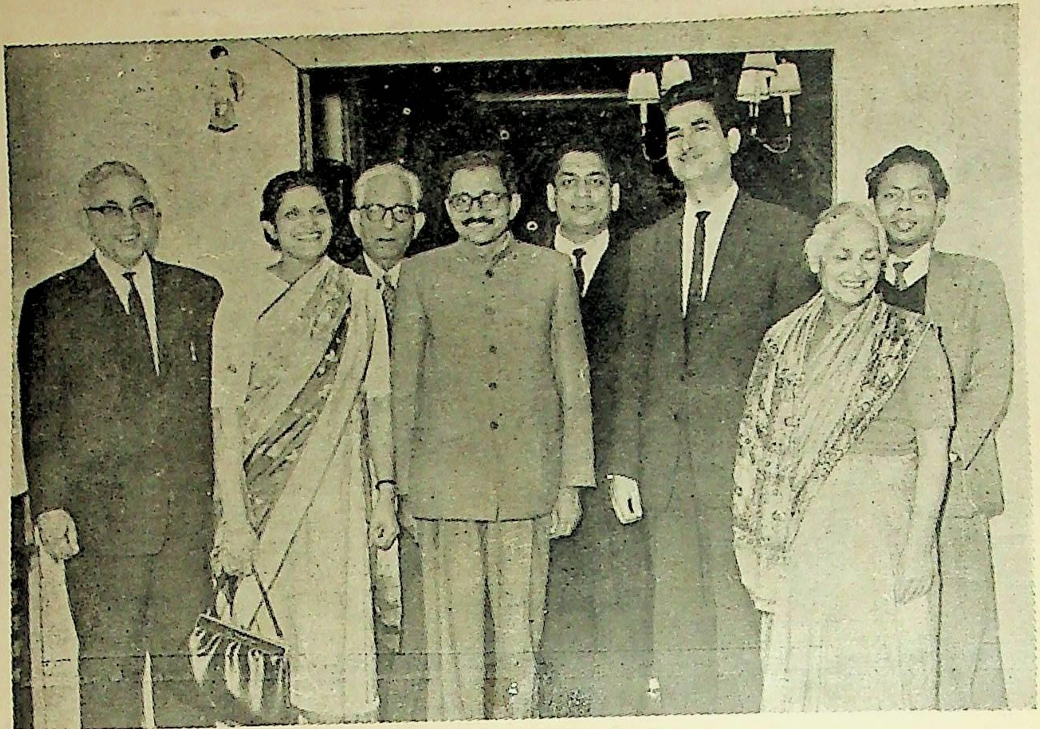
अपने अनन्य सखा एवं उत्तराधिकारी श्री अटल जी के साथ



'कच्छ के रन' की सरकारी नीति के विरुद्ध लोकसभा पर प्रदर्शन का नेतृत्व करते हुए



नरोबी (अफ्रीका) के महापौर के साथ—विनोद वार्ता प्रसंग पर



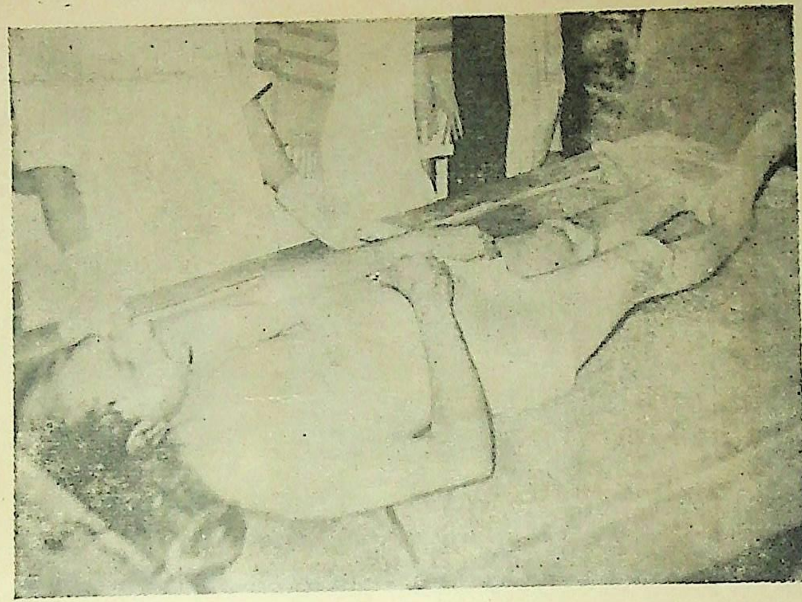
इंग्लैंड में दीनदयाल जी भारतीय मित्रों के साथ



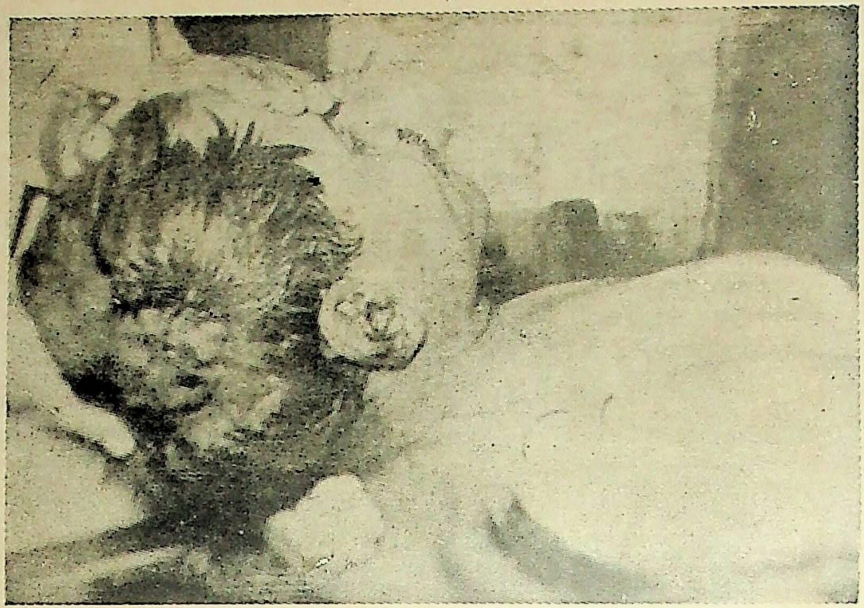
जनसंघ कार्यकर्ताओं के साथ–सर्वश्री जगन्नाथराव जोशी, दीनदयाल जी, अटल जी सुन्दरसिंह भंडारी, नानासाहब देशमुख, जगदीश माथुर, बलराज मधोक, यज्ञदत्त शर्मा, केदारनाथ साहनी ।



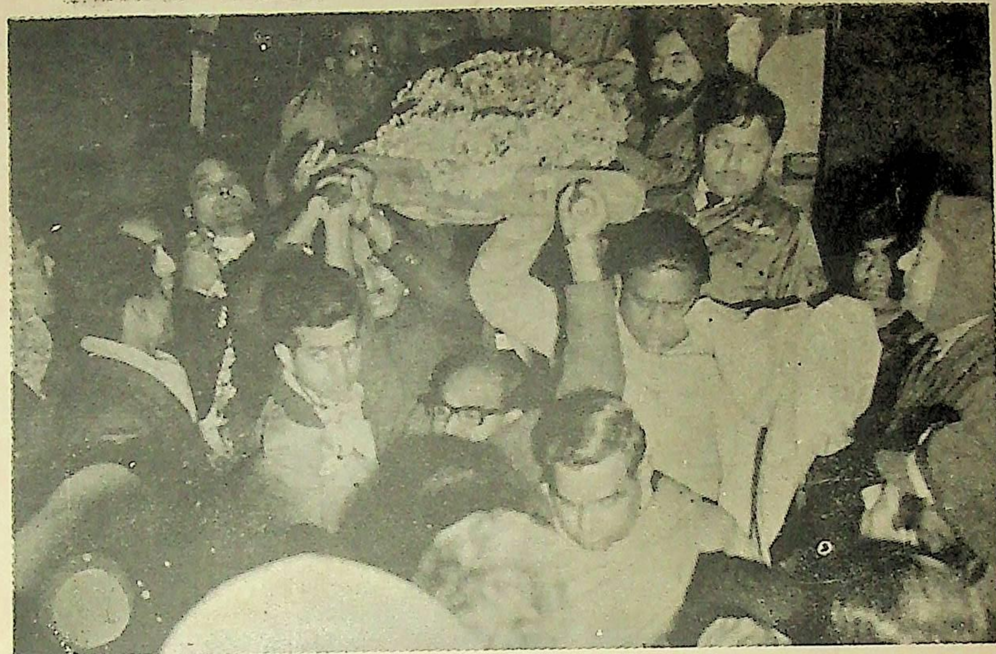
चिरनिद्रा में सुप्त !
(श्री अटल जी की कोठी-३०, राजेन्द्रप्रसाद मार्ग पर)



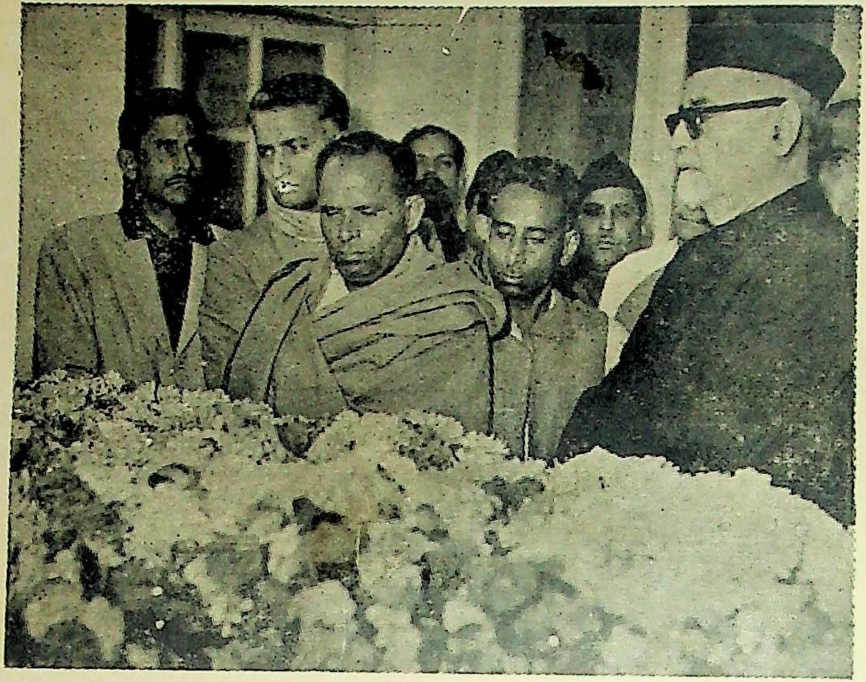
पैर तथा हाथ की टूटी हड्डियाँ स्पष्ट दिखाई दे रही हैं



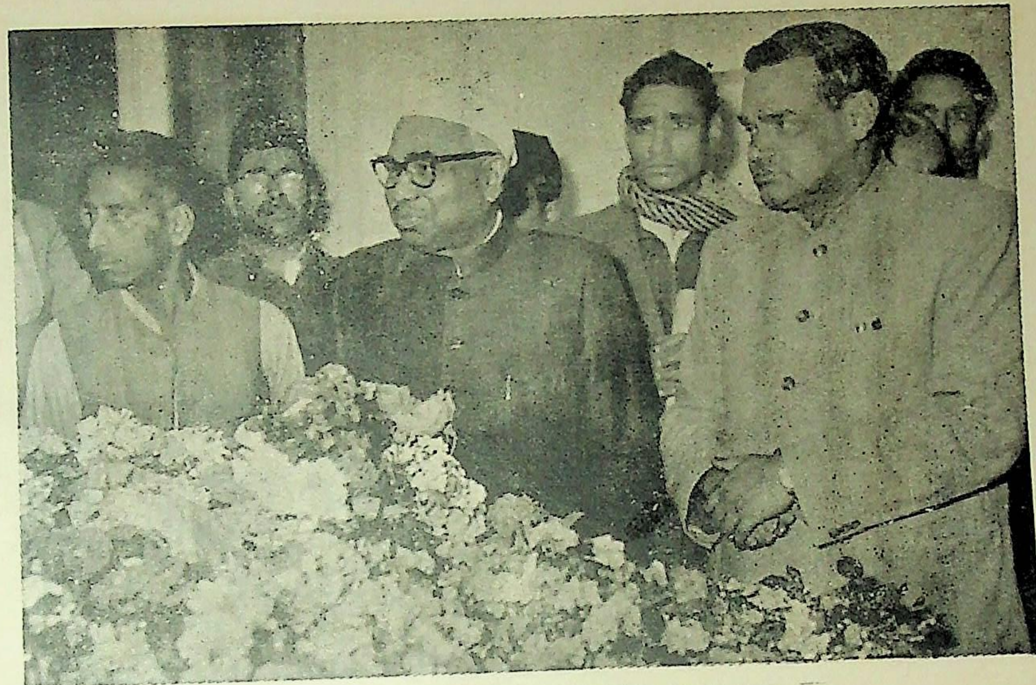
सिर के पार्श्व भाग में आई भयंकर चोट को डाक्टर दिखा रहा है



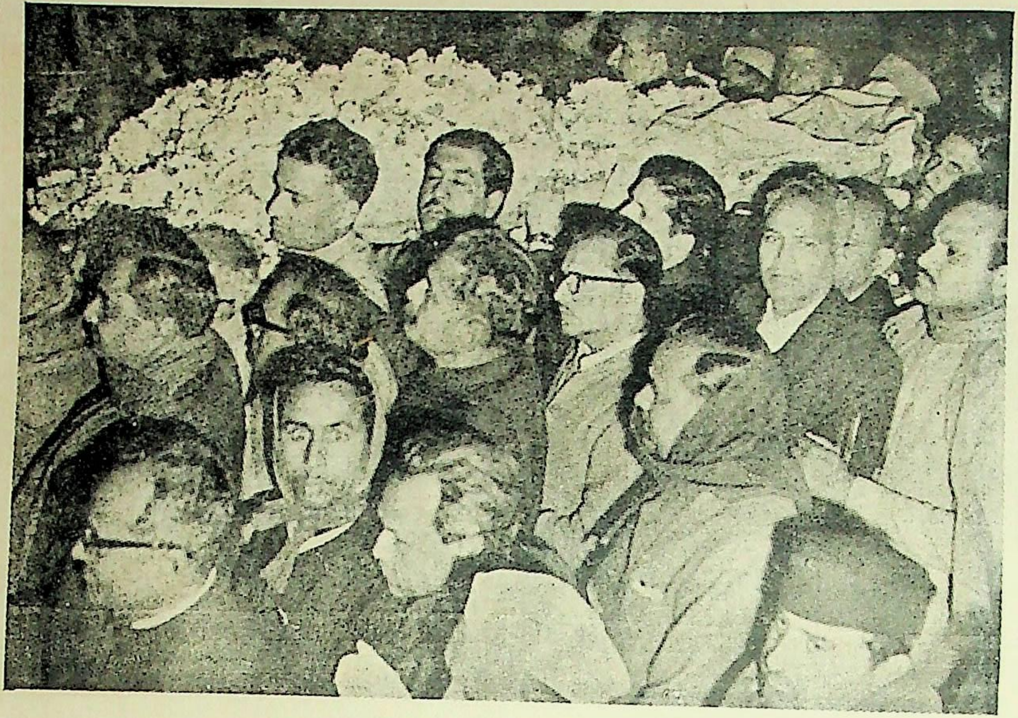
पालम (दिल्ली) हवाई-अड्डे पर वायुयान से शव उतारते हुए



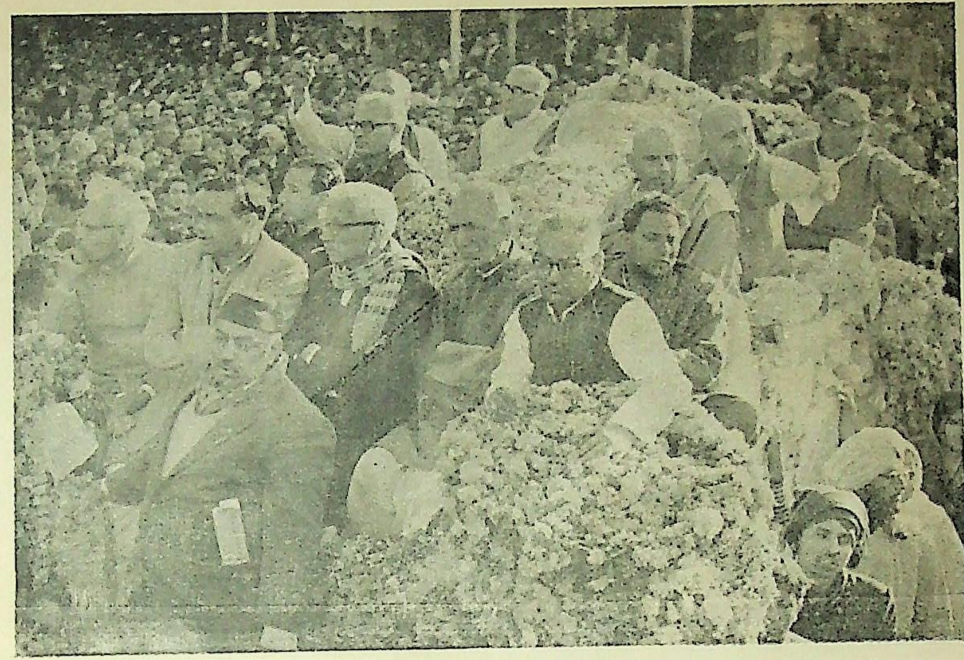
राष्ट्रपति डॉ० जाकिरहुसेन (३०-राजेन्द्रप्रसाद मार्ग पर) श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।



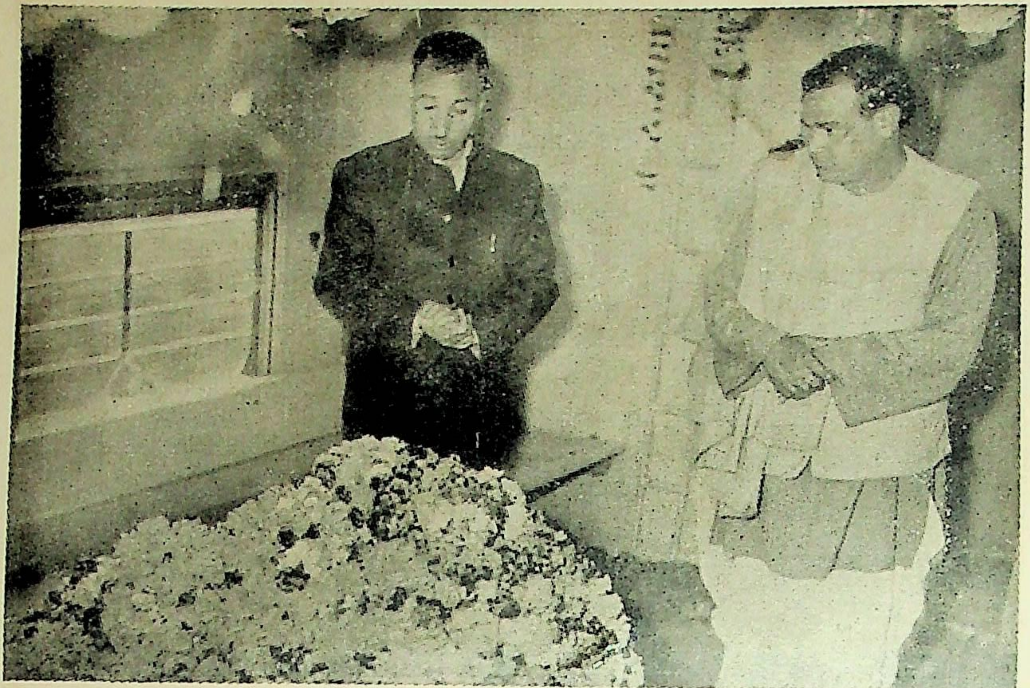
श्री जगजीवनराम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए



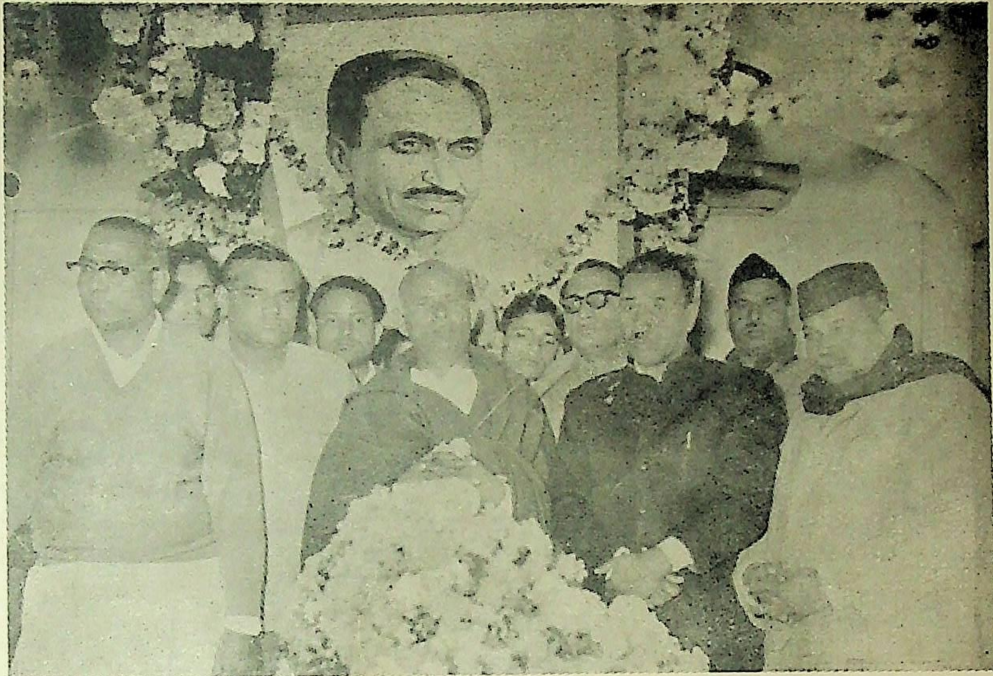
दिल्ली में शव रथ पर चढ़ाने से पूर्व कधा देते हुए अधिकारी-गण



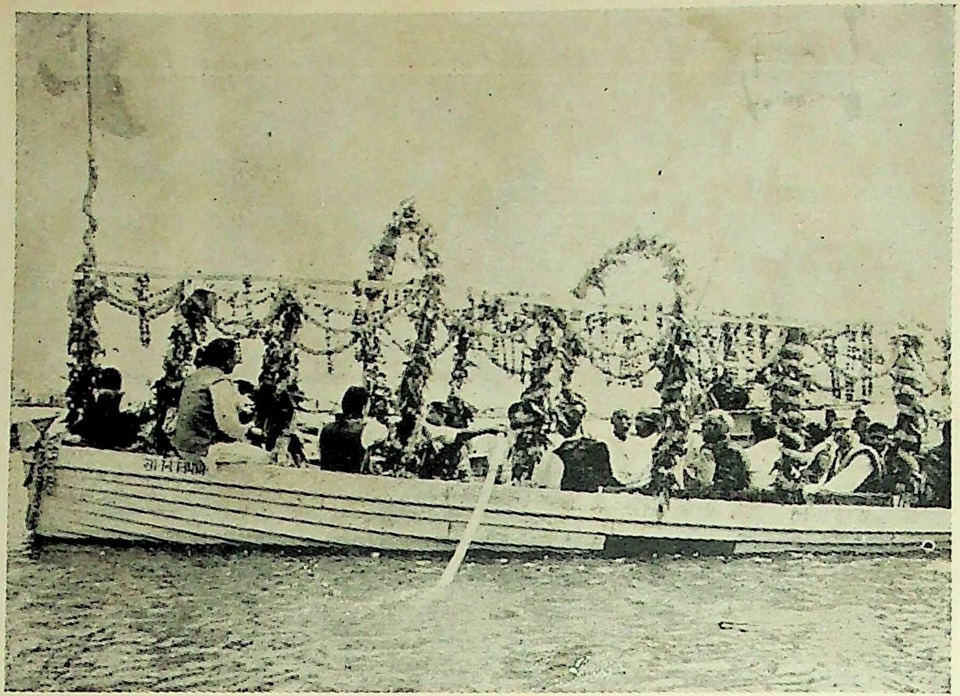
शवयात्रा का एक दृश्य



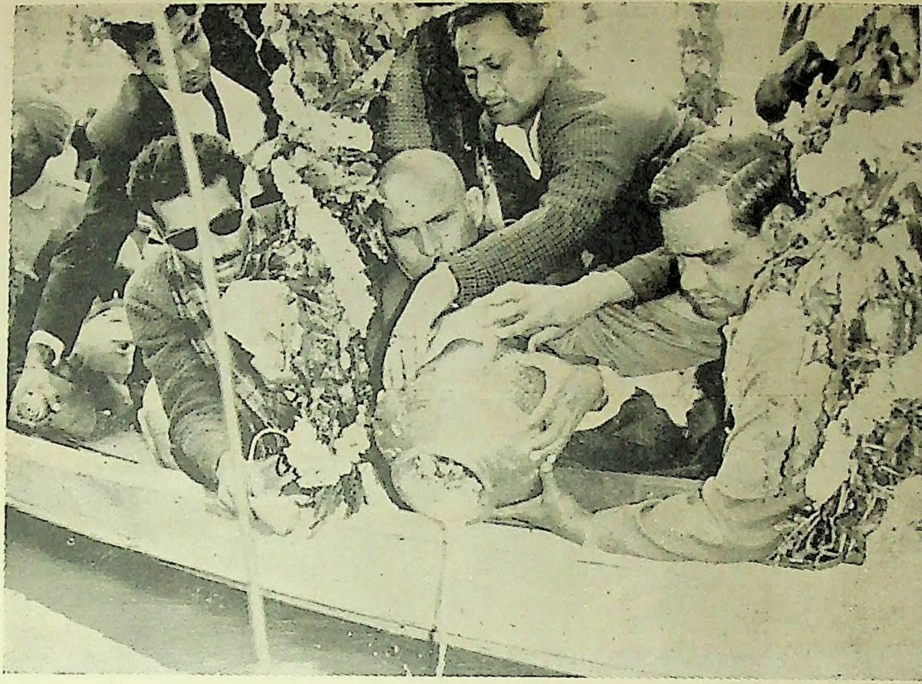
रेल के डिब्बे में अस्थि-कलश के सम्मुख श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अटल जी और मधोक जी



रेल के डिब्बे में अस्थि-कलश और जनसंघ नेता-गण
मध्य में खड़े हैं श्री प्रभुदयाल शुक्ल दीनदयाल जी के ममेरे भाई।



संगम की ओर अस्थि-कलश ले जाने वाली विशिष्ट रूप से सुसज्जित नाव



अस्थि-प्रवाह करते हुए श्री प्रभुदयाल शुक्ल, श्री ब्रह्मानन्द शुक्ल एव श्री अटल बिहारी वाजपेयी । अस्थिप्रवाह से उत्पन्न ध्वनि को टेपरिकार्ड करते हुए आकाशवाणी-प्रतिनिधि

अन्य पठनीय, मननीय प्रमुख प्रकाशन

(१) ताजमहल राजपूती महल था

लेखक : श्री पी. एन. ओक
अनुवादक : श्री जगमोहन राव भट्ट

शिलालेखों, यवन इतिहासकारों के लेखों एव स्वयं ताज-कृति से विद्वान लेखक ने यह सिद्ध किया है कि ताजमहल शाहजहाँ द्वारा निर्मित कब्र नहीं, अपितु यह राजपूती प्रसाद था।

मूल्य : चार रुपये

(२) भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें

लेखक : श्री पी. एन. ओक
अनुवादक : श्री जगमोहन राव भट्ट

भारतीय इतिहास की १८ भयंकर भूलों पर श्री ओक ने अनेक ऐतिहासिक प्रमाणों एव अकाट्य तर्कों द्वारा भारतीय जनता का ध्यान आकर्षित किया है।

मूल्य : दस रुपए

भारती

ऐतिहासिक प्रभ

आकर्षित किया है